अभ्युदय

भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स

BHAVDIYA GROUP OF INSTITUTIONS

(ISO 9001:2008 Certified Institution)

वर्ष : 06 अंक : 04 सत्र : 2017-18

प्रबन्ध एवं प्रशासनिक मण्डल

एम. एल. वर्मा
प्रबन्ध निदेशक
प्रतिष्ठित व्यवसायी

इं. पी. एन. वर्मा
अध्यक्ष
पूर्व मण्डल अभियन्ता दूर संचार विभाग

प्रो. मंशाराम वर्मा
महानिदेशक
पूर्व डीन इंन्जी–न.दे.कृ. एवं प्रौ.वि.वि.फै.

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
शिक्षाविद्

अभ्युदय

अंक : 4 वर्ष : 6 सत्र : 2017–2018

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक : डॉ. करुणेश कुमार तिवारी, प्राचार्य–भवदीय एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट

सम्पादक : डॉ. संजय कुशवाहा, निदेशक–फार्मेसी

डॉ. शिशिर पाण्डेय, सहायक निदेशक–एम.बी.ए.

डॉ. दयाशंकर वर्मा, क्रीड़ाध्यक्ष

छात्र/छात्रा सम्पादक

शिखा सिंह : एम.बी.ए. (III सेमेस्टर)

ज्योति तिवारी : डी.एल.एड् (प्रथम वर्ष)

प्रिया वर्मा : डी.फार्म. (II वर्ष)

पिंकी वर्मा : बी.फार्म. (II वर्ष)

प्रकाशक : भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, सीवार, सोहावल–फैजाबाद

मुद्रक : रघुवंशी प्रिन्टर्स एण्ड बाइन्डर्स, इण्डस्ट्रियल एरिया

गद्दोपुर–फैजाबाद ☎: 05278-222194

भवदीय ग्रुप ऑफ़ इंस्टीट्यूशन्स, सीवार-सोहावल

संस्थान-गीत

जहाँ पर जगता है आलोक, जहाँ मिटता अँधियारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥

अवध का दिव्य क्षेत्र सीवार–सोहावल–ग्रामांचल अभिराम,
जहाँ के उत्तर पथ के छोर बहे सरयू–धारा अविराम,
हरित वन–उपवन–निर्मल नीर अलौकिक कूल–किनारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥1॥

यशस्वी 'वर्मा मिश्रीलाल' बने संस्थापक अथक उदार,
पिताश्री 'हेमराज' का स्नेह, 'रमाऊ देवी' माँ का प्यार,
उसी से निर्मित यह संस्थान नित्य नूतन उजियारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥ 2॥

जहाँ संचालित हैं सब भाँति नयी शिक्षा के विविध प्रकल्प,
चिकित्सा–शिक्षण–कम्प्यूटर–प्रबन्ध के बने श्रेय–संकल्प,
लोक ने देकर शुभ सहयोग हमारा लक्ष्य सँवारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥ 3॥

प्रगति का अमर साधना–धाम चेतना का पावन उल्लास,
युवा पीढ़ी का जो दिन–रात बढ़ाये मंगलमय विश्वास,
'हमारा हाथ–आपका साथ' बना चिर–चिन्तन न्यारा है।
वही यह परम रम्य 'भवदीय' ज्ञान का केन्द्र हमारा है॥ 4॥

[इस संस्थान–गीत की रचना इन्स्टीट्यूट के प्रबन्ध–तंत्र के सचिव डॉ. अवधेशकुमार वर्मा, संस्थान के चेयरमैन श्री पी. एन. वर्मा तथा महानिदेशक श्री मंशाराम वर्मा की प्रेरणा से कवि डॉ. जनार्दन उपाध्याय, पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, साकेत महाविद्यालय, अयोध्या के द्वारा महाशिवरात्रि 07 मार्च, 2016 ई. को की गयी।]

संदेश

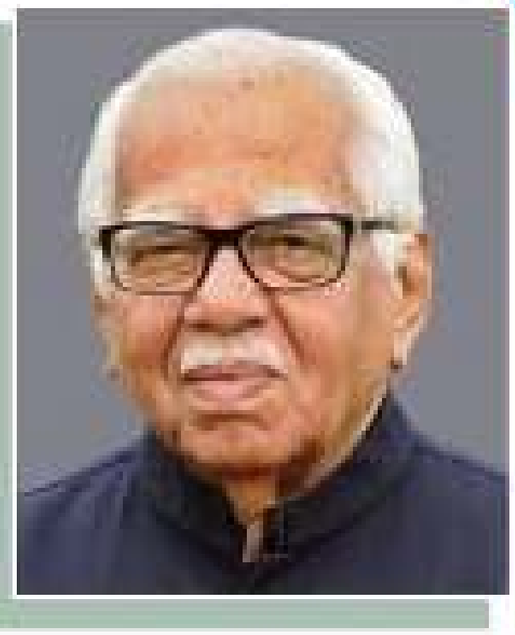

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

दिनांक 24.01.2018

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, सीवार, फैजाबाद द्वारा अपने वार्षिक समारोह के अवसर पर पत्रिका 'अभ्युदय' का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करते हुए विद्यार्थियों का चारित्रिक एवं मानसिक विकास भी होता है। विद्यालय की वार्षिक पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक लेखन क्षमता में वृद्धि का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

पत्रिका 'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन हेतु मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

श्री पी.एन. वर्मा
चेयरमैन
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, रोहावल, फैजाबाद

(राम नाईक)

संदेश

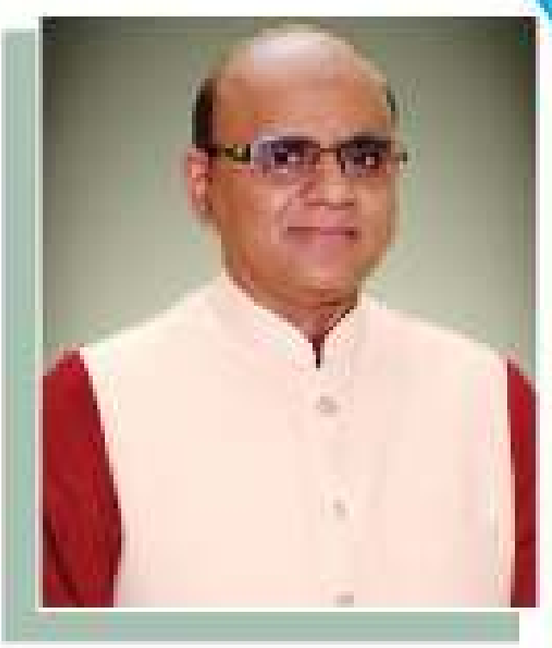

आचार्य मनोज दीक्षित
कुलपति

Professor Manoj Dixit
Vice-Chancellor

डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
फैजाबाद-224001 (उ.प्र.) भारत

Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University
Faizabad-224 001 (U.P.) India

Tel.:(O)05278-246223,(R)246224,245209
Fax:(O)05278-246330;E-mail:vc@rmlau.ac.in

दिनांक : 30 जनवरी 2018

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई है कि 'भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस', सीवार, सोहावल, फैजाबाद शैक्षणिक सत्र 2017-18 के वार्षिक समारोह में वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' का विमोचन करने जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में सम्मिलित नवीन सूचनाएँ व निर्देशात्मक लेख छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास एवं उन्हें प्रेरणा प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन एवं वार्षिक समारोह की अपार सफलता के लिए अनन्त शुभकामनाएँ एवं सम्पादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई।

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, फैजाबाद

प्रो० (मनोज दीक्षित)

संदेश

प्रो0 विनय कुमार पाठक
कुलपति

डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

दिनांक : 22 जनवरी, 2018

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी संस्थान की वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' (2017-2018) प्रकाशित करने जा रहा है।

पत्रिका के माध्यम से संस्थान में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं व शिक्षकों द्वारा रचनात्मक क्रिया-कलापों, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों व रचनाओं का समावेश करते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग को नवीनतम तकनीकी एवं वर्तमान परिदृश्य से अवगत कराये जाने का एक सफल प्रयास है। वार्षिक पत्रिका के प्रकाशित होने पर सभी को लाभ होगा।

इस पत्रिका में संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में जो विकासशील कार्य हुए हैं उनका ब्यौरा होगा और विद्यार्थियों के लिए वह सब जानकारी होगी जो उनको चाहिए। उन छात्रों के लिए जो अपनी उच्च शिक्षा उ0प्र0 प्राविधिक विश्वविद्यालय से करना चाहते हैं, उनके लिए यह पत्रिका एक संदर्भ पुस्तक के रूप में उपयोगी होगी।

आपकी यह पत्रिका ज्ञानवर्धक तथा दिशानिर्देशिका के रूप में सफलता प्राप्त करे। आप सभी को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना।

(प्रो0 विनय कुमार पाठक)
कुलपति

संदेश

लल्लू सिंह

सांसद (लोकसभा)

फैजाबाद (उ0प्र0)

सदस्य :

- स्थायी समिति - जल संसाधन
- सलाहकार समिति - खाद्य प्रसंस्करण समिति

सत्यमेव जयते

23, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली - 110001

फोन/फैक्स : 011-23782845

128-क, चुंगी सहादतगंज, फैजाबाद (उत्तर प्रदेश)

फैक्स : 05278-220486, मो. : 09415905607

ईमेल : lallu.singh@sansad.nic.in

दिनांक 28.01.2018

शुभकामना

बड़े हर्ष का विषय है कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस, सीवार निकट लोहिया पुल फैजाबाद में वार्षिक समारोह एवं एक वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' का विमोचन किया जा रहा है। वार्षिक समारोह के आयोजन व पत्रिका के विमोचन से बुद्धजीवियों, विचारकों, साहित्यकारों व विद्वत-व्यक्तियों के विचार से समाज में जागरूकता आयेगी, इसके अतिरिक्त अन्य शैक्षिक एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियों द्वारा विद्यालय की गरिमा-वृद्धि होती रहे, ऐसी मेरी कामना है।

विद्यालय की ओर से इस प्रकार का प्रयास भविष्य में भी जारी रहेगा और जनमानस को इससे लाभ मिलता रहेगा। मेरी ओर से आपको शुभकामनाएँ।

सेवा में,

पी.एन. वर्मा

चेयरमैन

भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स

सीवार, सोहावल, फैजाबाद

(लल्लू सिंह)

संदेश

संजय कुमार
कुलसचिव

Sanjay Kumar
Registrar

डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
फैजाबाद-224001 (उ.प्र.) भारत

Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University
Faizabad-224 001 (U.P.) India
Tel.:(O)05278-246323,(R)246224,245209
Fax:(O)05278-246330;E-mail:vc@rmlau.ac.in

दिनांक : 14 दिसम्बर 2017

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस, सीवार, सोहावल, फैजाबाद द्वारा वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा की अभिवृद्धि में सहायक होगी।

मैं 'अभ्युदय' के वर्तमान अंक के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, फैजाबाद

संजय कुमार

संदेश

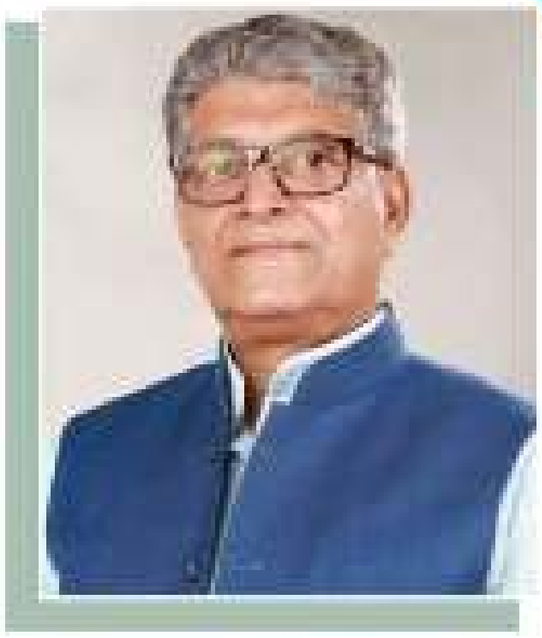

वेद प्रकाश गुप्त
विधायक
अयोध्या-फैजाबाद

आवास

दिनांक : 27.01.2018

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि 'भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस', सीवार, सोहावल, फैजाबाद विगत वर्ष की भाँति अपनी वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' का प्रकाशन करने जा रहा है।

आशा है कि सुदूर क्षेत्र में इस शैक्षणिक संस्थान द्वारा दिये जा रहे आधुनिक तकनीकी ज्ञान से समाज के सभी वर्गों के छात्र-छात्राएँ लाभान्वित होंगे। मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास एवं उन्हें प्रेरणा प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा।

मैं 'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

सेवा में,
पी.एन. वर्मा
चेयरमैन
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, फैजाबाद

(वेद प्रकाश गुप्ता)

संदेश

रामचन्द्र यादव
विधायक
रूदौली-फैजाबाद

B.G. 2, राज्य सम्पत्ति कलोनी
माल एवेन्यू लखनऊ
क-5 No. 323333
मो.-8765954970, 9415220081

हमें यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी संस्थान की वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' (2017-2018) प्रकाशित करने जा रहा है।

पत्रिका के माध्यम से संस्थान में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं व शिक्षकों द्वारा रचनात्मक क्रिया-कलापों, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों व रचनाओं का समावेश करते हुए समाज के प्रत्येक वर्ग को नवीनतम तकनीकी एवं वर्तमान परिदृश्य से अवगत कराये जाने का एक सफल प्रयास है।

मेरे लिये यह गर्व की बात है कि मेरा संदेश इस प्रतिष्ठित पत्रिका में सम्मिलित किया जाएगा। इस पत्रिका में संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में जो विकासशील कार्य हुए हैं उनका ब्यौरा होगा और विद्यार्थियों के लिए वह सब जानकारी होगी जो उनको चाहिए। यह पत्रिका एक संदर्भ पुस्तक के रूप में उपयोगी होगी।

आपकी यह पत्रिका ज्ञानवर्धक तथा दिशा निर्देशिका के रूप में सफलता प्राप्त करे। आप सभी को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना।

सादर,

पी.एन. वर्मा
चेयरमैन
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, फैजाबाद

(रामचन्द्र यादव)

संदेश

श्रीमती शोभा सिंह चौहान
विधायक
बीकापुर विधानसभा
फैजाबाद

दिनांक : 29 जनवरी 2018

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस, सीवार, सोहावल, फैजाबाद द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' का चौथा अंक प्रकाशित होने जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका में सम्मिलित नवीन सूचनाएँ एवं निर्देशात्मक लेख छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास, उन्नयन एवं उन्हें प्रेरणा प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ एवं सम्पादक मण्डल को मेरी हार्दिक बधाई।

डॉ0 अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, फैजाबाद

(शोभा सिंह)

संदेश

इन्द्र प्रताप उर्फ खब्बू तिवारी
विधायक
276 गोशाईंगंज विधानसभा
फैजाबाद

निवास : सी-ब्लाक 1202, मंत्री आवास,
बहुखण्डीय भवन, डालीबाग लखनऊ-226001
निवास : ग्राम-बरईपारा, मया बाजार,
मो.-7310069999

दिनांक : 30.01.2018

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 'भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशंस', गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी संस्थान की वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' (2017-18) का प्रकाशन एवं वार्षिक उत्सव का आयोजन करने जा रहा है।

आशा है कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में इस शैक्षणिक संस्थान द्वारा दिये जा रहे व्यावसायिक एवं तकनीकी ज्ञान से समाज के सभी वर्गों के छात्र-छात्राएँ लाभान्वित होंगे। इस पत्रिका में सम्मिलित नवीन सूचनाएँ रचनात्मक क्रिया-कलापों, साहित्यिक लेख, छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास, उन्नयन एवं उन्हें प्रेरणा प्रदान करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगे। आपकी यह पत्रिका एक सन्दर्भ पुस्तक के रूप में उपयोगी होगी।

'अभ्युदय' के सफल प्रकाशन एवं वार्षिक उत्सव की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामना।

सादर,

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव
भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल, फैजाबाद

(इन्द्र प्रताप उर्फ खब्बू तिवारी)

संदेश

भवदीय ग्रुप ऑफ़ इन्स्टीट्यूशन्स

सीवार-सोहावल : फैज़ाबाद

मिश्रीलाल वर्मा
प्रबन्ध निदेशक

मंगल-कामना

हेमकुञ्ज, 11/24/1-ए,
शृंगारहाट, अयोध्या-224123
दिनांक : 22.01.2018

हम सभी के लिए हर्ष एवं गर्व का विषय है कि संस्थान की वार्षिक पत्रिका "अभ्युदय" का अंक (सत्र 2017-18) प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की मौलिक-रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति है। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ तथा सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

माता-पिता, परिजनों, गुरुजनों एवं सुहृज्जनों के आशीर्वाद, प्रोत्साहन एवं सहकार से विद्यार्थी जीवन से ही मेरे मन में शिक्षा-संस्कृति, मानवीय-मूल्यों एवं विद्योन्नयन के प्रति समर्पण-भावना का उन्मेष हो गया था। विज्ञान-वर्ग में स्नातक-स्तर तक की शिक्षा ग्रहण कर लेने के उपरान्त आगे की विद्यालयीय-शिक्षा में अग्रसर होने की अनुकूलता न देखकर मैं शिक्षा-विद्या के प्रसार-प्रकाश के व्यवसाय में प्रवृत्त हो गया। वही सत्संकल्प 'भवदीय प्रकाशन' के रूप में मूर्तिमान हुआ, जिसे अवध विश्वविद्यालय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, पूर्वांचल विश्वविद्यालय सहित व्यापक शिक्षा-क्षेत्र के गुरुजनों, अभिभावकों एवं विशेषतः विद्यार्थियों का हार्दिक सहयोग और सद्भाव अपेक्षा से कहीं अधिक मात्रा में प्राप्त हुआ।

शिक्षा विकास की जननी है। विश्व में जो राष्ट्र जितना शिक्षित है, वह उतना ही विकसित है। भारत की आत्मा उसके गाँवों में बसती है। वस्तुतः गाँवों का विकास ही भारत का विकास है। दूर-दराज गाँवों में बसने वाले किसान मजदूर की सन्तानों तक शिक्षा की रोशनी पहुँचाने का जो सपना कभी युग प्रवर्तक महात्मा गाँधी ने देखा था, उसी सपने को साकार करने की पवित्र संकल्पना के साथ स्थापित हमारा संस्थान शहर के कोलाहल एवं चहल-पहल से बहुत दूर शान्त, सुरम्य, नीरव ग्रामीण अंचल को विगत वर्षों से उच्च शिक्षा के प्रकाश से आलोकित एवं उसकी सुगन्ध से सुरभित कर रहा है। गाँव के बेटे-बेटियाँ, जिनकी पहुँच शहर के महाविद्यालयों तक नहीं है। वे आज व्यावसायिक क्षेत्र के विभिन्न कोर्सों की गुणवत्तायुक्त एवं मूल्यपरक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

आज-दिन संस्थान का सुनाम अवध विश्वविद्यालय-परिक्षेत्र में अग्रणी विद्यापीठ के रूप में मुख्यतः हो रहा है। प्रबुद्ध, सम्भ्रान्त एवं शिक्षा के प्रति जागरूक विविध-वर्गीय नागरिक-गण संस्थान के प्रति प्रोत्साहनपूर्ण आत्मीय सद्भाव रखते हैं। प्रबन्धन-संचालन-प्रशासन-शिक्षण-प्रशिक्षण से जुड़े समस्त महानुभाव पूर्ण तत्परता से संस्थान को अग्रसर बनाने में दत्तचित्त हैं। हमें हार्दिक प्रसन्नता है कि संस्थान में अध्ययन-रत सभी छात्र-छात्राएँ विनीत, अनुशासित एवं विद्यानुराग से आपूरित हैं।

हमारी मंगल कामना है कि संस्थान में शिक्षण-प्रशिक्षण-रत विद्यार्थी आगे चलकर अपने जीवन में सफलकाम बनें। अध्यापक-गण से हमारी हार्दिक अपेक्षा है कि इसी प्रकार पूरे मनोयोग से विद्यादान में निरत रहें।-'विद्यादानं महादानम्!' साथ ही, अनुरोध है कि विद्या-विभूषित आदरणीय गुरुजन, विविध क्षेत्रों में अग्रणी सुधी-समाजसेवी महानुभाव एवं समस्त आत्मीय अभिभावक-वृन्द इसी प्रकार संस्थान को अपना सद्भाव एवं सहयोग प्रदान करते रहें, जिससे संस्थान और अधिक प्रवर्धमान हो सके और हम आपकी और अधिक शुभ सारस्वत सेवा करने में सफल-समर्थ सिद्ध हों। सर्वं भवतु मंगलम्—

वसन्त पंचमी, 2018

(मिश्रीलाल वर्मा)

संदेश

चेयरमैन की कलम से.....

शिक्षा वर्तमान एवं भविष्य के निर्माण का अनुपम साधन है। भारत जैसे ग्राम प्रधान देश में ग्रामीण आबादी की शिक्षा पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। हमारे देश में स्वैच्छिक प्रयासों की एक लम्बी परम्परा है। इसी क्रम में दूरद्रष्टा श्रद्धेय श्री मिश्रीलाल वर्मा, प्रबन्ध निदेशक ने फैजाबाद जनपद के ग्रामीण अंचल सीवार-सोहावल में रोजगारपरक शिक्षा संस्थान की नींव 21 अगस्त 2010 को रखी एवं 15 अगस्त 2011 से शिक्षण कार्य प्रारम्भ करके ग्रामीण छात्र/छात्राओं की प्रतिभा को पुष्पित- पल्लवित करने का सुअवसर प्रदान किया। स्थापना के सात वर्षों की यात्रा पूर्ण कर संस्थान उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। गतिशीलता जीवन का पर्याय है। ज्ञानदीप लेकर लक्ष्य की ओर अग्रसर होना ही शिक्षालयों का उद्देश्य है। संस्थान की पत्रिका 'अभ्युदय' भी इस दिशा में बढ़ाया गया एक सार्थक कदम है। इसके माध्यम से हम अपने संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मन में अंकुरित होते विविध भावों, प्रतिभाओं के बहुरूपों को प्रस्तुत करते हैं, साथ ही साथ यह पत्रिका संस्थान के प्रगति में विविध आयामों को भी दर्शाती है। वर्ष भर के क्रियाकलापों का लेखा-जोखा, छात्र/छात्राओं की प्रगति, प्रतिभा सम्पन्नता एवं रचनाशीलता आदि तथ्यों को भी दर्शाती है। हमारी युवा शक्ति एक सच्चे नागरिक की भाँति अपने परिवार, ग्राम, नगर, प्रान्त तथा राष्ट्रीय विकास कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाए, एक चेयरमैन के रूप में यही उनके प्रति मेरा सर्वप्रमुख कर्त्तव्य है।

शैक्षिक गुणवत्ता को उच्चस्तर पर पहुँचाने हेतु हम अनवरत प्रयासरत हैं। संस्थान का अनुशासन पूर्णरूपेण चुस्त-दुरुस्त रखा जाता है। छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान आदि भी आयोजित किये जा रहे हैं। किसी संस्था के विकास की कोई सीमा नहीं होती। यह तो ऊर्ध्वगामी मार्ग है। इस मार्ग का लक्ष्य सदैव पथिक से दूर ही रहता है, किन्तु मुझे विश्वास है कि सबके सहयोग से ही 'हम होंगे कामयाब'। संस्थान परिसर में हमने दीर्घ सुविधाओं का स्वप्न संजोया है। हमारे पास प्रगतिशील चिन्तन एवं सहयोगी विचारधारा वाले सहयोगियों, कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं एवं शुभचिन्तकों का समूह है जो निरन्तर संस्थान के विकास हेतु मेरे साथ कृत संकल्प हैं। मेरी कल्पना, मेरा स्वप्न इस संस्थान को एक नये परिवार, एक नये समाज, एक अनोखी व्यवस्था, एक नये राष्ट्र का सृजनहार बनाने का है। मेरी आकांक्षा है कि हमारे संस्थान से जुड़े हर सदस्य की आँखों में यही स्वप्न हो ताकि यह स्वप्न शनैः शनैः वृहत् आकार ले, साकार हो एवं विश्व में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने में सम्भव हो सके। हमारी निरन्तर कर्मशीलता और सर्जनेच्छा अवश्य ही हमारे लक्ष्य प्राप्ति में सहयोगी होगी।?

सम्पादक मण्डल के सदस्यों, संस्थान के समस्त प्राध्यापकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को शुभकामना।

सद्भावनाओं सहित !

P N Verma

(इं. पी. एन. वर्मा)

चेयरमैन–भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स

संदेश

महानिदेशक की ओर से...

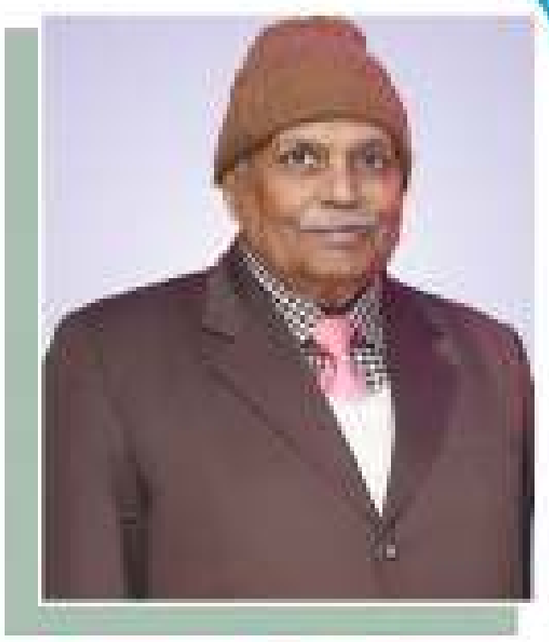

प्रोफेसर डॉ. मंशाराम वर्मा
महानिदेशक

पूर्व अधिष्ठाता इंजी. संकाय
नरेन्द्रदेव कृषि एवं प्रौ.वि.वि.
कुमारगंज, फैजाबाद।

भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स द्वारा प्रकाशित "अभ्युदय" 2017-18 अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका अपनों के आत्मावलोकन के लिए एक दर्पण है तथा वाह्य पाठकों के लिए यह 'भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स' के गतिविधियों, उत्कृष्ट शिक्षा संसाधनों, भिज्ञ एवं कुशल संकाय सदस्यों, होनहार छात्र-छात्राओं एवं अग्रगामी योजनाओं की संक्षिप्त विवरणिका है। हमारा मुख्य लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण नैतिक मूल्यों युक्त विश्व-स्तरीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करते हुए समग्र वैयक्तिक विकास का है।

हम अपने इस लक्ष्य को कहाँ तक प्राप्त करने में सफल रहे हैं? इस "अभ्युदय" के माध्यम से देख सकते हैं। इसे अग्रेतर प्राप्त करने के लिए हमारे पास अनुभवी, दृढ़ इच्छाशक्ति वाला संकल्पित कर्मठ प्रबन्धतंत्र है जिसके उदार कर्त्तव्यनिष्ठ मुख्य प्रबन्ध निदेशक मा. मिश्रीलाल वर्मा जी हैं तथा सुधी अनुभवी संकाय सदस्य, सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, शिक्षण संसाधन, रमणीक वातावरण एवं कर्मठ-अनुशासित विद्यार्थी हैं।

हमारे ग्रुप के विभिन्न संस्थानों की स्थापना ग्रामीण अंचल में हुई है, जो विशेषकर ग्रामीण परिवेश के छात्र-छात्राओं के लिए बहुत ही अनुकूल है। यहाँ पर उच्च स्तर की सभी सुविधाएँ जो पठन-पाठन एवं समग्र वैयक्तिक विकास के लिए आवश्यक हैं, उपलब्ध हैं। हमारी संस्थाएँ नवीन चेतनाओं की प्रयोगशाला हैं, जिसमें विकास की सहज प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। यह परिवेश ही आदर्श, उत्कृष्ट, कर्मठ, मेधावी एवं प्रेरक मानव बनाता है। फलतः हमारी संस्थाओं के सुसंस्कृत छात्र एवं शिक्षक जहाँ भी जाते हैं अपनी कृतित्व एवं व्यक्तित्व की ऐसी अमिट छाप छोड़ते हैं कि वे स्वयं उनके उत्प्रेरक बन जाते हैं। अनेक क्षेत्रों में गये हमारे पूर्व छात्र-छात्राएँ इसके सफल उदाहरण हैं, जो हमारे शिक्षण एवं प्रशिक्षण का उज्ज्वलतम पक्ष भी है। मैं इस ग्रुप के सभी संस्थाओं के प्राचार्यों, अध्यापकों, अधिकारियों एवं सहकर्मियों की भूरि- भूरि प्रशंसा करता हूँ जो संस्थानों के उत्कृष्ट विकास के लिए सकारात्मक सोच, ईमानदारी, कड़ी मेहनत, समर्पण, अनुशासन, दृढ़ संकल्प, दूरदृष्टि तथा धनात्मक ऊर्जा के साथ अनवरत कार्यशील रहते हैं।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हमारे संस्थान निकट भविष्य में अपने उत्कृष्ट एवं सुसंस्कृत छात्रों एवं प्रशिक्षुओं के द्वारा प्रदेश ही नहीं पूरे देश में गौरवान्वित होंगे यही हमारी शुभ कामना एवं हार्दिक बधाई है।

(प्रो0 डॉ0 मंशाराम वर्मा)
महानिदेशक

संदेश

डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
सचिव/प्रबन्धक

भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स
सीवार, सोहावल-फैजाबाद

सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में पावन सरयू के किनारे पर स्थित भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस आज शिक्षा के क्षेत्र में नूतन आयाम स्थापित कर रहा है। यहाँ पर संचालित स्नातक एवं परास्नातक रोजगारपरक पाठ्यक्रमों MBA, BBA, BCA, D.Pharm, B.Pharm, B.Sc. (Ag.), B.Sc. (H.Sc.), B.Lib, D.El.Ed, B.Ed. ने छात्रों को एक नये मुकाम पर पहुँचाने का प्रयास किया है। साथ ही नूतन विकास की कड़ी में आगामी सत्र में बी.एल.एड्., बी.एस-सी. बी.काम., बी.पी.ई. तथा एल-एल.बी. पाठ्यक्रमों का संचालन संस्थान द्वारा प्रस्तावित है, जिसे मूर्त रूप प्रदान किया जा रहा है।

किसी भी कार्य/दायित्व को पूर्णता की तरफ पहुँचाने के लिए एक टीम की आवश्यकता होती है, संस्थान के प्राचार्यगण, प्राध्यापक एवं समस्त कर्मचारीगणों का हमेशा पूरे मनोयोग से सहयोग प्राप्त होता रहा है। इसी का परिणाम है कि संस्थान आज इतनी अल्पावधि में शिक्षा के क्षेत्र में एक नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है।

संस्थान के कैम्पस को ग्रीन कैम्पस- क्लीन कैम्पस के साथ ही हर सुविधा से परिपूर्ण करने की कोशिश की गयी है, जिससे कि सभी छात्र/छात्राओं को समस्त शैक्षणिक सुविधाएँ गुणवत्तापूर्वक प्राप्त हो सकें।

संस्थान के शैक्षिक स्तर को बनाने के लिए प्रत्येक वर्ष विभिन्न सेमिनार, फैकल्टी डेवलपमेण्ट प्रोग्राम, स्टूडेण्ट डेवलमेण्ट प्रोग्राम, वर्कशाप, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शैक्षणिक यात्रा तथा विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है जिससे छात्रों का प्रत्येक क्षेत्र में विकास सम्भव हो।

मैं भवदीय परिवार के समस्त शिक्षकों, सदस्यों, इष्ट मित्रों तथा शुभेच्छु को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूँ जिनके भरपूर सहयोग से यह सम्भव हो सका। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में 'भवदीय' प्रदेश ही नहीं वरन् देश के उच्चस्थ शैक्षणिक संस्थाओं में अपनी भूमिका अदा करेगा।

(डा0 अवधेश कुमार वर्मा)
सचिव/प्रबन्धक

सम्पादकीय.....

प्राचार्य की कलम से....

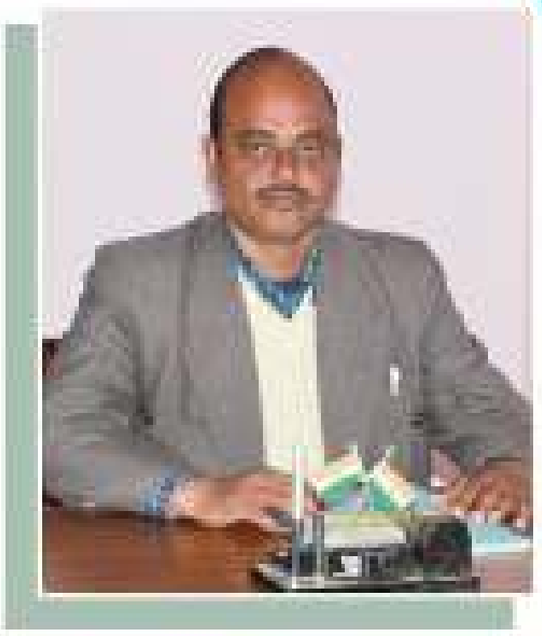

भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस परिवार की पत्रिका "अभ्युदय" का चौथा अंक आप सभी पाठकों के सम्मुख नव सृजनात्मक क्षमताओं के साथ नये कलेवर में प्रस्तुत है। पत्रिका के माध्यम से संस्थान अपनी शैक्षणिक गतिविधियों, पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं शैक्षिक उद्देश्यों के प्रकीर्णन हेतु लोक मान्यता प्राप्त करता है। साथ ही विद्यार्थियों के विचारों एवं भावों को जानने, उनकी आन्तरिक अभिक्षमता, सृजनात्मक क्षमता एवं रचनात्मकता को संवर्द्धित एवं प्रस्फुटित करने का माध्यम होती है।

भारतीय संस्कृति एवं शिक्षा में मूल्यादर्श पर आधारित शिक्षा की संकल्पना की गयी है, जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग भी है। वर्तमान समय में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु युवाओं के व्यक्तित्व के निर्माण में 'मूल्य आधारित शिक्षा' की महती आवश्यकता है। जहाँ तक भारतीय सन्दर्भों में सुयोग्य नागरिक निर्माण, शैक्षिक उन्नयन एवं सफलता हेतु जीवन दर्शन में मूल्य आधारित शिक्षा की संकल्पना की गयी है।

वस्तुतः मूल्य परिवर्तनशील समाज की वह धुरी है, जिसके कारण समाज का अस्तित्व है, क्योंकि उपयोगिता या कल्याणकारिता की भावना ही समाज को स्थिर रखती है। मूल्य ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण है, जिससे व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन-पद्धति का निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। इसमें मनुष्य की धारणाएँ विचार, विश्वास, मनोवृत्ति, आस्था आदि समाहित हैं। ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अन्तःकरण द्वारा नियंत्रित होते हैं, तो दूसरी ओर उसकी संस्कृति एवं परम्परा द्वारा क्रमशः निस्सृत एवं परिपोषित होते हैं।

वर्तमान में छात्र ही भावी समाज के निर्माता हैं। अतः छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, जिससे उनमें मूल्यों का विकास हो तथा शाश्वत मूल्यों का संरक्षण हो। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ है—"उस पूर्णता को व्यक्त करना जो सब मनुष्यों में पहले से विद्यमान है।" स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का आदर्श है- पूर्ण मानव का निर्माण। इसी आदर्श के आधार पर ही उन्होंने शिक्षा के सन्दर्भ में कहा है कि शिक्षा मानव में निहित पूर्णता का प्रकाशन है। इसी पूर्णता के प्रकाशन हेतु वे सतत् प्रयत्नशील रहे, जिससे निःसन्देह भारत का भविष्य उज्ज्वल होगा और वह उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। यही वह मार्ग है, जिससे मानव का निर्माण होगा, अतः हमारी शिक्षा मानव निर्माण एवं विश्व बन्धुत्व की भावना विकसित करने के साथ ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने वाली पूर्णता की अभिव्यक्ति तथा आत्मा की अनुभूति करने का माध्यम होनी चाहिए।

संस्थान पत्रिका का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रहा है, क्योंकि विद्यार्थियों के अन्दर का उद्गार नवसृजनात्मक क्षमताओं के साथ अभ्युदय के माध्यम से प्रस्फुटित हुआ है। मेरा विश्वास है कि यह पत्रिका संस्थान के शैक्षिक उपलब्धियों के नये प्रतिमान स्थापित करने के साथ ही विद्यार्थियों, कर्मचारियों तथा योग्य शिक्षकों की रचनात्मक व अनुसंधानपरक अभिवृत्ति को एक नई दिशा प्रदान करेगी। संस्थान के चेयरमैन, निदेशक, महानिदेशक, सचिव महोदय के प्रति मैं पत्रिका के प्रकाशन एवं सहयोग हेतु हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। सम्पादक मण्डल के सदस्यों, संस्थान के समस्त प्राध्यापकों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों का मैं हृदय से आभारी हूँ जिनका पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से हमें सहयोग प्राप्त हुआ।

सद्भावनाओं सहित !

(डॉ. करुणेश कुमार तिवारी)

अनुक्रम

1.	भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स : स्थापना एवं विकास		4
2.	Annual Reports-2017 : Bhavdiya Institutions of Pharmaceutical Sciences and Research	– *Dr. Sanjay Kumar Kushwaha*	6
3-	Event report- BIPSR	– *Dr. Sanjay Kumar Kushwaha*	9
4.	Department of Management & Computer Science Annual Report 2017-18	– *Dr. Shishir Pandey*	11
5.	वार्षिक रिपोर्ट : शिक्षक-शिक्षा विभाग	– *डॉ. करुणेश कुमार तिवारी*	14
6.	वार्षिक रिपोर्ट : क्रीड़ा समारोह	– *डॉ. दयाशंकर वर्मा*	15
7.	शिक्षा में अनुशासन	– *कै*	16

प्रबन्धन-अनुभाग

1.	Prospects of Accounting Education in Business Studies	– *Dr. Shishir Pandey*	18
2.	Payment Bank : New banking Concept for Financial Inclusion	– *Er. Abhishek Bhatnagar*	21
3.	Special issue on operations research	– *Dhananjay Singh*	22
4-	Knowledge Management	– *Dhananjay Pandey*	22
5-	How to Save Time and Scale Your Marketing Content	– *Shivendra Pratap Singh*	25
6-	Dilemmas at workplace	– *Supriya singh*	26
7-	Era of Cloud Computing Management : Paradigms and it's Technologies	– *Er.Sumit Srivastava*	28
8-	A positive student-teacher relationship	– *Ms. Seema Verma*	30
9.	Teaching is a journey	– *Jyoti Vaish*	32
10.	Corruption in India : A Major Problem	– *Mr. Anuj Singh*	32
11.	Foot and Mouth Disease (FMD)	– *Dr. Sujeet Kumar Yadav*	34
12.	एक रुपये के नोट का 100 वर्षों का रोचक.....	– *धनञ्जय वर्मा*	35
13.	किसान की आत्मकथा	– डॉ. दीपक कुमार गौ	36
14.	मौ	– *अवनीश शुक्ल*	37
15.	कै	– *डॉ० पंकज कुमार यादव*	39
16.	आधुनिक जीवन में फास्ट फूड एवं उसके दुष्परिणाम	– *पशुपति नाथ सिंह "गाँधी"*	40
17.	बेटियाँ	– *वन्दना वर्मा*	42
18.	स्त्री शिक्षा का महत्त्व	– *श्रीमती सुनीता वर्मा*	43
19.	पिता	– *आकाश सक्सेना*	43

छात्र- अनुभाग

1.	फार्मेसी बिजनेस या मेडिकल स्टोर कै	— *प्रिया वर्मा*	44
2.	बिटिया	— *महेश कुमार*	45
3.	नौ	— *अमित कुमार*	46
4.	पाँच रोग के लक्षण, कारण, इलाज	— *आकाश वर्मा*	46
5.	अछूत कौ	— *महेश कुमार*	48
6.	गजल	— *निर्भय सिंह*	49
7.	Don't Quit	— *Pinky Verma*	49
8.	Recent Trends For Management of Hypertension	— *Tooba Jamal*	50
9.	Parents	— *Rajat Jaiswal*	51
10.	भारत में आतंकवाद के बढ़ते कदम	— *रजनीश सिंह पटेल*	52
11.	अलफाजे परवाज है	— *पूजा कनौ*	52
12.	ग्लोबल वार्मिंग	— *अंकित कुमार सिंह*	53
13.	स्वच्छ भारत अभियान	— *दिलीप कुमार*	54
14.	कॉलेज की महिमा	— *मनीषा यादव*	54
15.	पिता क्या है	— *सारिका मिश्रा*	55
16.	अब नारी नहीं अबला	— *शै*	55
17.	माँ की ममता	— *मार्कण्डेय सिंह*	56
18.	जिन्दगी	— *किरन मौ*	56
19.	माँ की याद	— *रेनू गुप्ता*	57
20.	हसीन जिन्दगी	— *राहुल कुमार*	58
21.	नौ	— *साधना सिंह*	58
22.	तीन नियम	— *गोल्डी*	59
23.	मजेदार चुटकुले	— *बबिता वर्मा*	59
24.	मच्छर हितोपदेश	— *महीप कुमार*	61
25.	मै	— *शिल्पा शर्मा*	61
26.	साहस	— *हर्षिता तिवारी*	62
27.	नौ	— *राजकुमार*	62
28.	महिला सशक्तीकरण	— *रजनी वर्मा*	63
29.	महिला सशक्तीकरण	— *ज्योति तिवारी*	64
30.	जिन्दगी की अहमियत	— *रोली भारती*	65
31.	एक अकेली लड़की	— *अमित कुमार*	66
32.	माँ पर कविता	— *बिन्देश्वरी वर्मा*	66
33.	दोस्ती पर 'अनमोल वचन'	— *पुष्पा निषाद*	67
34.	पिता	— *संजना*	67
35.	बेटी बचाओ	— *पूजा कनौ*	68

36.	What is the Imagination Power?	— *Shrikant Joshi*	68
37.	घायल सै	— *तरुण सिंह*	69
38.	माँ	— *राहुल कुमार*	69
39.	गुरु वन्दना	— साहिल सिंह	70
40.	Mathematics	– *Priya Gupta*	71
41.	True Thought Leadership Embodies bold Attributes	– *Saroj*	71
42.	Women Empowerment	– *Shere Saba*	72
43.	Internet	– *Preeti Yadav*	72
44.	Operating System	– *Manisha*	73
45.	भारत को मिली एक औ GST- Goods and Services Tax	— *सोमेन्द्र प्रजापति*	74
46.	Roles and Challenge to H. R.	– *Antima Singh*	75
47.	क्या मिलेगा आने वाली पीढ़ी को	— *कु. अंकुल मौ*	76
48.	Article on Microprocessor	– *Dolly Pandey*	77
49.	Microprocessor	– *Ram Gupta*	78
50.	Hardware versus Software	– *Man Mohan*	79
51.	Windows Applications	– *Sufiyan Khan*	79
52.	C Language	– *Kavita Maurya*	80
53.	Computer	– *Pooja Rawat*	80
54.	C Data Types	– *Supriya Verma*	81
55.	Number System	– *Pooja Verma*	82
56.	Digital India	– *Pratima*	82
57.	Generation of Computer and their ------	– *Arvind Kanaujia*	83
58.	What is 4G mobile Network	– *Aditi Mishra*	83
59.	What is Microprocessor	– *Mohammad Azhar*	84
60.	Computer Languages	– *Rahul Mishra*	86
61.	How to Choose a Career	– *Shikha Singh*	87
62.	बस चलते जाना है	— *शिखा सिंह*	87
63.	समाचार पत्रों में भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स (BGI)		88

❖❖❖

स्मारिका में प्रकाशित लेख, कविता लेखकों के अपने विचार है
उसमें किसी तरह की त्रुटि या मतभेद है

भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स : स्थापना एवं विकास

[प्रारम्भ से आज तक]

—डॉ. अवधेश कुमार वर्मा
(सचिव)

आदरणीय महानुभाव !

ज्ञान औ
युग से हमारे देश में चली आ रही है
संवहन में यथाशक्ति अपनी भूमिका निभाना हर भारतवासी का परम कर्त्तव्य है
समाज-सेवा की भावना है
अभ्युदय की प्रेरणा देती रहती है विचार औ
संकल्प भगवत्कृपा से जगता है ा मनस्वियों
तथा सुजनों के अनुग्रह से विकसित होता है

तदनुरूप इन्स्टीट्यूशन की स्थापना के स्वप्न को साकार करने के लिए 5 जुलाई 2010 को इस भूखण्ड (जिसका क्षेत्रफल लगभग 8 एकड़ का है
कराई गई। इसके पश्चात् 21 अगस्त 2010 को भूमि पूजन का कार्य सम्पन्न करके शै
विभिन्न कोर्सों की मान्यता के लिए फाइलिंग का भी कार्य समानान्तर डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फै B.B.A., B.C.A. तथा M.B.A. पाठ्यक्रम हेतु AICTE दिल्ली में आवेदन किया गया। आदरणीय चेयरमै
वर्मा के कुशल निर्देशन एवं अथक प्रयास के परिणामस्वरूप एक ही वर्ष के अन्दर मंगलवार, 16 अगस्त, 2011 को संस्थान के प्रथम शै
उद्घाटन परमादरणीय डॉ0 रामशङ्कर त्रिपाठी, फै
की अध्यक्षता में, प्रोफेसर अवध राम, पूर्व कुलपति महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ वाराणसी द्वारा डॉ. रामअँजोर सिंह, पूर्व प्राचार्य, रामनगर, पी. जी. कॉलेज, बाराबंकी तथा श्रीमती डॉ. राधारानी सिंह, बाराबंकी व अयोध्या-फै
विद्वानों की उपस्थिति के साथ-साथ स्थानीय प्रबुद्ध वर्ग व सम्मानित जनता की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था।

तदुपरान्त बी. टी. सी. एवं डी. फार्म. पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु प्रयास किया गया। फलस्वरूप अगस्त 2013 से बी. टी. सी. की कक्षाओं का संचालन प्रारम्भ हो गया। इसी कड़ी में दिनांक 24.8.2013 को डी. फार्मा. की मान्यता प्राप्त होना संस्थान के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि साबित हुई, जिसकी कक्षाएँ सितम्बर 2013 से प्रारम्भ हुईं।

इसी कड़ी में सत्र 2014-15 में बी.एड्. पाठ्यक्रम की सम्बद्धता NCTE द्वारा भवदीय एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट को प्राप्त होने के उपरान्त कक्षाएँ संचालित की गयी तथा B.T.C. पाठ्यक्रम के संचालन हेतु संस्थान की नयी शाखा ग्राम बरई कलाँ जो कि इस कै
इंस्टीट्यूट के नाम से स्थापित हुई है
2015-16 से NCTE द्वारा बी.टी.सी. पाठ्यक्रम की मान्यता प्राप्त हो चुकी है
प्रबन्धक निदेशक, चेयरमै
प्रो. एम. आर. वर्मा जी के निर्देशन में बी.टी.सी. के प्रत्येक पाठ्यक्रम में अतिरिक्त यूनिट के लिए NCTE में आवेदन किया गया था जो कि आपके कुशल निर्देशन में विगत 3 मार्च 2016 को पूर्ण हो गया है
बी.टी.सी. पाठ्यक्रम की प्रवेश क्षमता इस ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षित माँग के अनुरूप हो चुकी है
कुशल निर्देशन एवं प्रयास तथा टीम वर्क का प्रतिफल है
ग्रामीण क्षेत्र में भी MBA की 60 सीटों पर प्रवेश समय से पहले हो जाता है
अन्य जिलों से भी बच्चे मै

है। छात्रों को आगे कै
प्लेसमेण्ट सेल का गठन किया है
पाण्डेय (असिस्टेन्ट डायरेक्टर) छात्रों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियों में Campus Selection कराने हेतु प्रतिबद्ध है

2015-2016 शै
जनपद के नब्बे इण्टर कालेजों में बच्चों के अन्दर कम्प्टीशन की भावना जागृत करने हेतु क्विज कम्प्टीशन करा कर प्रत्येक विद्यालय के प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त कर चुके छात्रों को इंस्टीट्यूशन कै
क्रमश: 20 दिसम्बर 2015 एवं 3 जनवरी 2016 को पुरस्कृत किया गया तथा उसी दिन इन विजयी छात्रों द्वारा मेगा क्विज कम्प्टीशन का भी आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त छात्र/छात्राओं के साथ-साथ उन कालेजों के प्रधानाचार्य गण को पुरस्कृत व सम्मानित किया जाना है

संस्थान के सभी संकाय सदस्यों व छात्रों के प्रयास से भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स ने शिक्षा के अलावा अन्य सामाजिक जिम्मेदारियों का भी भली-भाँति निर्वहन किया है
से ही समाज का विकास हो सकता है
है
ग्रामीणों में कम्बल-वितरण, नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन कर दवा-वितरण एवं प्राकृतिक आपदा से पीड़ित व्यक्ति को आर्थिक राहत प्रदान करना आदि कार्य भी समय-समय पर किया जा रहा है

प्रबन्धतन्त्र द्वारा **स्टूडेन्ट वेलफेयर एकाउण्ट** की व्यवस्था की गई है
एवं छात्राओं को विभिन्न मदों जै
परीक्षा शुल्क के रूप में सहयोग किया जाता है
द्वारा अब तक विभिन्न कक्षाओं के जरूरतमन्द छात्रों की मदद संस्थान द्वारा की गयी है

संस्थान की यह भूमि, जिसका क्षेत्रफल 8 एकड़ में फै
प्रबन्ध-निदेशक के कुशल निर्देशन एवं तकनीकी पद्धति के द्वारा 90% क्षेत्रफल की जमीन को हरा-भरा बना दिया गया है
विकसित कर शै
स्वरूप प्रदान करने का पूरा-पूरा प्रयास सफल हो जायेगा। संस्थान द्वारा इस वर्ष 300 छात्रों हेतु हास्टल की व्यवस्था की जा रही है
ग्रहण करने में कठिनाई न हो। संस्थान के प्रबन्ध तंत्र द्वारा अभी इस शै
PCI/AICTE द्वारा सत्र 2017 में प्राप्त होने के उपरान्त कक्षाएँ संचालित हो रही हे। जिसका सफल संचालन BIPSR द्वारा किया जा रहा है
के नूतन विकास की कड़ी में बी.एस-सी., बी. काम., बी.एस-सी. (कृषि), बी.एस-सी. (गृहविज्ञान), बी. लिब., बी.पी. ई. एल.एल.-बी. (त्रि-वर्षीय) की कक्षाओं के संचालन की अनुमति डॉ. रा.म. लो. अवध वि.वि. द्वारा प्राप्त हो चुकी है
2017-18 में बी.एस-सी. (कृषि), बी.एस-सी. (गृहविज्ञान), बी. लिब. की कक्षाएँ भवदीय एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट के परिसर में नियमित रूप से संचालित हो रही है
(त्रि-वर्षीय) पाठ्यक्रम का संचालन भवदीय कालेज ऑफ लॉ द्वारा आगामी सत्र में प्रस्तावित है
शृंखला में शै
बालिकाओं के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर प्रबन्ध तंत्र द्वारा भवदीय पब्लिक स्कूल की स्थापना मोहबरा बाजार, रानोपाली, फै
महानुभाव एवं भवदीय परिवार के सभी सदस्यों का इसी तरह से सहयोग एवं प्रेरणा मिलता रहेगा तो निश्चित ही भविष्य में संस्थान में उपरोक्त पाठ्यक्रम संचालित होंगे, जो कि इस ग्रामीण क्षेत्र के विकास में एक मानक तय करेगी। साथ ही में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी।

इसी के साथ आपके सहयोग एवं आशीर्वाद की कामना करते हुए!

धन्यवाद!!

❑

Annual Reports-2017
Bhavdiya Institutions of Pharmaceutical Sciences and Research

–Dr. Sanjay Kumar Kushwaha
Director

"I deem it my privilege to place a brief report of the activities of the academic year 2017-18"

Bhavdiya Institute of Pharmaceutical Sciences and Research (BIPSR) was established in 2013 and has emerged as a pharmacy institution with a promising institution of the region, providing value added, quality education in pharmacy, and an institution striding towards excellence, with the vision "***To establish an excellent, value-based higher educational hub to meet the challenges of global competitiveness***", several steps are being undertaken for multi-dimensional growth of the students and institution, contributing in turn towards the growth of a healthy and happy society. ***Diploma in Pharmacy*** (**D. Pharm.**) was started on 2013 with the intake of 60 seats and ***Bachelor of Pharmacy*** (**B. Pharm.**) started this year 2017 with the intake of 100 seats.

The BIPSR is Affiliated from the Pharmacy Council of India (**PCI**) and approved from All India Council for Technical Education (**AICTE**). Diploma in Pharmacy is affiliated from the Board of Technical Education (**BTE**) Lucknow and Bachelor of Pharmacy is affiliated from Dr APJ Abdul Kalam Technical University (**AKTU**), Lucknow.

Staff

The BIPSR have full time faculty members with specialization in core and allied braches of pharmacy and non-teaching staff as per PCI/AICTE norms.

Students

In the current academic session, we have totally one hundred twenty students in the D. Pharm. first and final year together and sixty students in B. Pharm. first Semester. Regular classes were conducted without compromising with the standard of teaching. All academic measures were sincerely followed to create an ambience for teaching and learning in the BIPSR.

Emphasis was given to experimental/practical learning. Apart from this, presentation/class test have also been organized for exposing the students to become confident. Strict discipline is maintained in the BIPSR to provide safety, security, and ambience for learning. A balance between curricular and extracurricular activities is very well maintained in the college to prevent any student entering into a state of boredom or to become a bookworm.

Academic Excellency Achievers : The students of BIPSR were performed time to time and proved they outstanding.

S No	Rank Holder	Class/Year	Session	Score/Rank
1.	***Surya Prakash Tiwari***	D. Pharm II	2016-17	73.44/First
2.	***Vivek Gupta***	D. Pharm II	2016-17	72.76/Second
3.	***Firdaus Shaikh***	D. Pharm I	2016-17	77.21/First
4.	***Duegesh Verma***	D. Pharm I	2016-17	74.08/Second
5.	***Sonam Singh***	D. Pharm II	2015-16	80.76/First
6.	***Astha Yadav***	D. Pharm II	2015-16	80.19/Second
7.	***Abhishek K Singh***	D. Pharm I	2015-16	79.22/First
8.	***Shiv Shankar Verma***	D. Pharm I	2015-16	78.87/Second
9.	***Jagriti Gautam***	D. Pharm II	2014-15	81.71//First
10.	***Suman Nishad***	D. Pharm II	2014-15	75.33/Second
11.	***Sonam Singh***	D. Pharm I	2014-15	80.00/First
12.	***Astha Yadav***	D. Pharm I	2014-15	77.7/Second
13.	***Jagriti Gautam***	D. Pharm I	2013-14	75.91/First
14.	***Suman Nishad***	D. Pharm I	2013-14	74.52/Second

Library

The BIPSR library has totally 2575 Volumes, 501 titles and animal experimental software CDs, in our library. We have subscribed more than ten Journals, five general magazines and two newspapers in the library.

Extra-curricular activities

We firmly believe that all round development takes place only if a student participates in various extra-curricular activities. Therefore, a lot of emphasis and importance has been given to it. Sports

activities, such as Cricket, Volley ball, Badminton, Carom, Chess, and various athletic events including field and tract, were organized. There were nearly nine to ten events in cultural activities were conducted during the session with active participation of the staff and students.

Celebration of World Pharmacist Day 2017

The World Pharmacists Day was celebrated on 25th September 2017 at the BIPSR campus. The students and faculty members took the *Pharmacist's Oath* collectively to remind their role towards the society and health care system. Banners and posters, portraying various aspects of pharmacy and health care issues, were prepared and displayed by the students. A number of competitions were organized by the faculty to the students i.e. extempore, debate, quiz, treasure hunt, etc.

Free First Aid cum drug distribution and health check-up camp to the pilgrims at Ayodhya

Free First Aid cum drug distribution and health check-up camp was organized on November 28th 2017, during the ***Chaudah Koshi Parikrama*** fair in Ayodhya, the pilgrims done parikrama were availing the camp facilities, like First Aid by injured pilgrims, health check-up for hypertensive and diabetic pilgrims as well as medicine for Pain, Fatigue, Fever, Vertigo, Eye Infection, Nausea, Vomiting & Diarrhea were dispensed to the pilgrims. In the camp, staff and student of BIPSR were actively participated and proved their role as a pharmacist for the wellness of mankind.

Conclusion

BIPSR is growing and marching ahead with all its might, definitely with the right spirit and in the right direction. This is possible because BIPSR family believes and follows the institutional Core Values namely Discipline, Determination, Dedication, Integrity & Trust, Interest & Involvement. Students are oriented here towards conspicuous value additions, namely, the quest for knowledge, the desire for innovation, the approach for total personality development and the pride in being a member of BIPSR family. The institute has rightly envisioned becoming a role model in Pharmacy education and the most preferred choice of students, parents, faculty and industry.

❑

Event report- BIPSR

–डॉ0 संजय कुशवाहा
डायरेक्टर

Orientation Programme 23 Aug 2017

भवदीय इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज एण्ड रिसर्च में बी. फार्म व डी. फार्म के नवप्रवेशित छात्र–छात्राओं का उन्मुखीकरण कार्यक्रम दिनाँक 23 अगस्त, 2017 को सम्पन्न हुआ।

संस्थान के प्राचार्य डॉ. संजय कुशवाहा ने सभी छात्र–छात्राओं को फार्मेसी के क्षेत्र से सम्बन्धित जानकारी दी तथा उनका मार्गदर्शन किया।

संस्थान के अन्य अध्यापकगण सीमा वर्मा, रणविजय सिंह, विपुल सिंह, पूजा द्विवेदी, माधुरी वर्मा एवं रूकुमकेश वर्मा ने भी अपने–अपने विचार व्यक्त किये तथा छात्र–छात्राओं का उत्साहवर्द्धन किया।

संस्थान के महानिदेशक प्रो. मंशाराम वर्मा ने उन्मुखीकरण दिवस पर छात्र–छात्राओं को शिक्षा का महत्त्व बताया तथा परिश्रम करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की सलाह दी।

संस्थान के प्रबन्ध निदेशक श्री मिश्रीलाल वर्मा, चेयरमै
ने नये छात्र–छात्राओं का संस्थान में स्वागत किया औ अपनी शुभकामनाएँ देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

Teacher's Day 05 Sep 2017

दिनाँक 05–09–2017 को भवदीय इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज एण्ड रिसर्च में बी. फार्म व डी. फार्म के छात्र–छात्राओं ने शिक्षक दिवस मनाया।

संस्थान के बी. फार्म व डी. फार्म के सभी छात्र–छात्राओं द्वारा शिक्षकों के सम्मान में विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये तथा सभी छात्र–छात्राओं ने मिलकर शिक्षकों को सम्मानित किया। संस्थान के प्राचार्य डॉ. संजय कुशवाहा ने छात्र–छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किये गये कार्यक्रमों की सराहना की तथा उनका मार्गदर्शन करते हुए शिक्षक दिवस की शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

संस्थान के अन्य शिक्षकों ने भी शिक्षक दिवस पर अपने विचार व्यक्त किये तथा छात्र–छात्राओं का मार्गदर्शन किया।

World Pharmacist Day 25 Sep 2017

फै सीवार, सोहावल स्थित भवदीय इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज एंड रिसर्च सेंटर में फार्मेसी के छात्र–छात्राओं ने विश्व फार्मासिस्ट दिवस मनाया।

संस्थान के प्राचार्य डॉ. संजय कुशवाहा ने सभी फार्मासिस्ट छात्रों को शपथ दिला कर फार्मेसी के क्षेत्र में अपार सम्भावनाओं से अवगत कराया। छात्र–छात्राओं ने एक्सटेमपोर, डिबेट, क्विज, ट्रीजर हन्ट इत्यादि, प्रतियोगिताओं में शिरकत की, जिसमें एक्सटेमपोर में रवि प्रताप, महेश कुमार, पिंकी वर्मा, डिबेट में अमित कुमार, रवि प्रताप, विकास कुमार, तथा क्विज प्रतियोगिता में फिरदौ
ट्रीजर हन्ट प्रतियोगिता में मोहित यादव, अविनाश कुमार, सुजीत कुमार, निशा खातून, अवधेश वर्मा विजयी रहे। इन सभी विजयी प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत किया गया। प्रबन्ध निदेशक श्री मिश्री लाल वर्मा, चेयरमै
वर्मा, सचिव डॉ. अवधेश वर्मा एवं शिक्षकगण सीमा वर्मा, विपुल सिंह, रूकुमकेश वर्मा, रणविजय सिंह, पूजा द्विवेदी, माधुरी वर्मा, जबीउर्रहमान, संगीता माहौ ने भी अपने–अपने विचार व्यक्त किए।

Free Health Check-up Camp 26 Sep 2017

विश्व फार्मासिस्ट दिवस के अवसर पर दिनाँक 26–09–2017 को भवदीय इन्स्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज एण्ड रिसर्च के डी.फार्म. तथा

बी. फार्म. के छात्र-छात्राओं द्वारा संस्थान के डायरेक्टर डॉ. संजय कुमार कुशवाहा के नेतृत्व में रुदौ
प्रांगण में नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का शुभारम्भ श्री गिरिजेश चौ
अधिकारी रुदौ
करते हुए उपजिला अधिकारी महोदय ने कहा कि भवदीय इन्स्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज एण्ड रिसर्च का यह आयोजन अत्यन्त ही सराहनीय है
बड़ा कार्य नि:स्वार्थ भाव से सेवा करना ही है
नेक कार्य कोई नहीं है
इशारा करते हुए कहा कि, वर्तमान समय में हर कोई किसी-न-किसी बीमारी से पीड़ित है
गंभीर न बने इसके लिए हमें पहले से ही चेकअप कराकर उसका इलाज करवा लेना चाहिए तथा डाक्टर के बताये हुए निर्देशों का पालन करना चाहिए। शिविर में ब्लडप्रेशर, ब्लडग्रुप, ब्लड शुगर औ धत
बीमारियों का परीक्षण कर स्वस्थ रहने के तरीके औ
खान-पान से सम्बन्धित परामर्श दिया गया। स्वच्छता से होने वाले लाभ औ
में लोगों को अवगत कराया गया।

शिविर का संचालन सीमा वर्मा, रणविजय सिंह, विपुल सिंह तथा अनुज सिंह के दिशानिर्देशों द्वारा किया गया। शिविर में रुदौ
ग्रामपंचायत अधिकारी, समस्त कर्मचारीगण तथा क्षेत्र के संभ्रान्त व्यक्ति, ग्राम-प्रधान तथा सै

संस्थान के प्रबन्ध निदेशक श्री मिश्रीलाल वर्मा, चेयरमै
वर्मा तथा सचिव डॉ. अवधेश वर्मा ने शिविर के कार्यों की सराहना करते हुए जनहित में औ
करने की शुभकामनाएँ भी प्रेषित कीं।

Event report- Free First Aid/ Health Check-up Camp 28 Oct 2017

भवदीय ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स के तत्वावधान में भवदीय इन्स्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज एण्ड रिसर्च के बी.फार्म. तथा डी. फार्म. के छात्र-छात्राओं द्वारा संस्थान के डायरेक्टर डॉ. संजय कुशवाहा के नेतृत्व में चौ
नि:शुल्क प्राथमिक उपचार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का शुभारम्भ डा. चितरंजन वर्मा, वरिष्ठ शिशु रोग विशेषज्ञ, यशलोक हॉस्पिटल फै
किया गया। शिविर का उद्घाटन करते हुए डा. चितरंजन वर्मा ने कहा कि, भवदीय इन्स्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल सांइसेज एण्ड रिसर्च का यह आयोजन अत्यन्त ही सराहनीय है
नि:स्वार्थ भाव से सेवा करना ही है
कार्य कोई नहीं है
इशारा करते हुए कहा कि, वर्तमान समय में हर कोई किसी-न-किसी बीमारी से पीड़ित है
बीमारी गंभीर न बने इसके लिए हमें पहले से ही चेकअप कराकर उसका इलाज करवा लेना चाहिए तथा डाक्टर के बताये हुए निर्देशों का पालन करना चाहिए। शिविर में परिक्रमार्थियों को प्राथमिक उपचार की सारी सुविधाएँ प्रदान करते हुए सामान्य दर्द निवारक दवाओं का भी वितरण नि:शुल्क किया गया, जिसमें विभिन्न जनपदों तथा दूर-दराज से आये हुए हजारों की संख्या में परिक्रमार्थियों ने प्राथमिक उपचार का लाभ उठाया। स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत संस्था के छात्र-छात्राओं तथा कर्मचारियों द्वारा परिक्रमा मार्ग में सफाई अभियान चलाया गया तथा स्वच्छता से होने वाले लाभ औ
से होने वाली बीमारियों के बारे में परिक्रमार्थियों को अवगत कराया गया।

शिविर का संचालन सीमा वर्मा, रणविजय सिंह, विपुल सिंह, रुकुमकेश वर्मा तथा अनुज सिंह के दिशानिर्देशों में किया गया।

संस्थान के प्रबन्ध निदेशक श्री मिश्रीलाल वर्मा, चेयरमै
वर्मा तथा सचिव डॉ. अवधेश वर्मा ने शिविर एवं स्वच्छता अभियान के कार्यों की सराहना करते हुए जनहित में औ
ऐसे कार्यों को करने की शुभकामनाएँ भी प्रेषित कीं।

❑

Department of Management & Computer Science

Annual Report 2017-18

–Dr. Shishir Pandey

Assistant Director- BIBM

As the Assistant Director of BIBM I would like to take great pleasure to present the annual report for the academic session 2017-2018. This session marked with many events and success stories. This academic session has also steady improvement in all areas including academics, extracurricular activities and placement.

Bhavdiya Group of Institutions located at Sewar, Sohawal, Faizabad, was established in 2010 and first session started in 2011-12 with the following courses **M.B.A., B.B.A. and B.C.A.** with the vision of providing professional education in rural area and the people belongs to each part of the society.

Master of Business Administration

MBA is running under **Bhavdiya Institute of Business Management (BIBM)** affiliated to **A.P.J. Abdul Kalam Technical University, Lucknow (AKTU) CODE: 743** and providing all Specializations offered by the University i.e. Finance, Marketing, Human Resources, Information Technology and International Business. The course is approved by **All India Council of Technical Education (AICTE)**. The institute is having the Intake of 60 seats. Bhavdiya Institute of Business Management is one of the leading institutes of Faizabad and nearby Districts. Any graduate, with 50% marks (for SC/ST 45%) can get admission in MBA. We provide free education to SC/ST students. Institute has Teaching and Non-teaching staff as per norms and having a well equipped computer lab and Library with sufficient number of books and journals.

Training and Placement: A separate Training and Placement cell is being managed by **Mr. Punit Stephen (TPO**) under supervision of **Dr. Shishir Pandey (Assistant Director BIBM).**

The Training and Placement cell works for grooming the quality of our students and organized various programs throughout the year. It includes personality development program, mock interview and industrial visits. The training placement cell is very useful for the students as it helps them to enhance their knowledge and avail job opportunity. Our students have been placed at higher position in different companies.

Highlights of some of our placements

Azad kumar	Quality check	Sky sacper	Delhi
Atul Kumar Pandey	Production Supervisor	KM Sugar Mill Faizabad	Faizabad
Sujeet Kumar Soni	Accountant	One Point Reality Pvt. Ltd	Delhi
Bharat Kumar	Operation Executive	Sonata Finance	Bareilly
Ravi Kumar Soni	Finance Executive	L&T	Ahmedabad
Anurag Ojha	Sales Executive	S.R. Pharma	Basti
Manoj Kumar Pandey	Assistant Manager	S.R. India Pvt. Ltd.	Noida
Vijay Kumar Singh	Assistant Manager	G.S.K. Consumer Health Care	Delhi

We always encourage and recognize our topper students for their success.

The rank holders of MBA in this session 2015-2017

- **Uttam Soni** secured 1st rank with 75.50% marks with honours.
- **Mandvi Pandey** secured 2nd rank with 72.44% marks.
- **Sujeet kumar Soni** secured 3rd rank with 71.40% marks.

Bachelor of Business Administration (BBA) and **Bachelor of Computer Application (BCA)** are under graduation degree courses running in **Bhavdiya Educational Institute** (RMLAU CODE-275). The institute is affiliated to Dr. Ram Manohar Lohia Awadh University, Faizabad, and U.P. Both the courses are approved by University Grant Commission, New Delhi.

Bachelor of Business Administration

BBA is a specialized course for Business Management in which student of intermediate having 45% marks (for SC/ST 40%) from any discipline can get admission. Most of our students prefer MBA course after BBA, though we provide them the job opportunities. Some of our students are working in renowned companies.

The rank holders of BBA in the session 2014-2017:

- **Ganshyam** secured 1st rank with 62.45% marks.
- **Harikesh kumar** secured 2nd rank with 61.83% marks.

Bachelor of Computer Application

To make aware with computer and software technology, we provide **BCA** course. We produce software developers through BCA and most of our students are working in different Software companies. A separate training session is also provided to the students to improve and aware with new technologies of software development. In BCA, student of intermediate with Mathematics having 45% marks (for SC/ST 40%) can get admission.

The rank holders of BCA in the session 2014-2017:

- **Somnath Gupta** secured 1st rank with 75.63% marks.
- **Santosh kumar** secured 2nd rank with 74.55% marks.
- **Madhu verma** secured 3rd rank with 73.61% marks.

Extra Curricular Events:

Apart from curriculum, we organize different activities to develop the skills of our students. Through different way they are educated and enhanced knowledge. Followings are the activities held during the last session:

1. On 19 May 2017, Pandit Deen Dayal Upadhyaya Janam Shatabdi program was celebrated. In this event Dr. Shishir Pandey delivered a motivational lecture for encouraging the student. The speech competition also organized for student in which all the students participated and secured position.
2. On 27 July 2017, Youth Day was celebrated by JCI faizbad. Mr.Punit Agrawal (trainer of JCI) delivered a motivational speech for all the students.
3. On 4 Aug 2017, ppt presentation was held in seminar hall. All the students presented their topic very effectively. Their topic was related with different functional areas of organization.
4. On 15 Aug 2017, Independence Day was celebrated by the student of whole campus. They were participated in program and celebrate freedom
5. On 05 Sept 2017, Teachers Day was celebrated by the students. In this event student paid regards to their teachers and introduce the organization to the fresher.
6. On 8 Sept 2017, World Literacy Day was celebrated in seminar hall.Dr. Shishir Pandey delivered a speech on how to make an effective group discussion and their do's and don'ts while participated in group discussion or debate .A debate competition also held between two groups of students. The topic was "quality of product- India vs china". Both groups performed very well. Rajneesh and group won the competition.
7. On 14 Sept 2017, a presentation competition was organized. In this

competition five groups were participated in this competition. There was time limit for 15min for each group. All groups presented their topics effectively in given time limitation and secured position.

8. On 22 Oct 2017, Deepawali exhibition organized in department. Students decorated the building with their Rangoli designs and sold the deepawali products such as diyas, candles, wall hangings etc. made by them.
9. On 4 Nov 2017, Powergrid Corporation Ltd. organized vigilance awareness week. A speech competition also conducted for the students. In this competition students participated and secured position in competition.
10. On 14 Nov 2017, a fresher's party was organized by senior students to welcome their juniors in the presence of Capt. R.N. Verma, administrative officer, Dr.Shishir pandey, assistant director and all faculty members. Students showed their talent by singing, dancing, poetry etc. At the end party Miss. fresher and Mr. Fresher were declared on the basis of the voting.
11. On 15 Nov 2017, a management quiz competition was conducted in seminar hall. It has two rounds and in this competition four teams participated.
12. On 30 Nov 17, a presentation competition was held in seminar. The topic of the Presentation was body language and its features, merits and demerits. The time limit of presentation was 10 minutes for each student.
13. On 04 Dec 2017, a guest lecture organized in seminar hall. The speaker was Dr.Hemant Yadav, assistant professor at Dr,R.M.L.A.UNIVERSITY FAIZABAD delivered a lecture" on success mantra of corporate sector". He delivered speech for motivating students to learn new things of corporate field.
14. On 06 Dec 2017, an industrial visit organized for students at PARLEY DAIRY Ayoydhya .The visit was conducted by Mr. Punit Stephen (TPO) and visiting coordinator Mr. Dhananjay Pandey. By this visit students got knowledge about how the milk products produce, collect, store, cool and pack.
15. On 07 Dec 2017, Mahila Suraksha Saptah held in BGI CAMPUS. The chief guest was Mr. Sanjay, S.P.R.A and Mr. Arvind chaurasia, C.O.FAIZBAD. This event was specially organized for girls for awareness of safety and rights. The management and all the faculty members of BGI were present in this event.
16. On 08 Dec 2017, a Campus interview was held for the placement of final year students of BBA, BCA and MBA. It was RBS Technology Varanasi branch and their head office at Noida.
17. On 16 Dec 2017, ppt presentation on industrial visit at PARAG DAIRY was held in seminar hall. It was the group presentation of all the BCA, BBA and MBA students.
18. On 21 Dec 2017, a writing competition organized for all the students in seminar hall. Some words and paragraph were dictated by Supriya Singh (bba coordinator).A topic also given for writing a small essay. All students participated in this competition and secured position.

Summary :

We try to give more and more advancement to our students for their development. Various activities and events are being done in this session to enhance the potential of our students. Special classes for English spoken and personality development are being provided to our students for improving their personality. Various Guest/Invited Lectures held in this session by which student got knowledge from speaker's experiences.

On the behalf of the staffs and students I thank to the almighty for showering his blessings on us throughout. I thank the Management Committee for the continuous support and their keen interest in the day to day activities. I am also thankful to the faculty members and supporting staff for their co-operation and I seek their continued support in the future.

❑

वार्षिक रिपोर्ट : शिक्षक-शिक्षा विभाग

—डॉ. करुणेश कुमार तिवारी
प्राचार्य

शिक्षक-शिक्षा विभाग की शुरुआत सन् 2013 में बी. टी. सी. कोर्स से भवदीय हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में 50 सीटों से हुई थी औ
विभाग में बी. एड्. एवं डी. एल. एड्. पूर्व नाम (बी. टी. सी.) मिलाकर कुल 650 प्रशिक्षु प्रशिक्षणरत है
हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट सत्र (2015-16) में 50 तथा सत्र (2017-19) 100 प्रशिक्षु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है
में 50 तथा सत्र (2017-19) में 150 सीटें आवंटित है

12 अक्टूबर, 2017 से भवदीय एजूकेशनल इंस्टीट्यूट में भी डी. एल. एड्. की नियमित कक्षाएँ प्रारम्भ हो गयी है
प्रवेश हेतु मान्यता मिली है
अनुमोदन राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् जयपुर तथा सम्बद्धता एस. सी. ई. आर. टी. इलाहाबाद से प्राप्त है

भवदीय एजूकेशनल इंस्टीट्यूट में बी. एड्. का कोर्स संचालित है
अध्यापक शिक्षा परिषद् जयपुर एवं सम्बद्धता डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय से प्राप्त है

संस्थान के बी. एड्. एवं बी. टी. सी. विभाग का विगत वर्षों का शै
भवदीय हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट सत्र (2014-16) के प्रगति बाजपेयी ने संस्थान में सर्वाधिक अंक प्राप्त किया। इसी तरह बी. एड्. सत्र (2015-17) की स्वाती यादव को सर्वोच्च अंक मिला है
हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट औ
एजूकेशनल इंस्टीट्यूट के प्रशिक्षुओं ने उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (U.P. TET) औ
परीक्षा (CTET) जै
का नाम रोशन किया है
महानिदेशक अध्यक्ष प्रबन्ध निदेशक जी रहे है
निर्देशानुसार प्रशिक्षुओं को TET की अतिरिक्त कक्षाएँ परीक्षा पूर्व संचालित करने की व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है
परामर्श हेतु विशेष व्यवस्था की गयी है में
निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा की भी व्यवस्था है

संस्थान में प्रशिक्षुओं को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत रोवर्स-रेन्जर्स, रेडक्रास, रंगोली एवं मेंहदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है
प्रशिक्षुगण बढ़-चढ़कर हिस्सा लिये। 20 दिसम्बर, 2017 का विभाग में एक हस्तनिर्मित चित्रकला एवं ग्रीटिंग कार्ड प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें प्रशिक्षुओं ने अपनी मौ
का दिल जीत लिया। पावर ग्रिड कार्पोरेशन सोहावल द्वारा आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में श्री साईंराम इंस्टीट्यूट की प्रशिक्षु ज्योति तिवारी ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर विभाग को गौ

मार्च, 2017 के प्रथम सप्ताह में बी. एड्. एवं बी. टी. सी. के प्रशिक्षुओं का एक दल डॉ० दयाशंकर वर्मा के नेतृत्व में शै
जिसमें प्रशिक्षुओं ने देहरादून, ऋषिकेश, मसूरी का प्रसिद्ध कै
की पै
भरपूर आनन्द लिया। 12 जनवरी, 2018 को राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर विभाग में व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक 'स्वामी विवेकानन्द जी के शै
था, जिसमें सभी प्रशिक्षणार्थियों ने बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया। विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी 25 जनवरी, 2018 को राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य रूप से मतदाता जागरूकता रै
तथा 'मानव शृंखला बनाकर मतदाता दिवस मनाया गया।

❑

वार्षिक रिपोर्ट : क्रीड़ा समारोह

—डॉ. दयाशंकर वर्मा
क्रीड़ा प्रभारी

संस्थान में 21 व 22 जनवरी 2018 को दो दिवसीय 'वार्षिक खेल समारोह' का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। संस्थान के बी.टी.सी. खेल मै
आयोजन के अन्तर्गत क्रिकेट, वॉलीबाल, खो-खो, म्यूजिकल चेयर, चक्का फेंक, गोला फेंक, दौ
महिला/पुरुष वर्ग, रिलेरेस, कबड्डी, कै
विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। क्रीड़ा प्रभारी डॉ. दयाशंकर वर्मा के निर्देशन में इस खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन क्षेत्रीय विधायक श्रीमती शोभा सिंह जी ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर तथा गुब्बारे उड़ाकर किया।

खेल समारोह के प्रथम दिवस में क्रिकेट का फाइनल मै
खेला गया जिसमें बीटीसी की टीम विजयी रही, बीटीसी टीम में सचिन प्रताप सिंह (कप्तान), सत्येन्द्र पासवान, अनूप यादव, नीरज तिवारी, कपिल, राहुल, अनुराग आदि शामिल थे। गोल फेंक में बीईआई के छात्र रोहित सिंह को प्रथम स्थान, सूर्य प्रकाश (फार्मेसी) को द्वितीय एवं मार्केण्डय सिंह (बीईआई) को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ, चक्का फेंक में सत्येन्द्र पासवान (बीटीसी), रोहित सिंह (बीईआई) व मोहित यादव (फार्मेसी) को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। 100 मी. दौ
प्रथम स्थान औ
खातून फार्मेसी तृतीय स्थान पर रहीं। 400 मी. की दौ
में अनीश वर्मा (बीटीसी) प्रथम स्थान बविता वर्मा द्वितीय स्थान एवं प्रियंका यादव (बीईआई) को तृतीय स्थान हासिल हुआ। इसी क्रम में 800 मी. में अर्चना प्रथम, साधना द्वितीय औ
200 मी. की दौ
(फार्मेसी) प्रथम स्थान, नीरज तिवारी (बीटीसी) द्वितीय स्थान एवं धर्मेन्द्र पाठक (बीटीसी) को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। म्युजिकल चेयर प्रतियोगिता में (बीटीसी) की अंकिता पटेल विजेता रही।

खो-खो प्रतियोगिता का मै
यह मै
जिसमें बीटीसी टीम विजयी रही औ
उपविजेता रहीं

सभी प्रतियोगिताओं में भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के विभिन्न विभागों के सभी छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पुरस्कार एवं समापन समारोह कें मुख्य अतिथि श्री संजय कुमार (पुलिस अधीक्षक ग्रामीण) एवं विशिष्ट अतिथि श्री अरविन्द चौ
सदर, फै
पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्द्धन किया। मुख्य अतिथि महोदय ने वर्तमान में शिक्षा के साथ-साथ खेल के महत्त्व को समझाते हुए छात्रों को खेलों में भी कै
बनाने की प्रेरणा दी। संस्थान के चेयरमै
जी ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। संस्थान के सचिव डॉ. अवधेश कुमार वर्मा जी ने विशिष्ट अतिथि को स्मृतिचिह्न देकर सम्मानित किया। संस्थान के महानिदेशक प्रो.मन्शाराम वर्मा ने खेलकूद के स्तर को बढ़ाने पर विशेष बल दिया। संस्थान के सचिव जी ने आयोजित दो दिवसीय खेल समारोह में समस्त प्राचार्यों, प्राध्यापकों, तृतीय व चतुर्थ श्रेणी के

कर्मचारियों के निष्ठापूर्वक सहयोग पर आभार व्यक्त किया। क्रीड़ा प्रभारी डॉ. दयाशंकर वर्मा जी ने संयोजक के रूप में सभी का आभार ज्ञापित करते हुए विशेषकर अतुल श्रीवास्तव (प्रशासनिक मै

वर्मा (प्रशासनिक अधिकारी), सहायक निदेशक डॉ. शिशिर पाण्डेय (बीआईबीएम) प्राचार्य डॉ. करुणेश कुमार तिवारी (बीईआई), डॉ.संजय कुशवाहा (डायरेक्टर, फार्मेसी) के प्रति आभार व्यक्त किया तथा इस खेल समारोह को कुशलतापूर्वक सम्पन्न कराने तथा अनुमति देने के लिए संस्थान के प्रबंधतंत्र को विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया।

❑

शिक्षा में अनुशासन

—कै

प्रशासनिक अधिकारी

ज्यादातर शिक्षक विद्यालय में अनुशासन के सही अर्थों से अनभिज्ञ होते है

सुना जा सकता है

के बच्चे पढ़ेंगे कै

से क्या होता है

होता है

समाज की कल्पना करना दुष्कर है

के निर्माण औ

होता है

में गुंथे होने से संभव हो पाता है

होने वाली शै

निर्धारित नियमों के तोड़ने पर शिक्षकों द्वारा जो कार्यवाही की जाती है discipline) कहते है

अनुशासन शब्द अंग्रेजी के 'डिसिप्लिन' शब्द का पर्याय है

अर्थ है

जाती है

बना है

आज्ञानुसरण नियंत्रण। शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से अनुशासन की प्रक्रिया में नियमों का पालन, नियंत्रण आज्ञाकारिता आदि अर्थ निहित है

की प्रक्रिया रै

वह पीछे की ओर लौ

ऐसे में अगर अनुशासन को सरल रेखा खींच कर उसका स्वरूप निर्धारित करने का प्रयास किया जाए तो उसमें दुर्घटना की संभावनाएँ है

न तो परिवार चल सकता है

राष्ट्र।' इसकी व्यापकता का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है

छोटी इकाई परिवार से लेकर 'विश्व-समाज' की अवधारणा तक अपने विभिन्न अर्थों के साथ किसी न किसी रूप में जुड़ा होता है

अनुशासन का अभिप्राय एक ही होता है

कि क्या अनुशासन का स्वरूप भी सभी जगह एक-सा होता है

स्तर पर इसका स्वरूप भी अलग-अलग होगा।

'किसी भी राष्ट्र का परिचय उसके अनुशासनबद्ध नागरिकों से मिल जाता है

लिए एक सेना भी होती है

होता है

है

मानदंड होते है

सकता। पर अनुशासन का सबसे सरलतम रूप समाज

में दिखाई देता है
किसी टकराव के रहते है
होते है
किसी भी समाज की रीढ़ होती है
को मिला कर समाज बनता है
हर क्षेत्र में विविधता होने पर भी 'विश्व-मानव' औ
'विश्व-समाज' की परिकल्पना की जाती है
मूल अनुशासन में निहित है
अनुशासन की सीमाएँ भी निर्धारित होती है

जबकि शिक्षा का उद्देश्य समाज को बेहतर नागरिक
प्रदान करना होता है
भागीदार बनें। अनुशासन का लक्ष्य शिक्षा में नै
का समर्थन करना है
पाठशाला परिवार होता है
निर्माण में निर्णायक भूमिका उसके विद्यालय निभाते है
ऐसे में यह प्रश्न औ
विद्यालयों में अनुशासन का कौ
चाहिए। इससे विद्यार्थियों में जहाँ शील, संयम, नम्रता
औ
विद्रोह की भावना के भी जन्म लेने के आसार बराबर
बने रहते है
सै
ही खोजते है
विद्यालय होते है
औ
विद्यार्थियों की कुछ भी सीखने में मदद कर सकते है

ज्यादातर शिक्षक विद्यालय में अनुशासन के सही
अर्थों से अनभिज्ञ होते है
है
होता है
इस कई ऐसे मौ
के रूप में खुद से नियमों का पालन करता है
चल कर समाज के एक नागरिक के रूप में भी जारी
रहता है
का सबसे उपयुक्त माध्यम है
अनुशासन कहा है
अनुशासन औ
तक उसे दूसरे से वै
एक प्राचीन कहानी है
मिठाई खाने की शिकायत लेकर आई माँ को गुरुनानक
सात दिन बाद आने का समय देते है
तक खुद मीठा खाना छोड़ कर ही वे बालक को मीठे के
अवगुणों के बारे में समझाते है

आत्मप्रेरित अनुशासन ही मानवीय मूल्यों के लिए
जगह बना पाता है
'सामुदायिक कार्यों में भागीदारी' औ
व्यवहार' को महज खानापूर्ति के रूप में किया जाता था,
जो अनुशासन विषयक पूर्णांकों के संबंधित है
कि उसके अंकों का प्राप्तांकों से कोई संबंध नहीं था।
पर अब जबकि शिक्षा व्यवस्था में अपेक्षित बदलाव के
तहत 'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन' जै
का समावेश हो चुका है
उसका शिक्षक ही होगा। ऐसे में शिक्षकों की जिम्मेदारी
औ
विद्यार्थियों एवं शिक्षकों से) औ
वाले खानों (कॉलम) को गंभीरता से लें। फिर हो सकता
है
में विद्यार्थियों तक प्रेषित करने में सफल हो पाएँ। स्वतंत्रता
तभी तक सफलता प्रदान करती है
सुनियंत्रित हो। अनुशासन स्वतंत्रता को सार्थकता प्रदान
करता है
अनुशासन स्थापित करना समझा जाता है

❑

प्रबन्धन-अनुभाग

Prospects of Accounting Education in Business Studies

–Dr. Shishir Pandey

Associate Professor- BIBM

The Accounting education in India is provided as part of Management stream in graduation and post graduation level of different educational institutions. But, in the changing scenario particularly in globalization and liberalization era the business and industry have to face many challenges like stiff competitions, technological upgradation, cost reduction, improvement in quality, customer satisfaction and outsourcing technique. So, till today the accounting education in India has not been upgraded to that level in order to face those challenges. Rather, it is confined with only a feedback system to the professional institutions like ICAI, ICWA and ICSI. Hence, the purpose of accounting education has not been fulfilled to meet the requirements of present business and industry.

The entrepreneurs and the business man of our country follow accounting procedures in order to meet different government and legal formalities. So, they have lot of expectations from the accounting professionals which should enable them in order to arrive at managerial decision making process. In this context, the educational institutions of country like India have realized that there is an urgent need to update the accounting curriculum in order to the more appropriate for the requirement of the modern business enterprise. India being a developing country is looking for opting globalization and liberalization policy in order to uplift economic development. So, the accounting education should be tune up to that extent in order to face the challenges of liberalization for industry and business. Computerized accounts and introduction of E-Commerce has changed the role of management education as well as accounting procedures to a great extent.

Hence, in future the accounting education curriculum should be updated in order to face the challenges of information technology. Otherwise the accounting education in India will be remaining in the same traditional level since its inception from pre-independence era. Therefore, it is the right time for the researcher of accounting education to come forward and think over regarding the up-gradation of accounting education to meet the future improved dimensions of business and industry of India.

There is a gap between the passing out students of educational institutions and professional institutions. The quality of professionals in accounting education is more superior than the quality of students

from educational institutions relating to Accounting education. However, the Accounting education is only restricted with the requirements of lower level and middle level accountants of business enterprise. Keeping in view, in the emerging challenges of business and industry, there is a demand to restructure the course curriculum of accounting education in India. At the same time, less scope has been provided for research and development activities of Accounting education in Indian Universities. Financial Management, Banking, Taxation, International finance, Corporate Accounts are some of the specialized course of Accounting education provided by different Universities in order to fulfill the demand of traditional business entrepreneurs. Lack of coordination between industry and academic professionals suffers a lot to upgrade Accounting curriculum to meet the requirement of changing situations in emerging dimension. There should be a scope for industry-institution interface for Accounting education so that the professional accountants as well as the students of Accounting education can compete with the liberalization and globalization scenario of business and industry. Then only the purpose of Accounting education can be evaluated properly in India.

By analyzing the accounting curriculum of some of the Universities which provide management education in India, it has been observed that almost all the educational institutions taught Accountancy as a single course in the main stream. Whereas other courses like Management, Law, Taxation, Banking, Insurance, Economics, Organization Behavior and some related courses are also imparted. There is no specialization in Accounting course curriculum which is being offered by these educational institutions both in graduation and post graduation level. Only some of the professional institutions offered specialized Accounting course in their professional level.

So far as teaching methodology is concerned accounting education is restricted only class room teaching as well as solving of numerical problems. This practice lacks up-gradation of technology in effective teaching of Accounting education. This traditional system of teaching can be replaced with case studies, market surveys, group assignments, audio video techniques, teaching aids through projects, computerized accounting procedures so that the students of accounting education can be well versed with professional accounting system. It has been observed that almost all the educational institutions of India do not provide scope of Accounting research to their students. As a result, new innovation in the field of Accounting is considered to be a difficult aspect for Accounting professionals. The course curriculum in Accounting education should be restructured so that research and development activities in the field of Accounting will be a major potential.

So far as professional institutions are concerned Accounting education is imparted to the professionals in foundation, intermediate and final stage. It has been observed that some of the accounting courses which are offered in foundation level are not necessarily imparted in either intermediate or final level. Similarly, the accounting courses which are offered in intermediate and final level are not offered in foundation level. This indicates the accounting curriculum is not a continuous process for the professionals in each level of their professional career. On the other hand, software based accounting system is not a course curriculum for the professionals in professional institutions. Hence, it is desirable to look into the matter and find out appropriate solutions in order to make our professionals expert in software and other related area.

It has been analyzed that none of the professional institutions are giving emphasis on Accounting education in the field of research and development. A serious thinking should be made how to promote Accounting education in the field of research by the professional institutions in India. Accounting education is the core stream in business and industry. So, all the educational institutions must have to provide specialized Accounting education in both under graduation and graduation level.

The professional institutions though impart Accounting education should have to follow a uniform course curriculum so that it will help the professionals to face the emerging changing scenario. The Accounting specialists from different Universities should be consulted in order to upgrade the Accounting education in different educational institution prior to commencement of course curriculum so that a uniform course curriculum can be prevailed in Accounting education of India.

The restructuring of Accounting education is a priority so that it can be utilized by the Accounting professionals from the primary level in order to compete in globalized scenario. Some specialization courses should be introduced in Accounting education in order to face the emerging challenges of business and industry in this liberalization era. There should be an industry and institution interface in order to upgrade Accounting education in India so that the students of Accounting education can be more professional in character which can create employability. The Accounting education course curriculum should be restructured in such a manner so that a student of sr. secondary school can be eligible to take any type of professional course in Accounting line in order to be efficient in business and industry. More emphasis should be given in research and development activity in Accounting education both in educational and professional institutions.

❑

Payment Bank : New banking Concept for Financial Inclusion

– Er. Abhishek Bhatnagar
Assistant Professor- BIBM

Definition :

A payments bank is like any other bank, but operating on a smaller scale without involving any credit risk. In simple words, it can carry out most banking operations but can't advance loans.

It can take deposits upto ₹ 1 lakh per account and it can issue debit cards but not credit cards. Commercial banks in India like State Bank of India or ICICI Bank, do not have any such restrictions.

Description :

In September 2013, the Reserve Bank of India constituted a committee headed by Dr Nachiket Mor to study 'Comprehensive financial services for small businesses and low income households'. The objective of the committee was to propose measures for achieving financial inclusion and increased access to financial services.

The committee submitted its report to RBI in January 2014. One of the key suggestions of the committee was to introduce specialized banks or 'payments bank' to cater to the lower income groups and small businesses so that by January 1, 2016 each Indian resident can have a global bank account.

Objective :

The main objective is to further financial inclusion by providing small savings accounts and payments/remittance services to migrant labour workforce, low income households, small businesses and other unorganized sector entities.

Minimum capital requirement :

RBI has mandated the minimum paid-up equity capital for payments bank at ₹ 100 crore.

System	*Access Deposit*	*Advance Loan*	*Make Payment*
Commercial banks like SBI PNB	YES	YES	YES
Payments network operators (Master card, VISA)	NO	NO	YES
Payments bank	YES	NO	YES

Eligibility :

RBI permits non-bank Prepaid Payment Instrument (PPI) issuers, individuals and professionals, non-banking finance companies (NBFCs), corporate business correspondents (BCs), mobile telephone companies, super market chains, companies, real sector cooperatives that are owned and controlled by residents and public sector entities to apply for a payments bank license. Setting up of a joint venture by a promoter with an existing commercial bank is also allowed.

Payments banks have commenced operations :

Out of the 11 entities that received in-principle license for opening payments bank, 7 entities received the final license. Four payments banks have started operations — Airtel Payments Bank, India Post Payments Bank, Paytm Payments Bank and Fino Payments Bank.

❑

Special issue on operations research in Healthcare

—Dhananjay Singh

Assistant Professor- BIBM

Operations research is the most important part in mathematics as well as various fields i.e. healthcare, military Some of the fields that are included in Management Science are: mining Decision analysis, Engineering, forecasting, Game Theory, industrial engineering, Logistics, mathematical modeling.

"The OR is better for upcoming generation". which can define as:

An operations researcher follows a scientific approach to suggest methods of improving real life problems such as the above, and uses techniques that typically overlap with mathematics, statics and computer science calculate best or optimal solutions. OR it a powerful tool in hands of decision-makers and manager, since it allows them to make high-quality decision that are scientifically justified. Such decisions may be found in, for example, factories, business, banks mining, the construction industry, agriculture, and ecology

And Consulting environment.

Operations Research for Health care (ORHC) focuses of the development and uses of operations research in health and health care.

ORHC encourages contribution related to typical problem areas of healthcare such as logistics, finance, and management, accounting, policy, logistics and architecture as well as hospitals, practices, and care (including home care and long term care).

Demographic change and increasing health experiment in the world make the

health care delivery research a hot topic. Hospitals in the world are becoming larger and larger to take advantage of the scale economy but also become more and more complex to design and to operate. Ageing population makes chronic disease increasingly important and leads to the need of bitter disease prevention, diagnostic, treatment planning and proactive cares. Patients are more and more concerned by Healthcare safety and traceability. Healthcare system is also changing and new health services such as the home health care and telemedicine's are growing. Most hospitals used to empiric management are not prepared for and innovative system engineering approaches are needed.

Recent development of Advanced medical Technologies makes the system engineering approach possible. The increasing ability of healthcare it relevant data makes possible better disease prevention, diagnostic and healthcare system operations. Automations Technologies such as robotics and ICT technologies are making healthcare delivery more efficient and safer. Innovative operations research(OR) technique have been developed for a wide range of healthcare application such as operating room planning, emergency department staffing, breast cancer screening, radiotherapy treatment planning, home healthcare planning, long-term care planning and scheduling. Facing these challenges, the very first attempt of the hospitals is to

Apply modern management techniques from other industries. This leads to numerous hospital projects on learn management, quality control, inventory control, etc.

Most of these projects had Limited impact due to their strong dependence on experiences of Consulting firms gained from other industries and hardly took into specific feature of. Hospitals realize more and more the need of original research taking into specific features of healthcare industry.

Various scientific communicated quickly in bread major healthcare challenges from different perspectives Emerging hot topics of the robotics & automation community included lab automation, lab-on-chip surgical in navigation, nanoscale drug delivery, medical imaging analysis,e.t.c. Other communities such as (OR) and industrial engineering (IE) have very active in healthcare Management Research. Major (OR) and IE journals publish more and more papers in healthcare and OR/IE conference often have very popular sessions in healthcare such as surgery planning/ scheduling, nurse roistering , emergency department analysis, ambulance locations dispatching and so on. Motivated by the above observations, **IJPR** responded to the increasing submissions in healthcare and to clearly define its scope.

For this purpose, the goal of this IJPR special issue is to provide a comprehensive view of health service improvement by system engineering approaches such as OR,IE and control theories.

❑

Knowledge Management

–Dhananjay Pandey
Assistant Professor- BIBM

Knowledge Management (KM) is a discipline that improves the ability of organisations to solve problems better, adapt, evolve to meet changing business requirements, and survive disruptive changes such as staff turnover.

Knowledge Management recognises that organisations are a complex system made up of both the people that work for the organisation, and the processes, procedures and information systems that drive our actions.

The revolution in communications over the past 50 years (email, internet, telephone and fax) now allows people to talk directly to each other without the use of intermediaries such as managers or team leaders. This allows organisations to be more efficient by bringing together needed expertise and knowledge on demand.

However, with this new approach, knowledge gained and lessons learned are not always shared across the organisation. In other words, some people may know the solution to a particular problem, but the organisation as a whole may not be aware. This can lead to loss of critical knowledge when staff leave, and for inefficient practices to remain despite better solutions being available.

Modern organisations need to build a new culture that promotes knowledge sharing and constant learning while preserving and recording appropriate information. This is essential in order for corporate knowledge to be effectively retained and enhanced.

The key objective of Knowledge Management is to **enhance knowledge processing**. Organisations will have realised this objective when they:

- correctly identify problems that need solving as they occur
- have robust information location and retrieval channels to enhance individual decision making
- embrace effective knowledge creation processes
- ensure that created knowledge is shared with and integrated across the whole of the organisation

Methods that can help to achieve these goals include:

- making better use of collaboration and communication tools
- creating and promoting internal communities of practice
- fostering the identity of virtual teams
- using KM techniques such as Before Action Reviews (BAR), After Actions Reviews (AAR), pre-mortems, and retrospects during change activities
- encouraging the use of a common language (eg corporate glossary, classification and/or taxonomies)

Benefits of implementing effective Knowledge Management include:

- fully and accurately informed employees, clients, and stakeholders
- improved team effectiveness and delivery of outcomes
- an organisational culture devoted to continuous improvement
- an organisation that is resilient and adaptable in the face of change

❑

How to Save Time and Scale Your Marketing Content

—Shivendra Pratap Singh

Assistant Professor- BIBM

"Marketing is root: Social need and products"

Lack of time is the biggest reason for lack of content, yet there's more and more emphasis on the importance of scaling copy to reach more customers. If everyone is so short on time, how can marketers manage the growing of content? I have noticed critical steps that many businesses skip to save time, but these save and money in the long run :

Develop a Content Marketing Strategy

The initial step to success is devising a solid strategy aligned with your business goals. This ensures all departments are on the same page and prevents last minute projects halting daily production. Beginning work without an approved plan is the best way to limit creativity and increase staff burnout. Every strategy should align consumer needs with commercial goals and production standards. Your content marketing tactics align advertising effort with product lunches, major company events, and holidays, Consider your busy season, too.

Create a Content Marketing Plan

Once you've created a solid strategy and key stockholders are invested, develop your content marketing plan. This is where you can establish specific projects to work cohesively and strengthen the same policy. There may be an idea for each stage of the customer lifecycle or projects that address different buyer personalities.

Develop a Production process

Now that a strategy and content plan has been shared with your company. You'll benefit from a clear production process. This will ensure you can maintain your projects through development delivery, and metric tracking. A solid process will have boundaries rather than roadblocks to keep teams on track without stifling creativity. This step should clarify who's responsible for a task and who's overseeing its completion according to enterprise standards and plan goals. If there are any expertise gaps, additional consultants can be brought on board, or parts of the project can be outsourced.

Expand specialization

Having experts writers who are on their source materials will lead to improved quality

and efficiency. Assign similar content to the same writer to develop his or her knowledge on a specific topic. When time allows, ask writers to create additional material on a relevant subject of interest. This will expand the copy your company shares but will also grow your writers' understanding of a specific issue and increase staff motivation.

Businesses with small writing teams can invest in education training and other resources to increase their knowledge base.Hiring an agency or freelance writer to create additional content outside the team's comfort zone is another option. Outsourcing can be an effective method for many enterprises due to the seasonal nature of most industries. A busy time demands additional writers to meet growing content needs, but staff writers will usually have unproductive periods during slow seasons. Thus, many small operations outsource only during peak moments.

Schedule Regular Editorial Reviews

Hold a meeting with the organization's production managers to keep work from forming and add different perspectives to production challenges. This allows you're through experts to brainstorm new solutions for existing workflow bottlenecks. A meeting like this is a fantastic way to uncover missed opportunities and easily add them into the next set of content marketing plans or fit into the existing calendar.

Members of each team can discuss new trends in the field to strengthen weak content. Similarly, this is the place to evaluate the latest statistics the most successful material. Keep the meeting focused by passing each idea through a filter that rates values, considers alternative ideas, and prioritizes them based on business goals. Most importantly, align every new topic with the company's original strategies.

❑

Dilemmas at workplace

—Supriya singh
Assistant Professor- BIBM

Every individual has his/her own one of a kind good objectives and individual morals which compel him/her to demonstration in a specific one of a kind way. A difficulty emerges when there is a contention between these individual suppositions. Along these lines, a moral difficulty may happen either inside the individual or between at least two individuals. A working environment is viewed as a reproducing ground for ethical dilemmas between people as they all originate from various financial foundations and convictions. There are instances of ethical dilemmas between a business and a worker.

Lets us consider an example. During recruitment, it is the duty of an organization to explain its current state to the candidate.mr. X loses his job after 1 year of employment because the company was acquired by another organization and he was not aware of it. This is an absolute breach of professional ethics.

Similarly, this article manages some basic moral issues at office and a few hints to resolve these issues.

Ethical issues in workplace

1. Ethical issues of employees

- Making long telephone calls at the organization's cost. A few associations give a discount to the telephone bills of the workers, particularly if the representative is managing an occupation which that includes utilizing the phone. Exploiting the reality and making individual telephone calls is dishonest.
- Bringing home the organization's benefits. A few representatives take devices and stationery, for example, staplers, pins, papers and so on to utilize them at home. This would have most likely gone undetected by the cameras, yet unquestionably doesn't say much in regards to their conduct.
- Break of standards and directions of the organization. Tolerating terms and conditions are generally done as a piece of joining strategy. Damaging any of these guidelines may prompt bothersome issues between the organization and you. Neglecting to keep up the protection strategy of the organization is another kind of breaking of guidelines. Each organization has its own security approach. A worker is qualified not to give out the organization's information and different particulars to another organization/contender.

2. Ethical issues of employers

- Favoritism: This implies the employer may support a specific individual as to advancements and rewards and obviously disregard other qualified workers. This direct is considered exceptionally exploitative with respect to the business.
- Firing a worker with no notice. In few cases, for reasons like budget management, organizations select mass terminating to diminish the quantity of workers. Such terminations ought to be done after earlier signs and notice of no less than a month or two, with the goal that the individual can discover another activity. Notice periods must be served to maintain a strategic distance from perplexity.
- Unnecessary delay in paying worker's provident fund and gratuity after leaving the organization is a rupture of ethics.

Moral issues are a typical sight in organizations. Studies uncover that the general responsibility level of the workers has declined significantly. This article manages the regular breach of ethics in the work environments.

□

सफलता न मिलने का कारण कार्य-प्रणाली में कहीं न कहीं खामी है
आत्मावलोकन व आत्मविश्लेषण से काफी हद तक सुधार किया जा सकता है

Era of Cloud Computing Management : Paradigms and it's Technologies

–Er.Sumit Srivastava
Assistant Prof. Comp.Science

Introduction

Cloud Computing has recently emerged as a compelling paradigm for managing and delivering services over the internet. The rise of Cloud Computing is rapidly changing the landscape of information technology, and ultimately turning the long-held promise of utility computing into a reality. The latest emergence of Cloud Computing is a signiûcant step towards realizing this utility computing model since it is heavily driven by industry vendors. It attracts business owners due to its ability to eliminate the provisioning plan overhead, and allows enterprises to start from the small scale and dynamically increase their resources simultaneously with the increase of their service demand. Cloud computing promises to deliver reliable services through next-generation data centers built on virtualized compute and storage technologies. Users will be able to access applications and data from a Cloud anywhere in the world following the pay-as-you-go ûnancial model.

Architecture & Paradigm

Many organizations and researchers have defined the architecture for Cloud Computing. Basically, the whole system can be divided into the core stack and the management. In the core stack, there are three layers: (1) Resource (2) Platform and (3) Application.

The resource layer is the infrastructure layer which is composed of physical and virtualized computing, storage and networking resources.

The platform layer is the most complex part which could be divided into many sub-layers; e.g. a computing framework manages the transaction dispatching and/or task scheduling. A storage sub-layer provides unlimited storage and caching capability.

The application server and other components support the same general application logic as before with either on-demand capability or flexible management, such that no components will be the bottle neck of the whole system.

Technologies behind Cloud Computing

A number of enabling technologies contribute to Cloud Computing, several state- of-the-art techniques are identified.

- Virtualization technology : Virtualization technologies partition hardware and thus provide flexible and scalable computing platforms. Virtual machine

techniques, such as VMware2, and Xen3 offer virtualized IT infrastructures on demand. Virtual network advances, such as Virtual Private Network4 (VPN), support users with a customized network environment to access Cloud resources. Virtualization techniques are the bases of the Cloud Computing since they render ûexible and scalable hardware services.

- Orchestration of service ûow and workflow : Computing Clouds offer a complete set of service templates on demand, which could be composed by services inside the computing Cloud. Computing Clouds therefore should be able to automatically orchestrate services from different sources and of different types to form a service ûow or a workflow transparently and dynamically for users.
- Web service and SOA : Computing Cloud services are normally exposed as Web services, which follow the industry standards such as WSDL5, SOAP6 and UDDI7. The services organization and orchestration inside Clouds could be managed in a Service Oriented Architecture (SOA). A set of Cloud services furthermore could be used in a SOA application environment, thus making them available on various distributed platforms and could be further accessed across the Internet.
- Web 2.0 : Web 2.0 is an emerging technology describing the innovative trends of using World Wide Web technology and Web design that aims to enhance creativity, information sharing, collaboration and functionality of the Web. Web 2.0 applications typically include some of the following features/techniques:

Advantages of the Use of Cloud Technology

- On-demand service provisioning: Computing Clouds provide resources and services for users on demand. Users can customize and personalize their computing environments later on, for example, software installation, network con- ûguration, as users usually own administrative privileges.
- QoS guaranteed offer: The computing environments provided by computing Clouds can guarantee QoS for users, e.g., hardware performance like CPU speed, I/O bandwidth and memory size. The computing Cloud renders QoS in general by processing Service Level Agreement (SLA) with users.
- Autonomous System : The computing Cloud is an autonomous system and it is managed transparently to users. Hardware, software and data inside Clouds can be automatically re-configured, orchestrated and consolidated to present a single platform image, ûnally rendered to users.
- Scalability and ûexibility : The scalability and flexibility are the most important features that drive the emergence of the Cloud Computing. Cloud services and computing platforms offered by computing Clouds could be scaled across various concerns, such as geographical locations, hardware performance, and software conflgurations. The computing platforms should be flexible to adapt to various requirements of a potentially large number of users.

Security

Certainly as the Cloud Computing environment matures, security concerns are

being addressed more consistently. In October 2008, Google unveiled a new service-level agreement (SLA) that guarantees 99.9 % system accessibility for users of its Google Apps Premier Edition, joining the Amazon S3 SLA that launched in 2007. Other companies are addressing related angles of security. For example, Boulder, Colo.-based Sympliûed offers a uniûed access management system built for the Cloud architectures of SaaS. The company's Identity-as-a-Service approach provides on-demand features; such as single sign-on, provisioning, de-provisioning, auditing and compliance, access and authorization, identity synchronization, strong authentication, and identity integration.

❑

A positive student-teacher relationship

—Ms. Seema Verma

Assistant Professor- BIPSR

Students look upto their teachers as their guide and mentors and a teacher should not let them down.

We all want to feel cared for and valued by the significant people in our world. Teachers and students are no different. In the educational world, there exists a consecrated bonding between the teacher and the students. Students after their parents admire their teachers especially certain traits like confidence, dedication, warmth and sincerity, looking upto to them for priceless guidance.

Healthy relationships with teachers have imperative, constructive and enduring implications for students' intellectual and collective development. Teachers who foster optimistic relationships with their students create classroom environments more conductive to learning and meet students' developmental, emotional and academic needs.

If a student feels a special connection to a teacher, experiences recurrent communication with a teacher, and receives more direction and extol than denigration from the teacher, then the student is likely to become more trustful of that teacher, show more engagement in the academic content presented, display better classroom behavior, and achieve superior levels academically. Positive teacher-student relationships draw students into the process of learning and uphold their desire to learn. It channelizes two individuals to grow together nurturing each other in a supportive environment.

The relationship between a student and teacher is that of understanding each other's requirements and coming to provison with each other's expectations. When the teachers bonds with the students, she owes a lot of responsibility towards them to make them very holistic. Strong teacher relationships manifest into various forms such as

Teacher's help students reflect on their thinking and learning skills, show them the mirror, where they stand and where they ought to be.

Teachers show keen interest towards students learning, development and progress with genuine interest in their betterment.

Teachers interact in an approachable and reverential manner welcoming supportive feedback from their students in order to give them the best.

Teachers offer students help (e.g., answering questions in timely manner, offering support like extra reading materials, handing over study notes , clarifying doubts and apprehensions, solving their personal impediments) in achieving academic and social objectives.

Teachers barely ever show irritability or aggravation toward students and refrain from unwarranted reprimands. They give time and space to their students being tolerant of their mood swings and distractions.

Teachers go that extra mile to support students not just in scholastic pursuits but also extra-curricular activities, for job preparation, selection and placement too.

With teachers actively engaging in nurturing the bind with students, it is also a prerogative of students to cultivate right attitudes and commitments towards their teachers for fostering healthy bonding between the two.

Firstly, Students must keep in mind that teaching is not just a noble profession but also a daunting responsibility. The teacher is like a candle that consumes itself to give light to others.

Teachers have extensive workload of reading, updating themselves, preparing lectures for classes, assessing and evaluating test performances, grading, ranking students etc with additional college administrative tasks. This may at times coerce teachers to sacrifice their personal commitments at home front for the sake of making the students more quipped with accurate knowledge.

Students must appreciate the teacher's efforts to make the topic more comprehendible in class.

They must equally reciprocate by preparing well for classes by coming well-read, studying the cases given, analyzing and solving problems or assignments etc. When mutual reciprocation is depicted, it motivates the teachers to give in more zeal towards better teaching and obviously cultivating more comforting bonds.

The student must respect his/her teacher, holding him/her in the highest esteem. The respect must be genuine as a person and they must empathize with teacher.

It is a necessary prerequisite to also trust the teacher in all matters concerning the student's development.

The student must believe that the teacher always has his or her best interests in mind. Any reprimands, criticism, feedback or advices given must be taken in stride for alleviating the level of the students, rectifying their pitfalls and correcting them wherever wrong.

Finally, the student must commit himself or herself to following the teacher's instruction with paramount discipline, for only then can the intended effect be achieved.

In synopsis, optimistic student-teacher relationships can be developed through fertile daily interactions, conscious efforts to connect and win them over. These bonds not only contribute to a positive classroom environment, but it also improves the quality of school life for both you and your students.

Students look upto their teachers as their guide, mentor and well-wishers and it's the teachers prime duty to never let their expectations down. Students are teachers trained lot, who must grow into successful individuals creating their own identity in life to make the teacher proud. Students superseding progress is the greatest joy that a teacher can get. Always cherish and keep the bond intact.

❑

Teaching is a journey

–Jyoti Vaish
Assistant Professor- BIPSR

"Never stop learning because life never stops teaching"

Never forget that the real power of education doesn't come from a corner office. It doesn't come from a political office it comes from the daily interaction teachers have with students from what kinds are learning every day.

"True teachers are those who use themselves as bridges over which they invite their students to cross, then having facilitated their crossing, joyfully collapse, encouraging them to create their own."

Each day get more attention
than the average therapist
Turn more frowns into smile-
than the average dentist
Watch more brains process information
than the average neurologist
I do this every day because, I am a teacher
Great teaching is ending each day,
Knowing you have given
All that you are so that the future can
Shine a little brighter
Its continual hope
In the midst of struggle
Its believing in kids.
Connecting with colleagues,
Planting the seeds of dream
And Being on a never ending Learning
Journey.

The best part-
Children may forget what you say, But
They will never forget how you make them students.

❑❑

Corruption in India : A Major Problem

–Mr. Anuj Singh
Store In-charge- BIPSR

Corruption in India is an issue that adversely affects the country's economy and the credibility of central, state and local government agencies. Corruption is defined as the use of public offices for private gains in a way that constitute breach of lone or a deviation from the norms of the society. It not only has become a pervasive aspect of Indian politics but also has become an increasingly important factor in Indian

elections. According to the Honable Pratibha Patil corruption is the enemy of development and of good governance.

The extensive role of the Indian state in providing services and promoting economic development has always created the opportunity for public but these resources used for private benefits. The media has widely published allegations of corrupt Indian citizens stashing millions of rupees in Swiss banks. Swiss authorities denied these allegations, which were later proven in 2015–2016. The Indian media is largely controlled by extremely corrupt politicians and industrialists who play a major role by misleading the public with incorrect information and use the media for mud-slinging at political and business opponents.

The causes of corruption in India include excessive regulations, complicated tax and licensing systems, numerous government departments with opaque bureaucracy and discretionary powers, monopoly of government controlled institutions on certain goods and services delivery, and the lack of transparent laws and processes. There are significant variations in the level of corruption and in the government's efforts to reduce corruption across different areas of India.

Corruption in India is a problem that has serious implications for protecting the rule of law and ensuring access to justice. As of December 2009, 120 of India's 524 parliament members were accused of various crimes, under India's First Information Report procedure wherein anyone can allege another to have committed a crime. Many of the biggest scandals since 2010 have involved high level government officials, including Cabinet Ministers and Chief Ministers, such as the 2G spectrum scam (1.7 lakh crore (US$27 billion), the 2010 Commonwealth Games scam (70,000 crore (US$11 billion)), the Adarsh Housing Society scam, the Coal Mining Scam (1.86 lakh crore (US$29 billion)), the Mining Scandal in Karnataka and the Cash for Vote scams. According to 2014 results of the *Corruption Perceptions Index of Transparency International*, India ranks in 79th place out of 176 countries. Corruption is an inactable problem. It is like diabetes, can only be controlled but not totally eliminated. It may not be possible to root out corruption completely. It has a corrosive impact on our economy. It worsens our image in international markets and leads to the loss of opportunities.

Government formulated different type of laws i.e Right to information Act 2005, Right to Public

Service Legislation, Indian Penal Code 1860, Prosecution section of Income Tax Act 1961, The

prevention of corruption Act 1988, The Benami Transactions (Prohibition) Act 1988, Prevention of

Money Laundering Act 2002 and policies i.e. Central Vigilance Commission, Central Bureau of

Investigation, Directorate General of Income Tax Invigilation all deal with anti-corruption initiatives.

❑

Foot and Mouth Disease (FMD)

–Dr. Sujeet Kumar Yadav
Assistant Professor Dept. of (Ag.)

Foot and Mouth Disease is a viral disease. It's also known as Apthus fever. It occurs in cows, buffaloes, sheep and goats. It affects the animals in almost all the countries of the world. Exotic and crossbred cattle have low mortality, but high morbidity. Buffaloes, goats and sheep are susceptible to this. Pigs are badly affected by this. The infected animals become weak and their productivity decreases.

Bullocks and bulls become unable to work. Thus, the disease results in a great loss to the owners, formers and the nation. The disease characterized by the formation of vesicles and blisters in the mouth, teats, udder and on the skin of the inter digital space in hooves of cloven footed animals.

Etiology or Cause

The disease is Caused by virus. The virus causing FMD is one of the smallest of the animal viruses and found in seven different types viz. O, A ,C , Asia-1, SAT-1, SAT-2 and SAT-3. Out of these O,A,C and Asia-1 wear identified from the outbreaks of FMD in India.

Mode of Infection

The disease spreads: By direct contact, Through infected water, Manure, feed and pasture, By the cattle attendant, By recovered animals, By birds, porcupines and field rates, Through air.

Incubation period: 1 to 6 days

Symptoms

Shivering and fever. Rise in body temperature upto 104 to 105^0F or more. Unable to eat well, characteristic smacking sound with excessive salivation, loss of appetite and body weight, decreased milk productions or stops completely. Painful foot lesions make the animal lame. Heart, endocrine glands and stomach are attacked by the virus. Recovery in about 21 days but followed by a number of complications, maggot formation in the cleft of hooves and shedding of the hooves resulting in permanent deformity of the part and lameness. Recovered animals are identified by dry and rough coat with long hair.

Inside the mouth, lesions are seen on tongue,gums, lower and upper jaws and cheques. Due to reduced intake of feed, the animals become weak, but their mortality rate is very low.

Diagnosis

1. Symptomatic: The disease can be identified by observing the symptoms.

2. By Inoculation : Guinea-pig develops the symptoms of FMD when inoculated with the secretion of lesions.

3. By ELISA test

4. By PCR (Polymerase chain reaction) Test

Treatment

1. The mouth of the animals should be washed with some antiseptic lotion such as potash, alum or boric acid solution. Then boro-glycerine should be applied over the lesions in the mouth 2 to 3 times a day.

2. Lesions in the clefts of the hooves should be washed with 1% solution of copper sulphate or phenol, thereafter

antiseptic powder such as sulfonamide should be sprinkled over.

3- At entrance of the dairy farm a pit of about 9 to 12 feet long, 3 feet wide and 1 feet deep should be made and filled with 1% solution of copper sulphate.

4. To recover from the lesions of mouth and hooves, the injection of Terramycin or Ampicillin for 5 to 7 days is very effective.

5. The animals should be provided balanced ration.

Prevention

Foot Bath : foot bath as describe above should be made in every village at entrance and the animals should be passed through this.

Apthisation : Apthisation is a method of preventing the animals from foot and mouth disease. In this the saliva of the infected animal is taken and smeared a bit in the mouths of all the healthy animals of the herd.

Vaccination

The healthy animals should be vaccinated against this disease. Foot and mouth disease vaccine (FMD Vaccine) is used for this.

❑

एक रुपये के नोट का 100 वर्षों का रोचक सफर : फै

— धनञ्जय वर्मा
कम्प्यूटर आपरेटर

भारतीय मुद्रा का पहला एक रुपये का नोट 30 नवम्बर, 1917 को प्रिण्ट हुआ था। इस प्रकार इस एक रुपये के नोट ने 30 सितम्बर, 2017 को अपने 100 वर्ष का सफर पूरा किया।

भारतीय रिजर्व बै

जानकारी के अनुसार इस नोट की छपाई को पहली बार 1926 में बंद किया गया, क्योंकि इसकी लागत अधिक थी। इसके बाद इसे वर्ष 1940 में फिर से प्रिण्ट करना शुरू किया गया जो 1994 तक अनवरत् जारी रहा। बाद में इस नोट की छपाई 2015 में फिर शुरू की गयी।

एक रुपये के नोट से सम्बन्धित फै

- 30 नवम्बर 1917 को पहली बार प्रिण्ट किये गये 1 रुपये के नोट पर ब्रिटेन के राजा जॉर्ज पंचम की तस्वीर छपी थी।
- वर्ष 1917 से 1927 तक 125 प्रकार के 1 रुपये के नोट प्रिण्ट किये गये।
- 1 रुपये के इस नोट का डिजाइन पिछले 100 वर्षों में 28 बार परिवर्तित किया गया।
- पहली बार छपकर आये 1 रुपये के नोट पर तीन वित्त सचिवों एम. एम. एस. गब्बे, ए.सी. मै तथा एच. डेनिंग के हस्ताक्षर थे।
- स्वतन्त्रता के पश्चात् 1 रुपये के नोट पर जॉर्ज पंचम के स्थान पर अशोक चिह्न प्रकाशित किया जाने लगा।
- 1947 से अब तक 18 वित्त सचिवों के हस्ताक्षर वाले एक रुपये के नोट जारी किये गये है
- अन्य नोटों की तरह इसे भारतीय रिज़र्व बै नहीं बल्कि सीधे भारत सरकार द्वारा जारी किया जाता है
- कानूनी आधार पर 1 रुपये का नोट ही वास्तविक 'मुद्रा' नोट (करेंसी नोट) है
  नोट (प्रॉमिसरी नोट) होते है
  उतनी राशि अदा करने का वचन दिया गया होता है

❑

किसान की आत्मकथा

–डॉ. दीपक कुमार गौ
प्राध्यापक, कृषि संकाय

रोज किसान मर रहा है
दे रहा है
फिर भी हिन्दूस्तान चिल्लाते।
अपना देश महान॥
आज हमारा अन्नदाता ही।
नहीं ले पाता सुकूँ की सांस॥
कर्ज ब्याज में डूबा रहता।
लगाता है
किसान की कोई आवाज नहीं।
ये अम्बानी, अदानी साज नहीं॥
हर पेट में जाता है
पर इनपे किसी को नाज नहीं॥
बिन मौ
या गिर जाए ओले॥
फिर भी या केन्द्र में ।
सरकारी सिंहासन न डोले॥
फिर कभी बारिस नहीं होती।
या अनुकूल मौ
फसल बर्बाद हो जाए तो ।
नेता घड़ियाली आंसू रोता॥
रोज किसान मरते है
पर किसी को परवाह नहीं।।
एक जंतर मंतर पे गुजरा।
तो नेताओं को खटका कहीं।।
मृत किसान के आगे पीछे।
लगा नेताओं का तांता है
उसकी याद में घड़ियाली आँसू।
नेता खेत में बहाता है
यदि वाकई किसानों की परवाह है
तो देश उनके लिए कुछ करे॥
न कि बस हल्ला मचाएँ।
जब दिल्ली में वो जा के मरे॥
देश के कोने–कोने में
गाँव, देहात, खलिहानों में॥
खेती बाड़ी को सफल बनाएँ।
नेता डाले ये बात कानों में॥
मंत्री जी आते–जाते है
बस आश्वासन दे जाते हैं
सरकारें आती–जाती है
कुछ खुल्ले दे जाती है
खेती बाड़ी बहुत कठिन है
कितना मुश्किल एक–एक दिन है
चुकाना बैं
जीना बस तारे गिन–गिन है

❖❖

मौ

—अवनीश शुक्ल
मीडिया प्रभारी
भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस
सीवार,सोहावल, फै

जलवायु परिवर्तन अब एक आम चर्चा का विषय बन गया है
अलग-अलग हिस्सों में अलग तरीके से हो रहा है कहीं अतिवृष्टि औ
बढ़ने लगे है
में चिंता अवश्य व्यक्त की जा रही है
समाधान के मूलभूत पहलू की उपेक्षा हो रही है
सुख की बढ़ती भूख के कारण औ
प्रगतिशीलता के नाम पर प्रकृति के साथ खिलवाड़ इसका सबसे बड़ा कारण नजर आता है
हम अपने आचरण से प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहे है
हरे-भरे पेड़-पौ
धीरे-धीरे अभाव होता जा रहा है
गर्मियों के माह में सूख जाती है
तबाही मचाती है

दुनियाभर के देश साल में एक बार किसी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अपने प्रतिनिधि भेजकर बिगड़ते जलवायु परिवर्तन पर चर्चा कर अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री कर लेते हैं
समेत पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आसपास छाये प्रदूषण के कारण लोगों को साँस लेने में दिक्कत होने लगी, जिसके कारण स्कूलों को बंद करना पड़ा औ
छाये प्रदूषण को हटाने के लिए कृत्रिम बारिश की संभावना पर भी विचार किया गया, लेकिन कोई हल नहीं निकल सका।

संयुक्त राष्ट्र के अन्तर-सरकारी पै
मूल्याकंन रिपोर्ट में विस्तार से यह बताया गया है किस तरह यह मानवीय क्रियाकलापों का नतीजा है कि पिछले दशकों में पृथ्वी की सतह का तापमान बढ़ रहा है
डिग्री सेल्सियस तापमान बढ़ा है
कम तो कहीं ज्यादा बढ़ा है

जलवायु परिवर्तन का असर भारतीय स्तर पर मानसूनी वर्षा में किसी तरह की कमी-वेशी भले ही न दर्ज हुई हो लेकिन कुछ क्षेत्रों में इसमें कमी दर्ज की गई है
गुजरात व केरल के कुछ भाग) वहीं वृद्धि वाले क्षेत्र है (पश्चिमी तट, उत्तरी आन्ध्र प्रदेश व उत्तर-पश्चिमी भारत)। देश के मध्य औ
बार-बार होने की घटनाएँ बढ़ी है
बनने वाले चक्रवाती तूफानों की कुल आवृत्ति बढ़ने लगी है
कर्नाटक औ
बरसात हुई, जिसके कारण वहाँ का पूरा जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो गया, कई दिनों तक स्कूल कालेज, सरकारी दफ्तर, कल-कारखाने बंद करने पड़े, जिससे इन राज्यों को काफी राजस्व की भी क्षति हुई।

भारतीय उष्ण देशीय मौ
अनुमान है
तापमान वृद्धि अलग-अलग परिदृष्यों के तहत तीन से

पाँच डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की आंशका है
भी अनुमान है
औ

जलवायु परिवर्तन ताजे पानी, कृषि योग्य भूमि, तटीय व समुद्री संसाधन जै
के वितरण औ
इसका सबसे बडा असर हमारे जल संसाधनों पर पड़ सकता है
के कारण प्रभावित हो सकती है
कारण तटीय क्षेत्रों के निकट ताजा जल स्रोत लवण यानी खारेपन से प्रभावित हो सकते है

भारत में खाद्यान्न उत्पादन जलवायु परिवर्तन से प्रभावित होता है
कृषि वर्षा जल पर ही आधारित है
अनुसन्धान संस्थान औ
में कार्बन का स्तर बढ़ने से गेहूँ औ
कमी का भी अनुमान लगाया है
अनावृष्टि दोनों से फसलों एवं सब्जियों की उपज प्रभावित होती है
चाय, कॉफी, सुगन्धित व औ
प्रभावित होती है
लगता है
पड़ने लगता है
का असर पड़ रहा है

उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र तथा राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में अक्सर बाढ़ आती है
40 मिलियन हेक्टेयर भूमि के साथ-साथ उत्तर औ
पूर्वोत्तर कटिबंध में अधिकांश नदियों की घाटियों में बाढ़ का खतरा है
तीन करोड़ लोग प्रभावित होते है
जिलों की संवेदनशीलता पर समुद्र स्तर में वृद्धि से वास्तविक खतरे, जनसंख्या प्रभाव पर आधारित सामाजिक खतरे औ
किया है
गहनता में 15 प्रतिशत की वृद्धि देश में भारी जनसंख्या वाले तटीय क्षेत्रों पर एक खतरा पै

जलवायु परिवर्तन की चुनौ
सरकार ने एक सलाहकार परिषद् का भी गठन किया है
ये परिषद् सरकार, उद्योग औ
तमाम पक्षधारियों से सलाह-मशविरे के बाद कई दिशा निर्देश जारी किये है
एन.जी.टी. भी बढ़ते प्रदूषण के प्रति लगातार सक्रिय है
होगा, बेवजह प्रकृति के साथ छेड़छाड़ बंद करनी होगी, स्वच्छता पर विशेष बल देना होगा, क्योंकि यदि आने वाले कल को सही रखना है
करना होगा।

❖❖❖

यह ध्यान रखना की तुम्हारी इज्जत पर कोई हाथ न डालने पाये, एकता पैदा करो और चरित्र का विकास करो।

— सरदार पटेल

❖❖❖

कै

—डॉ० पंकज कुमार यादव
कला, प्रवक्ता
भवदीय हेमराज वर्मा टीचर ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट फै

कला के इतिहास एवं महत्त्व को हम इस सूत्र के माध्यम से जान सकते है

"साहित्य, संगीत कला विहीनः
साक्षात् पशु पुच्छ विषाण हीनः"

जिस व्यक्ति को साहित्य, संगीत, कला का ज्ञान नहीं होता है क्त बिना पूँछ वाले पशु के समान है

मानव-जीवन से यदि कला को हटा दिया जाय तो व्यक्ति पूर्ण रूप से मानव नहीं कहलायेगा। कला के उत्पत्ति के सम्बन्ध में सबका अपना-अपना मत है

वै
मिलता है
है
ग्रन्थों में भी कला का उल्लेख मिलता है
पण्डित ने भी चित्रकला के छः अंगों की व्याख्या ग्यारहवीं शताब्दी में ही कर दी थी।

"रूप भेदाः प्रमाणानि भाव लावण्य योजनम्
सादृश्य वार्णिका भंग इति चित्र षडंगकम्।"

हर कलाकार को उपर्युक्त सभी छः अंगों का ज्ञान होना आवश्यक है

रूपभेद, प्रमाण, भाव, सुन्दरता, देखे हुए रूप के समान चित्रण करना एवं रंगों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है
को भाषा का रूप दिया। इसी कड़ी में अजंता, एलोरा, बाघ गुफाओं के चित्र इसके साक्षी है

कला में वह शक्ति है
अपनी ओर खींच लेती है
आता है
पायेंगे जिस देश या समाजों में कला विकास हुआ वहाँ के लोग ज्यादा संवेदनशील है
होने से बचाती है
इतिहास को जान पाते है

प्रागै
युग की कला पर प्रकाश डाले तो पाते है
कला का अपना महत्त्व रहा है
ने तो अपने दरबार में दरबारी चित्रकार (कलाकार) रखते थे तथा समयानुसार सभी ने कला को अपने अपने ढंग से परिभाषित भी किया है
टै
वही प्लेटो महोदय ने कला को सत्य की अनुकृति बताया है

अतः मानव-जीवन का कोई भी पहलू कला से अछूता नहीं है

वर्तमान समय में कला को दो रूपों में देखा जाता है

1. उपयोगी कला
2. ललित कला।

दोनों का अपना-अपना महत्त्व है
क्षेत्रों में जबरदस्त कै
जरूरी है

कोर्स व क्वालिफिकेशन— देश के अधिकतर विश्वविद्यालयों में एवं कालेजों में फाइन आर्ट्स में अण्डरग्रेजुएट एवं पी. जी. कोर्स संचालित हो रहा है पर फाइन आर्ट्स की पढ़ाई किसी दूसरे विषय से पूरी तरह भिन्न है
आप में रुचि के साथ ही साथ क्रिएटिव टै
स्किल का होना जरूरी है
कलात्मक औ
को ही आना चाहिए।

इस क्षेत्र में सफलता की अपार सम्भावनाएँ है परन्तु सही ज्ञान का होना जरूरी है

इस फील्ड में आने के लिए 10वीं के बाद कला डिप्लोमा एवं 12वीं पास के बाद कला से बी. ए. औ एम. ए. कर सकते है B.F.A.) बै
फाइन आर्ट का कोर्स सबसे अच्छा माना जाता है
कोर्स चार साल का होता है
ड्राइंग, ड्राइंग एण्ड पेन्टिग, डिजाइनिंग, गेमिंग डिजाइन, मूर्ति कला तथा रंगों का ज्ञान प्राप्त करते है

बी. एफ. ए. (BFA.) के बाद आप M. F. A. भी कर सकते है M. Phil एवं Ph.D. भी कर सकते है

आप चाहे तो NIFT का कोर्स करके फै डिजाइन के क्षेत्र में भी कै

जॉब प्रोफाइल– इस दृष्टिकोण से देखें तो आप उपर्युक्त कोर्स के बाद आप कला अध्यापक बन सकते है।

अन्य विषयों की तरह आज कला अध्यापक की डिमाण्ड बहुत अधिक है
गै
आज कल पेन्टिंग की डिमाण्ड बहुत अधिक है
इसकी कीमत लाखों से लेकर करोड़ों तक हो सकती है

इटली के कलाकार लियोनार्दो द विन्ची जो चित्रकार के साथ ही साथ वै
पेन्टिग मोनालिसा पूरे विश्व में आज भी प्रसिद्ध है जिसका मूल्य करोड़ो में है

भारतीय चित्रकार राजा रवि वर्मा, यामिनी राय, रवीन्द्रनाथ टै
यह सभी पूरे विश्व में अपनी कला के माध्यम से ही जाने जाते है
मेहनत के साथ ही साथ कला का सही ज्ञान आवश्यक है
है

सुबह से शाम तक हम जिन-जिन वस्तुओं का प्रयोग करते है
है
बेचा जाता है
देने के साथ ही साथ घर पर भी लोगों को कला का प्रशिक्षण दे सकते है

यह बताना चाहेंगे कि अभी हाल में आयी बहुचर्चित फिल्म बाहुबली 2 में काफी आर्टिस्टों ने काम किया है
नहीं कर सकते थे। इस फिल्म में B.F.A. व M.F.A. के स्मार्ट आर्टिस्टों ने खूब काम किया।

इसके अलावा आप एनिमेशन, वस्त्र डिजाइन, डायमण्ड डिजाइन, बुक डिजाइन एवं प्रोडक्ट डिजाइन के क्षेत्र में जा सकते है
साथ मूर्तिकला के क्षेत्र में भी कै

कला की माँग को देखते हुए आप चाहे तो निम्नलिखित संस्थानों द्वारा कला की सही डिग्री लेकर कै
सकते है

1. लखनऊ आर्ट कालेज, लखनऊ
2. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस
3. कालेज ऑफ आर्ट, दिल्ली
4. सर जे. जे. आर्ट कालेज, मुम्बई

❑

डूबने से डरने वाले लोग तै — ***–सरदार पटेल***

जो इस मिथ्या जगत् में जनसेवा के द्वारा जीवन को सार्थक बना लेता है लिये मृत्यु नहीं। — ***– सरदार पटेल***

आधुनिक जीवन में फास्ट फूड एवं उसके दुष्परिणाम

—पशुपति नाथ सिंह "गाँधी"
प्रवक्ता- डी.एल.एड्.

तेजी से दौ
के जीवन क्रम में फास्ट फूड का आविष्कार किया है
आज यह भोजन का अंग बन चुका है
फास्टलाइफ बेहतर फास्टफूड की ओर आकर्षित हुई है
स्मार्ट औ
शारीरिक सौ
बदले फास्ट फूड की ओर अग्रसर हो रहे है
क्रांति ने समाज के हर आयु एवं वर्ग को प्रभावित किया है
जिन्दगी पर छाती जा रही है
तै
के पीछे झाँकने को किसी को फुरसत नहीं। सच तो यह है
दोनों को धीरे-धीरे ही सही पूरी तरह से समाप्त करता जा रहा है
एवं प्राकृतिक खाद्य पर निर्भर रहना ही एक मात्र विकल्प है
जीवन शै
लोग भी इसके अस्वस्थ परिणामों को देखकर इसके खिलाफ खड़े हो गये है
विवेक को ताकपर रखकर उसे अपनाने में गर्व महसूस करते है
है
देश में उच्च वर्ग में जहाँ सै
औ
मध्यवर्गीय परिवारों में कै
ड्राप, जै
हो रहा है

भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में मानव पोषण के डा. उमेश कपिल की मान्यता है
प्रचलित फास्टफूड में प्राय: विटामिन ए, सी, कै
औ
अनुसार 10 से 21 वर्ष के किशोर-किशोरियों का आकर्षण फास्टफूड के प्रति कुछ ज्यादा ही बढ़ा देता है
पर्याप्त कै
मोटापा लाने के बावजूद स्वस्थ नहीं रख सकता। 16 से 18 वर्ष के सम्भ्रान्त परिवारों के बच्चे ज्यादातर किसी-न-किसी फास्टफूड के शौ
एविटामिनोसिस रोग के शिकार है % किशोर
देखने में तो मोटे लगते है
प्रभावित होते है
रक्तचाप बढ़ने की आंशका रहती है
ज्यादा उपयोग शरीर में चीनी के संतुलन को बिगाड़ देता है
तंत्रिका तन्त्र सम्बन्धी रोग या डाइवर्टीकुलोसिस, पाइल्स, हार्निया, एपेंडीसाइट्स तथा पथरी जै
सकती हैं
युवतियाँ ज्यादातर रक्ताल्पता, नेत्र रोग एवं अस्थिरोग से ग्रसित होते है

होने की पहचान बन गया है
कहने वाले लोग भी इसे बड़े चाव से पीते है
कार्बोनेटेड पेय का रासायनिक विश्लेषण करने पर बड़े ही भयावह परिणाम सामने आये हैं
व सुगन्धित बनाने के लिए प्रयुक्त फ्लेवरिंग एजेन्ट अघुलनशील होते हैं
प्रयोग में आने वाले डिसपै
वेजीटेबल ऑयल कहते है
को नष्ट कर कै
कोल्डड्रिंक को हृदयरोग, ट्यूमर, पेट के रोगों तथा अन्य कई रोगों के लिए भी जिम्मेदार माना है

चिकित्सा-विशेषज्ञों एवं विज्ञानवेत्ताओं का कहना है
लगा है
है
के मनोवै
पाया कि संस्कारित खाद्य के बदले फास्ट फूड लेने वाले बच्चों में हिंसक प्रवृत्ति व आक्रामकता बढ़ जाती है
स्टीफन शोवेंट हलेवर ने भी इस तथ्य की स्वीकारा है
कि फास्टफूड लेने वालों में मानसिक विकृतियाँ बढ़ती है
तत्त्व होते हैं
एवं पवित्र भोजन से मन एवं भावनाएँ भी शुद्ध बनती है

अत: फास्टफूड कल्चर का अन्धानुकरण न करते हुए शुद्ध सात्विक भोजन ही ग्रहण करना चाहिए।

❖❖❖

बेटियाँ

—वन्दना वर्मा
प्रवक्ता- डी. एल. एड्.

इतनी मासूम क्यों होती हैं बेटियाँ।
इतनी जिम्मेदारी क्यों निभाती हैं बेटियाँ।।

अपने आपको क्यों कुर्बान करती हैं बेटियाँ।
परिवार को खुशियाँ दिलाती हैं बेटियाँ।।
दो घरों का जीवन सँवारती हैं बेटियाँ।
खुद सम्भलती हैं, औरों को भी सम्भालती हैं बेटियाँ।
फिर भी क्यों, अपमान सहती हैं बेटियाँ।।
जीवन के हर पथ पर झेलती हैं बेटियाँ।।
जीवन ही हर पथ झेलती हैं बेटियाँ।।
दहेज के लिए, क्यों दु:ख पाती हैं बेटियाँ।
सबकी खुशियों के लिए, खुद को मिटाती हैं बेटियाँ।।

इतनी मासूम क्यों सतायी जाती हैं बेटियाँ।
इतनी जिम्मेदारी क्यों निभाती हैं बेटियाँ।।

❖❖❖

स्त्री शिक्षा का महत्त्व

—श्रीमती सुनीता वर्मा
प्रवक्ता- डी. एल. एड्.

किसी भी राष्ट्र की पहचान सिर्फ उसकी भौ
स्थिति अथवा नाम से नहीं होती है
पहचान वहाँ के समाज तथा शिक्षा से होती है
कहते है
होता है
को शिक्षा का अवसर कम मिला है
प्रमाण भी है
अवसर नहीं मिलता, तब तक समाज एवं राष्ट्र का निर्माण सम्भव नहीं है

स्त्री शिक्षा स्त्री औ
जोड़ने वाली अवधारणा है
स्त्रियों को पुरुषों की तरह शामिल करने से सम्बन्धित है

भारत में मध्य औ
स्त्रियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की अवधारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौ
सर्वमान्य है
चाहिए जितना कि पुरुष हो। यह सिद्ध राज्य है
माता शिक्षित न होगी तो देश की सन्तानों का कदापि कल्याण नहीं हो सकता है

पर आज भी रूढ़िवादी सांस्कृतिक नजरिए के कारण लड़कियों को अक्सर पुरुष से कम अवसर हर क्षेत्र में मिलता है। शिक्षा के अभाव के कारण आज भी स्त्रियों को उनका अधिकार सही रूप में नहीं मिल पाता है

पुनर्जागरण काल में भारत में स्त्री शिक्षा को नये सिरे से महत्त्व मिलने लगा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के द्वारा सन् 1848 में स्त्री-शिक्षा को स्वीकार किया था। कोलकाता विश्वविद्यालय महिलाओं को शिक्षा के लिए स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था।

आजादी के बाद भारत सरकार ने पाठशाला में अधिक लड़कियों को पढ़ाने के लिए अधिक से अधिक
मौ
है
कारण है
असुरक्षित है

असुरक्षा के कारण ही अनेक घटनाओं के जाल में फँसकर महिलाओं का जीवन नर्क बन चुका है महिलाओं की शिक्षा, किसी भी पुरुष की शिक्षा से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

आज यह सिद्ध हो चुका है
तै
अधिक उपयोगी है
को अधिक प्रयासरत रहना चाहिए। आज समाज की बहुत-सी समस्याओं का समाधान स्त्रियाँ पुरुष से बेहतर ढंग से कर सकती है
विकास में मदद करता है
औ
मदद करता है
में मदद करती है

❑

पिता

—आकाश सक्सेना
बी.एस-सी. (एजी.) प्रथम वर्ष

पिता रोटी है
पिता नन्हें से परिन्दे का आसमान है
पिता है
पिता से माँ की चूड़ी, बिन्दी औ
पिता है
पिता है

❖❖❖

छात्र- अनुभाग

फार्मेसी बिजनेस या मेडिकल स्टोर कै

—प्रिया वर्मा
डी. फार्म. द्वितीय वर्ष

इण्डिया में Pharmacy Business अर्थात् Medical Shop किफायती औ Business है

Business पर कुछ ज्यादा प्रभाव पड़ता नहीं है इसलिए कि दवाई या Medicine का सीधा लेना-देना मनुष्य के स्वास्थ्य से होता है

अन्य आवश्यकताओं में समय के अनुरूप कटौ सकता है

कारण है Medical Shop Business में मंदी के दिनों में भी Kamai करने के सभी अवसर उपलब्ध होते है Pharmacy Business में अधिक खर्चा न आने के कारण औ India के हर क्षेत्र में दवाइयों की माँग अधिक होने के कारण युवाओं में यह Business अधिक प्रचलित है

बात करेंगे कि यदि इण्डिया में किसी व्यक्ति को Pharmacy Business करना हो, तो उसे क्या क्या औ किस प्रकार की गतिविधियाँ (Steps) करने पड़ेंगे।

Pharmacy Business Ka Registration— इंडिया में Pharmacy Business या Medical Shop खोलने के लिए Business Registration दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण स्टेप है बिजिनेस के Registration Process को निम्न चार भागों में विभाजित किया गया है

1. Hospital Pharmacy— Hospital Pharmacy के अन्तर्गत हमारा आशय उस Medical Shop से है Hospital के अन्दर होती है औ Hospital के मरीजों के आवश्यकतानुसार उन्हें दवाइयों की बिक्री करता है

2. Township Pharmacy— Township Pharmacy के अन्तर्गत वह व्यक्ति अपने Business को Register कराता है अपनी Medical Shop खोलना चाहता है में निवासित लोगों की दवाई सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरी करना चाहता है

3. Chain Pharmacy— Chain Pharmacy का मतलब उस Medical Shop से होता है जिसका स्टोर किसी एक जगह न होकर विभिन्न शहरों, इलाकों में फै

4. Stand Alone Pharmacy— Stand Alone Pharmacy के अन्तर्गत उन व्यक्तियों के Business को Register किया जाता है इलाकों में Medical Shop खोलना चाहते है मोहल्लों में स्थापित अधिकतर Medical Store इस श्रेणी के अन्तर्गत Register होते है

Pharmacy Business Ke Liye Drug Licence

Pharmacy Business के लिए Drug Licence सबसे महत्त्वपूर्ण स्टेप है तो गलत न होगा कि इस Business को Start करने की चाबी ही Drug Licence है Licence केन्द्रीय औ जारी किया जाता है प्रकार के होते है

1. Retail Drug Licence (RDL) औ
2. Wholesale Drug Licence (WDL)।

दवाइयों के फुटकर विक्रेताओं को RDL Licence औ WDL Licence
जारी किया जाता है
के नाम से जारी किया जाता है Pharmacy में कोई डिग्री या डिप्लोमा किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से ली हो। अगर हम नै
केवल वही व्यक्ति मेडिकल स्टोर अर्थात् Pharmacy Business कर सकता है Pharmacy में डिग्री या डिप्लोमा ली हो। लेकिन वास्तविक रूप में भारत में ऐसा होता नहीं। यदि किसी के रिश्तेदार ने या जानकार ने यह कोर्स किया होता है
लेकर पै
दे देता है

❑

बिटिया

—महेश कुमार
डी. फार्म. प्रथम वर्ष

एक मीठी सी मुस्कान है
पर ये सच है
रहमते बरकते साथ लाती है
उस रहमों की पहचान है
उन किताबों से खुशबू ही आये सदा,
जिन किताबों की उन्वान है

तंगहाली में भी धै
सब्र की जिन्दा पहचान है
उन घरानों की पहचान बनने चली,
जिन घरानों से अनजान है
सदा महेश भी आपसे कहेगा यही,
सारे जमाने पर अहसान है

किसी ने पूछा माँ क्या है

—महेश कुमार
डी. फार्म. प्रथम वर्ष

1. **शायर ने कहा—** माँ वह खूबसूरत गजल है
2. **माली ने कहा—** माँ किसी बाग का वह खूबसूरत औ लगती है
3. **अमीर ने कहा—** माँ वह रत्न है
4. **अनाथ ने कहा—** माँ भगवान् की अनमोल देन है
5. **किसी ने कहा—** माँ अथाह सागर है
6. **मै** माँ जन्नत है

"माँ को चरण स्पर्श"

❖❖❖

नौ

—अमित कुमार
डी. फार्म. द्वितीय वर्ष

बड़ी हसीन होगी तू ऐ! नौ
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

सुख-चै
सारी रात जगकर पन्ने पलटते है
दिन में तहरी औ
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

अंजान शहर में छोटा सस्ता रूम लेकर
किचन, बेडरूम सब उसी में सहेज कर
चाहत में तेरी अपने माँ-बाप औ
दोस्ती से दूर रहते है
सारे युवा आज तुझी पे मरते है

राशन की गठरी सिर पे उठाये
अपनी मायूसी औ
छुपाये खचाखच भारी ट्रेन में बिना
टिकट के रिस्क लेके आज सफर करते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

इण्टरनेट, अखबारों में तुझको तलाशते
तेरे लिए पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते-पढ़ते
बत्तीस साल तक के जवान कुँवारे फिरते है

तू कितनी हसीन है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

❑

पाँच रोग के लक्षण, कारण, इलाज

—आकाश वर्मा
बी. फार्म प्रथम वर्ष

कुपोषण

लक्षण— पोषण में कमी, थकावट, मांसपेशियों में कमजोरी, सुस्ती, शारीरिक व मानसिक विकास में कमी आना आदि।

कारण— दूषित भोजन व पानी के नियमित सेवन से डायरिया व पेट में कीड़े होने की समस्या होती है जिससे शरीर की पोषण ग्रहण करने की क्षमता कम हो जाती है

इलाज— कोई टीका नहीं, ओ. आर. एस. घोल की सलाह।

हेपेटाइटिस

लक्षण— हेपेटाइटिस 'A' औ E' के कारण बुखार, कमजोरी, भूख न लगना, उबकाई आना, पेट में गड़बड़ी व पीलिया।

कारण— दूषित पानी औ हेपेटाइटिस 'A' संक्रमित सूई के जरिए भी दूसरे व्यक्ति में पहुँचता है

इलाज— हेपेटाइटिस 'A' के उपचार के लिए दवाएँ उपलब्ध है
करता है

दाद

लक्षण— उँगली, बाजू, घुटने आदि में मुहाँसे जै

कारण— संक्रमित व्यक्ति की त्वचा के सम्पर्क में आने औ
है

इलाज— एण्टी फंगल लोशन व एण्टी फंगल दवाएँ।

टायफाइड

लक्षण— बुखार होना, भूख की कमी, सिरदर्द, कब्ज, डायरिया आदि लक्षणों के साथ किसी को तेज बुखार होता है

कारण— संक्रमित व्यक्ति के खाने व पीने की चीजों को खाना, नाली आदि के दूषित पानी से होने वाला संक्रमण तथा गन्दा पानी पीने से।

इलाज— टायफाइड बुखार के इलाज में एण्टी बायोटिक दवाएँ का सेवन ही एकमात्र प्रभावशाली तरीका है

टी. बी.

लक्षण— खाँसी आती रहना, खाँसी में बलगम आना तथा बलगम में खून आना। कभी-कभी जोर से अचानक खाँसी में खून आ जाना।

कारण— जिस व्यक्ति को टी. बी. है सम्पर्क में रहने से व उसकी वस्तुओं का सेवन करने, प्रयोग करने से। टी. बी. के मरीज द्वारा यहाँ-वहाँ थूक देने से उसके विषाणु उड़कर स्वस्थ व्यक्ति पर आक्रमण कर देते है

इलाज— आजकल टी. बी. के उपचार के लिए अलग-अलग एण्टी बायोटिक्स/एण्टी बेक्टेरियल्स दवाओं का एक साथ प्रयोग किया जाता है लगातार बिना नागा 6 से 9 महीने तक चलता है

❑

एक निवेदन

—आकाश वर्मा
बी.फार्म प्रथम वर्ष

1. कचरा सड़क पर न फेंके।
2. सड़कों, दीवारों पर न थूकें।
3. नोटों, दीवारों पर न लिखें।
4. गाली देना छोड़ दें।
5. पानी व लाइट बचायें।
6. एक पौ
7. ट्रेफिक रूल्स न तोड़ें।
8. रोज़ माता-पिता का आशीर्वाद लें।
9. लड़कियों की इज्जत करें।
10. एम्बुलेंस को रास्ता दें।

देश को नहीं, पहले खुद को बदलें।

❑

माता पिता के साथ व्यवहार के नियम

—आकाश वर्मा
बी. फार्म प्रथम वर्ष

1. अपने माता-पिता का सदा आदर करो।
2. उनको दुनिया की बड़ी से बड़ी चीज देने की चेष्टा करो।
3. अपने माता-पिता से कभी इसकी चर्चा न करें कि कब-कब तुमने उनका सम्मान किया या उनका कोई काम किया।
4. उनकी आवाज पर फौ
5. उनकी बात न काटो।
6. उनकी हर आज्ञा का पालन करो।
7. अपने माता-पिता से बात करते समय ऊँची आवाज में न बोलो।
8. अपने माता-पिता की राय के बिना सफर पर न निकलो।
9. उन्हें खुशी पहुँचाने की कोशिश करो।
10. अपने माता-पिता से सदा प्यार करो, क्योंकि तुम्हें हर अच्छी चीज उन्हीं से हासिल हुई है

❑❑

अछूत कौ

—महेश कुमार
डी. फार्म. प्रथम वर्ष

एक थे पण्डितजी औ
पण्डितजी पूरे पण्डित जी थे। हरिजनों की छाया भी अपने ऊपर नहीं पड़ने देते। पण्डिताइन शहर के नये वातावरण में पली थीं। उनकी शादी हाल में हुई थी। इसलिए वह पण्डित जी के आचार-विचार से परिचित नहीं थीं।

एक दिन की बात है
दै
पानी ले आयी। पानी पीकर पण्डित जी ने पूछा कहाँ से लाई बहुत ठण्डा है

कुम्हार के घर से, पण्डिताइन ने कहा। कुम्हार शब्द सुनते ही उन्होंने लोटा फेंक दिया औ
डायन। भ्रष्ट कर दिया मुझे अछूत के घर से पानी पिलाकर।

अब ऐसी भूल नहीं होगी डरते-डरते पण्डिताइन ने माफी माँगी। शाम को पण्डित खाना खाने बै
पण्डिताइन ने उन्हें सूखी रोटियाँ परोस दी। सूखी रोटियाँ देखकर पण्डित जी ने पूछा— "साग नहीं बनाया।"
बनाया तो था लेकिन फेंक दिया, क्यों?

हंडिया कुम्हार के घर की जो थी, पगली हंडिया में छूत नहीं होती। यह कहकर पण्डित जी ने दो चार ग्रास खाया औ

"पानी! पानी तो है

"तूने पानी तक नहीं भरा" यह आदत ठीक नहीं। तू जितनी लम्बी है
डाँटते हुए कहा।

बरतन तो है
गये क्या चोर ले गये क्यों?

कुम्हार के हाथ के जो बने थे। फिर वही बात, इतनी बात भी नहीं जानती कि बर्तनों में छूत नहीं होती। यह कहकर एक-दो ग्रास औ
उसी में मसल कर खा लूँगा। सूखी रोटी धसती नहीं। दूध भी फेंक दिया, क्यों? गाय को नौ
वह भी तो अछूत था। हद कर दी इतना भी नहीं जानती कि दूध में छूत नहीं लगता उसे कोई भी दुहे अथवा कोई भी छुए।

यह कै
में नहीं पण्डिताइन ने पूछा। ब्राह्मण को क्यों औ
के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। उसे तो वेद रीति औ
कुल रीति माननी चाहिए। पण्डित जी ने कहा फिर कुछ रुककर बोले, जा कपड़े ले आ। भूखे ही सो जाऊँगा। वे भी जला दिये क्यों? उन्हें धोबी ने जो धोया था धत तेरी की, सब चौ
वह भी जला दी क्यों? उसे भी तो अछूत ने बनाया था। सब में आग लगा दी की कुछ बचा भी है
है
ने बनाया है
न जला। क्यों? क्या उसमें छूत नहीं? यह कै
जो अछूतों के शरीर में पर उनके द्वारा बनायी गयी वस्तुओं में नहीं, उनके पानी में तो होती है
नहीं। अब मै
यह मात्र एक ढोंग है
चूसने, सताने औ
जो समाज की दिन-रात सेवा करते है
शिशु के लिए माता के समान है
कै

तुम ठीक कहती हो तुमने मेरी आँखें खोल दी। आज घर फूँक तमाशा देखकर मेरी समझ में आ गया कि छुआछूत ऊँचे समाज का बनाया एक पाखण्ड है औ

❑

गजल

–निर्भय सिंह
डी. फार्म. द्वितीय वर्ष

लोगों को हर मोड़ पर सम्भलते हुए देखा है
डर-डर के घर से फिर निकलते हुए देखा है
तबाही की इससे बड़ी औ
मै
नींद से 'ताल्लुक' ही नहीं रखा रातों को मै
ख्वाबों को रातभर, छत पर टहलते हुए देखा है
आखिरी साँस भी तेरी होगी ये जुम्ले सुने थे मै
ऐसे लोगों को चन्द लमहों में बदलते हुए देखा है
ये जरूरी तो नहीं कि फूलों में दर्द बसता हो,
मै
मोड़ होता है
मै

❑❑

Don't Quit

–Pinky Verma
B.Pharm. Ist Year

When Things go wrong as the sometimes will,
When the road your tordging seems all uphill,
When the funds are low and the debts are high,
And you want to smile but you have to sigh,
When care is Pressing you down a bit,
REST if you must BUT DONT YOU QUIT.

Life is quecer with its twists and turns,
as everyone of us sometimes learns, and may a
failure turns about, when he might of won had
he stock it out, DONT GIVE UP when the pace
Seems slow, you may Succeed with another blow.

❑❑

Recent Trends For Management of Hypertension

–Tooba Jamal
B.Pharm. Ist Year

Introduction— Hypertension (HTN) also known as high Blood pressure is a long term medical condition in which the Blood pressure in the arteries is peristently elevated high blood pressure does not cause symptom long term (HBP) However is major risk (factor for coronary artery deases, stroke) heart failure, periferal vascular disease, vissonless, Cronic Kidney.

Types of Hypertension— There are two primary hypertension types 95% of people with high blood pressure the cause of their hypertension is unknown this is called essential or primary hypertension when cause can be found, the condition is called secondary hypertension.

Essential Hypertension— This type of hypertension is diagnosed ofter a doctor notices that your B. P. is high on three or more visits and elininates all other cause of hypertension useally people with essential hypertension have no symptoms– but you may experice frequent (headaches or nose bleed).

Secondry Hypertension— The most Common cause of abnormality in the artries supplying blood to the kidney abnormality too much salt or alcohol.

Sign and Symptoms—

1. High Blood pressure is generally a chronic condition and is often associated with few or no symptom.

2. When symptom do occure it is useally when blood pressure spikes suddenly and externally enough to be considered a medical emergency.

3. Rare symptom include dizzy spells headches, and nose bleed.

Pathology— Pathology is branch of medicine which explain the function of the body as it relates to disease and condition. The pathology of hypertension is an area which attempt to explain mechanistically. The cause of hypertension which is as chronic disease characterised by elevation of blood pressure.

Hypertension Treatment— Treatment for hypertension comes in many forms, from lifestyle changes to medication. Learn more from this overview about how to lower blood pressure.

High Blood Pressure— Your doctor has hundreds of different high blood pressure drugs to choose from. These medications work in a variety of ways to lower blood pressure.

Calcium Channel Blocker— Calcium channel blockers are drugs used to lower blood pressure. They work by slowing the movements of calcium into the cells of the heart and blood vessel walls, which makes it easier for the heart to pump and widens blood vessels.

ACE inhibitors Angiotensin converting enzyme (ACE) in hibitors are high blood pressure drugs that wider or dilate your blood vessels to improve the amount of blood your heart pumps and lower blood pressure.

Angiotensin II Receptor blockers (ARBS) Angiotensin II receptor blockers (ARBS) have the same effects as ACE inhibitors, another type of blood pressure drug, but work by a different mechanism.

Alternative Treatments for Hypertension— There are many types of complementary and alternative treatments believed to be effective for treating hypertension. Get the facts on your options.

Omega- 3 Fish oil Supplements— Dietary fish and fish oil supplements have benefits for healthy people and people with high blood pressure and heart disease alike.

High blood Pressure and Smoking— People who smoking are more likely to develop problems like high blood pressure and heart disease. Learn more and get tips on quitting and avoiding relapes.

Hypertension Management : In home blood Pressure monitoring— Monitoring your own blood pressure is a good way to keep on top of hypertension. Get tips on how to prepare, and step by step instructions for taking your own blood pressure readings.

❑❑

Parents

–Rajat Jaiswal
D.Pharm. Final Year

Love your parents and treat them with loving care.

For you will only know their value when you see their empty chair.

Poem

माँ तू कितनी अच्छी है
भूख मुझे जब लगती है
जब मै
जब मै
माँ मेरे मित्रों में सबसे, पहले तू आती है
पापा का है
जै
माँ की ममता सबसे प्यारी
सबसे सुन्दर सबसे न्यारी

Thoughts

1. जिस दिन तुम्हारे कारण माँ–बाप की आँखों में आँसू आते है
   याद रखना उस दिन तुम्हारा किया सारा धर्म आँसू में बह जाता है
2. पता नहीं क्या जादू है
   जितना झुकता हूँ उतना ही ऊपर जाता हूँ।।
3. जब एक रोटी के चार टुकड़े हों! औ वाले पाँच
   तब मुझे भूख नहीं है है

❑❑

❑❑

भारत में आतंकवाद के बढ़ते कदम

—रजनीश सिंह पटेल
बी. एस-सी, (एजी.) प्रथमवर्ष

मनुष्य भय से निष्क्रिय औ
जाता है
असामाजिक तत्त्व अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति करने का प्रयास करने लगते है
साधनों का प्रयोग करते है
का आधार है
है
है
समाज अथवा राजनीति का समर्थन कराना होता है
शासन का विरोध करने में कदापि नहीं हिचकिचाते तथा जनता को अपनी बात मनवाने के लिए विवश करते रहते है

आतंकवाद का अर्थ 'आतंक + वाद' से बने इस शब्द का समान अर्थ है
अंग्रेजी के टेररिज्म शब्द का हिन्दी रूपान्तर है
का अर्थ होता है
है
विश्वास रखती है
समुदाय को भयभीत करने औ
स्थापित करने की दृष्टि से किया जाता है
यह नहीं जानते है
कौ
जिन्दगी को जिन्दगी का पै

आजकल लगभग सम्पूर्ण विश्व में सक्रिय है
विकसित देशों में आतंकवाद की प्रवृत्ति ने विकराल रूप ले लिया है
लिये है
संगठनों ने आतंकवादी हिंसा फै
अधिकारियों को मौ

अन्ततः मेरा अपना व्यक्तिगत विचार है निर्भीकतापूर्वक आतंकवाद का सामना कर उसका विरोध करना होगा, तभी यह समस्या समाज से समाप्त हो सकेगी।

❑

अलफाजे परवाज है

—पूजा कनौ
डी. एल. एड्. प्रथम वर्ष

गुलामी परम्पराओं की जंजीरों से जकड़ी
धर्म के ठेकेदारों ने नारी मुक्ति थी पकड़ी
परवाज भरती नारी के पंख देख मर्द बड़े हताश
नारी ताड़न की अधिकारी, सदा रहती रीत यही काश
अरे नादानों! बंदूकें उठाकर बस दर्द ही मिलेगा
नारी पढ़ाकर जमीं पर स्वर्ग खिलेगा
एक गुरु, छात्र, कलम, किताब ही काफी पलटने को इतिहास

जीने का अधिकार दो बेटियों को, खुली हवा में साँस
अलफाज है
अनपढ़ता के अंधकार से निकला सूरज सा उजाला
किताबे कलम की लौ
बेटियाँ अब स्कूल जायेंगी, भै
थमा दो कलम दवात, जगा दो उमंगे जज्बात
सफल होता वही वतन, नारी सशक्तीकरण जिसका प्रयत्न
एक समान पोषण तालीम बेटा बेटी का करो भरपूर जतन
नारी शक्ति ही बुलन्दियों पे ले जाती है

❑❑

ग्लोबल वार्मिंग

—अंकित कुमार सिंह
बी. टी. सी. तृतीय सेमेस्टर

ग्लोबल वार्मिंग वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं
में प्रमुख है
वाली वृद्धि से है
'वालेस बोटकर' ने इस शब्द का प्रयोग ग्रीन हाउस
गै
वार्मिंग के लिए ग्रीन हाउस गै
ग्रीन हाउस गै CO_2)
मिथेन (CH_4), क्लोरो फ्लोरो कार्बन (C.F.C.)
हाइड्रोफ्लोरो कार्बन प्रमुख है
ग्रीन हाउस गै CO_2) को
वायुमण्डल में पार्थिव विकिरण के लिए अपारगम्यता
के कारण अधिक खतरनाक माना जाता है
औ
पदार्थों का प्रतिवर्ष उत्सर्जन होता है
में योगदान करने वाले देश क्रमशः चीन (22%),
अमेरिका (20%), भारत (5.5%) है
का अधिक से अधिक प्रयोग ग्रीन हाउस गै
उत्तरदायी है
वृद्धि हुई है 3ºC वृद्धि की
सम्भावना है
जल स्तर में वृद्धि होने से अनेक द्वीप नष्ट हो जायेंगे।
खाद्यान्न उत्पादन में गिरावट आयेगी। जलवायु में
परिवर्तन के कारण पर्यावरणीय तन्त्र प्रभावित होगा।
UNO की 'टर्न डाउन द हीट-कान्फ्रन्टिंग द न्यू क्लाइमेट
नार्मल रिपोर्ट' में ग्लोबल वार्मिंग को खाद्यान्न संकट
तथा गरीबी हेतु जिम्मेदार माना गया है

IPCC की रिपोर्ट— पिछले 100 वर्षों में 0.74ºC
पृथ्वी का ताप बढ़ा है

डॉ. के. एस. राव कमेटी— CSO द्वारा गठित
इस रिपोर्ट में पिछले 100 वर्षों में भारत की धरती का
ताप 0.4ºC बढ़ा औ
उत्पादन में 40-50 टन खाद्यान्न की कमी होगी तथा
प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ेंगी।

एक अध्ययन के अनुसार प्रति एक सेल्सियस
(1º) तापमान की वृद्धि से दक्षिण पूर्वी एशिया में
चावल का उत्पादन 5% कम हो जायेगा।

❑

स्वच्छ भारत अभियान

—दिलीप कुमार
डी.एल.एड्. (प्रथम सेमेस्टर)

भारत को स्वच्छ बनाना है
भारत को ऊँचा उठाना है
हम सबको ही मिल करके
बीड़ा यही उठाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है
भारत को ऊँचा उठाना है
होगा जब ये भारत स्वच्छ
सब जन होंगे तभी स्वस्थ
सबको यही समझाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है
गंगा मां के जल को भी
यमुना मां के जल को भी
मोती-सा फिर चमकाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है
आओ मिलकर करें संकल्प
होना मन में कोई विकल्प
गन्दगी को दूर भगाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है
सत्य अहिंसा न्याय को लाकर
सबके दिल में प्यार जगाकर
स्वर्ग को धरा पर लाना है
भारत को स्वच्छ बनाना है
भारत को ऊँचा उठाना है

❖❖❖

कॉलेज की महिमा

—मनीषा यादव
बी०टी०सी० (प्रथम सेमेस्टर)
श्री साईंराम इंस्टीट्यूट

आओ छात्रों तुम्हें सुनायें श्री साईं राम इंस्टीट्यूट कालेज की बात।
यह मंदिर है
सड़क किनारे बना हुआ है
प्राचार्य औ
ज्ञानी औ
विषय-विषय के होते ज्ञाता भलीभाँति वे समझाते है
अवनीश शुक्ला सर को देखों शिक्षण अधिगम का सिद्धान्त पढ़ाते है
छात्र सभी कक्षा में पढ़ने तत्परता से आते है
पी. एन. सर को देखो गणित के ज्ञाता है
कै
क्षमा करें सब गुरुजन मिलकर जिनकी महिमा कही न जात।
यह मन्दिर है

❑❑

पिता क्या है

—सारिका मिश्रा
बी०टी०सी० (प्रथम सेमेस्टर)
श्री साईंराम इंस्टीट्यूट

पिता, पिता जीवन है
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है
पिता अंगुली पकड़े व बच्चे का सहारा है
पिता कभी कुछ खट्टा कभी खारा है
पिता, पिता पालन है
पिता रोटी है
पिता छोटे से परिन्दे का बड़ा आसमान है
पिता अप्रदर्शित अनन्त प्यार है
पिता है
पिता से ही बच्चों के ढेर सारे सपने है
पिता है
पिता से ही परिवार में प्रतिपल राग है
पिता से ही माँ की बिन्दी औ
पिता परमात्मा की जगत के प्रति आसक्ति है
पिता गृहस्थ आश्रम में उच्च स्थिति की भक्ति है
पिता अपनी इच्छाओं का हनन औ
पिता रक्त निगले हुए संस्कारों की मूर्ति है
पिता, पिता एक जीवन को जीवन का दान है
पिता दुनिया दिखाने का अहसान है

❑❑

अब नारी नहीं अबला

—शै
डी. एल. एड्. (प्रथम वर्ष)

महिला के अपमान से, झुक रही देश की शान,
सड़क पर चलना, मुश्किल है
माँ बाप भी डरते है
अब संग्राम है
आत्मरक्षा स्वयं कर सके, फै
नहीं किसी को हक है
दुनिया का हर बोझ उठाये, दुनिया के ठेकेदारों,
क्यों तुम अबला समझ रहे इसे, ये है
नहीं अपमान की अधिकारी, प्रेम औ
बेटी से माँ बनी, जीवन का दिया बलिदान
इसका कुछ तो मोह पहचान।

❑❑

माँ की ममता

—मार्कण्डेय सिंह
डी०एल०एड्० (प्रथमवर्ष)

ममता से बढ़कर जग में, नहीं है
अपने माँ के प्रेम को तुम, यूँ ही मत ठुकराना।
माँ ही होती जन्मदात्री, उसका प्रेम है
करके दिखा दो बच्चों तुम भी, उनके लिए कुछ अच्छा।
तुमको सब कुछ खिला-खिलाकर वह खुद भूखी रहती है
तुमको दूध से सींच-सींचकर, वह खुद सूखी रहती है
ममता से बढ़कर इस जग में, नहीं है
अपने माँ के प्रेम को तुम, यूँ ही मत ठुकराना।
उसने तुमको पाला पोस, भले उसका धर्म है
उसके लिए कुछ करना भी तो तुम्हारा कर्म है

❖❖❖

जिन्दगी

—किरन मौ
डी०एल०एड्०
हेमराज वर्मा टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट

हारना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई अपनों से हो
औ
जब लड़ाई अपने आप से हो!
मंजिले मिले या तो मुकद्दर की बात है
हम कोशिश ही न करें ये तो गलत बात है
किसी ने बर्फ से पूछा कि,
आप इतने ठंडे क्यों हो?
बर्फ ने बड़ा अच्छा जवाब दिया-
"मेरा अतीत भी पानी
मेरा भविष्य भी पानी....."
फिर गरमी किस बात पे रखूँ।

❖❖❖

माँ

—किरन मौ
डी०एल०एड्०

1. जब चलते चलते,
मेरे पाँव थक जाते है
लापरवाही से,
मेरे घाव पक जाते है
बह जाते है
अपने सब।
ढह जाते है
सपने सब।
जब दिल के समन्दर में,
भीषण बाढ़ आती है
सच बताऊँ दोस्तों,
तब 'माँ' बहुत याद आती है

2. घुटनों से रेंगते-रेंगते,
कब पै
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वै
मै
प्यार ये तेरा कै
सीधा-साधा भोला भाला
मै
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
'माँ' मै

❖❖❖

माँ की याद

–रेनू गुप्ता
डी०एल०एड्० (प्रथम सेमेस्टर)
श्री साईंराम इंस्टीट्यूट

आज यूँ बै
कही से माँ की याद दिल को छूने चली आयी है
वो आँचल से उसका मुँह पोंछना, औ
रसोई से आती खुशबू, आज फिर मुँह में पानी ले आई है
बना लिया है
बन गई हूँ मै
फिर भी न जाने क्यूँ आज मन उछल रहा है
बन जाऊँ मै
सोचती हूँ, है
नाक पर फिसलती ऐनक की परवाह किये बिना
पर अब सुनेगी कि रो रही है
फट से कहेगी, "बस कर रोना अब तो हो गई बड़ी"
फिर प्यार से ले लेगी अपनी बाँहों में मुझको
एक एहसास दे देगी खुदाई का इस दुनिया में
जाड़े के नम धूप की तरह, आगोश में ले लिया उसने
इस ख्याल से रुक गये आँसू
औ
धन पराया होकर भी, बेटी होती नहीं परायी।
इसलिए बिन रोये माँ-बाप, बेटी की करते नहीं विदाई।।

❖❖❖

हसीन जिन्दगी

—राहुल कुमार
डी. एल. एड्. प्रथम सेमेस्टर

एक दिन जिंदगी फिर हसीन हो जायेगी
उस दिन हर ख्वाहिश पूरी हो जायेगी
जिन्दगी से नाता न तोड़ना कभी।
काली रात के बाद फिर सुबह हो जायेगी।

एक दिन जिंदगी तुम्हें फिर अपनायेगी
उस दिन पराये लोगों को भी अपना बनायेगी
जिंदगी से नाता न तोड़ना कभी
काली रात के बाद फिर सुबह हो जायेगी।

एक दिन जिंदगी फिर मुस्करायेगी
उस दिन पूरी दुनिया तुम्हारे कदमों में झुक जायेगी
जिन्दगी से नाता न तोड़ना कभी
काली रात के बाद फिर सुबह हो जायेगी।

एक दिन जिंदगी फिर हसीन हो जायेगी
उस दिन हर ख्वाहिश पूरी हो जायेगी
जिन्दगी से नाता न तोड़ना कभी
काली रात के बाद फिर सुबह हो जायेगी।

❖❖❖

नौ

—साधना सिंह
डी. एल. एड्. प्रथम वर्ष
श्री साईंराम इंस्टीट्यूट

बड़ी हसीन होगी तू ऐ! नौ
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है
सुख-चै
सारी रात जगकर पन्ने पलटते है
दिन में तहरी औ
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है
अंजान शहर में छोटा सस्ता रूम लेकर
किचन, बेडरूम सब उसी में सहेज कर
चाहत में तेरी अपने माँ-बाप औ
दोस्ती से दूर रहते है
सारे युवा आज तुझपे मरते है
राशन की गठरी सिर पे उठाये
अपनी मायूसी औ
छुपाये खचाखच भारी ट्रेन में बिना
टिकट के रिस्क लेके आज सफर करते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है
इण्टरनेट, अखबारों में तुझको तलाशते
तेरे लिए पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते-पढ़ते
बत्तीस साल तक के जवान कुँवारे फिरते है
तू कितनी हसीन है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

❖❖❖

तीन नियम

— गोल्डी
डी. एल. एड्. (प्रथम सेमेस्टर)
श्री साईं राम इंस्टीट्यूट

1. जिन्दगी में हमेशा सब कुछ अच्छा औ
कहाँ होता है
जिन्दगी पूरी तरह परफेक्ट न होती है
नौ
रहती है
जा सकता है
हमें बिल्कुल सही नहीं कर देतीं। वे केवल हमारी गलतियों को कम कर देती है
2. कुछ नया करने की चाहत रखने वाले सवालों से नहीं डरते। थोड़ी जमीन मिलते ही वे जिज्ञासाओं के पंख फै
दूसरों से सवाल पूछते है
भी सवाल करते है
औ
सिड्रोम के लेखक मार्टी रूबिन कहते है
की राह में दिक्कत ही यह है
हम नहीं जानते।'
3. हम सब पै
रास्ते व अनिश्चितताएँ हमें डराते है
भावना से घिरे हम सुरक्षित रास्तों की ओर भागते रहते है
होने का सुख ही है
सकते है
"जो भी दिल में उलझा हुआ पड़ा है
धै

❖❖❖

मजेदार चुटकुले

— बबिता वर्मा
डी. एल. एड्. (प्रथम सेमेस्टर)
श्री साईं राम इंस्टीट्यूट

1. अध्यापक— 'दीपक' तुम्हारा नाम तो दीपक है
दीपक— श्रीमान जी! क्योंकि दीपक तले अँधेरा ही रहता है
2. पुत्र— पिताजी मुझे ढोल ला दो।
पिताजी— नहीं, तू ढोल बजाकर तंग किया करेगा।
पुत्र— नहीं, पिताजी आप सो जाया करोगे तब बजाऊँगा।
3. एक मित्र— (अपने दूसरे मित्र से) अरे यार, नाली से बड़ी दुर्गन्ध आती है
दूसरा मित्र— आपको कै

पहला मित्र– नाक से

दूसरा मित्र– (हँसते हुए) तो अपनी नाक में फिनायल क्यों नहीं छिड़कवा लेते।

4. अध्यापक– रमेश अभी तक तुमने सवाल हल नहीं किया।

रमेश– जी अभी तक मुझे नकल करने का चान्स ही नहीं मिला।

5. अध्यापक– अगर दिन में सूर्य न निकले तो क्या नुकसान होगा?

एक छात्र– जी, बिजली का खर्च बढ़ जायेगा।

6. राजू– यार अमन! ये डाक्टर पर्चे पर क्या लिखता है

अमन– क्या तुम्हें नहीं पता?

राजू– नहीं।

अमन– डाक्टर यह लिखता है

7. एक चींटी बहुत हड़बड़ी में जा रही थी, उससे दूसरी चींटी ने कहा– बहन कहाँ जा रही हो?

चींटी ने उत्तर दिया– हाथी भाई का एक्सीडेण्ट हो गया। मै

8. एक देहाती आदमी को अंग्रेजी बोलने का बहुत शौ

औ

एक दिन वह एक बाग में बै

जी तुमने मेरी चाभी ली है

जाट ने कहा दे दो, देहाती ने जवाब दिया 'नो'। इस पर जाट को बेहद गुस्सा आया तो उसने जोर से एक थप्पड़ देहाती को मार दिया तो देहाती ने बड़े इत्मीनान से कहा, 'थै

9. टीचर ने बच्चों से कहा– कल ए. बी. सी. डी. याद करके आना है

बच्चों ने कहा– यस मै

एक लड़का जा रहा था, बोर्ड पर लिखा था– हीरो! वह बच्चा हीरो याद कर लिया। एक कबाड़ी वाला जा रहा था। वह कह रहा था टूटे-फूटे टीन के डिब्बे वह वो भी याद कर लिया।

तब एक आदमी फोन से बात कर रहा था– आज नहीं डार्लिंग कल चलेंगे। वह भी याद कर लिया।

वह लड़का क्लास में शै

लड़का– हीरो।

मै इस स्कूल को क्या समझते हो?

लड़का– टूटे-फूटे टीन के डिब्बे।

मै

लड़का– आज नहीं डार्लिंग कल चलेंगे।

❖❖❖

मच्छर हितोपदेश

—महीप कुमार
बी. एस-सी. (एजी.) प्रथम वर्ष

चौ

एक समय बै
पाछिल पाठ लेहु दोहराई। पढ़त-पढ़त पहुँचेंन गहराई।।
तबहीं कान मोहिं एक तराना। भन-भन-भन-भन गूँज सुहाना।।
समुझत मोहिं लागि नहीं देरी। मच्छर दद्दा कीन्हेन फेरी।।
तबही कहेन्ह सुनहु हो दद्दू। तबला बनय काट करि कद्दू।।
आपन वंश कहहु फकीजा। क्यूलेक्स या एनाफिलीजा।।
मित्र तुम्हार कहाँ खटकीरा। अबही नाहि लगाइन चीरा।।
उनके काटे तनिक खुजावै

मच्छर

गारी जिन मोहि दीजे भ्राता। मोहि ते तोर खून करि नाता।।
नेतन ते नित खून चुसावै

दोहा

एक बूंद अंशशत, खून चूसि हम दुष्ट।
नेता चूसै

❑❑

मै

—शिल्पा शर्मा
बी०टी०सी० (प्रथम सेमेस्टर)

शाम हो गयी अभी तो घूमने चलो न पापा
चलते चलते थक गई कन्धे पर बिठा लो न पापा
अँधेरे से डर लगता है
मम्मा तो सो गई
आप ही थपकी देकर सुलाओ न पापा
स्कूल तो पूरी हो गई
अब कॉलेज जाने दो न पापा
पाल-पोस कर बड़ा किया
अब जुदा तो मत करो न पापा
जब डोली में बिठा ही दिया तो
आँसू तो मत बहाओ न पापा
आपकी मुस्कुराहट अच्छी है
एक बार मुस्कुराओ न पापा
आपने मेरी हर बात मानी
एक बात औ
इस धरती पर बोझ नहीं मै
दुनिया को समझाओ न पापा

❑❑

साहस

—हर्षिता तिवारी
डी. एल. एड्. (प्रथम सेमेस्टर)
श्री साईंराम इंस्टीट्यूट

तूफानों की तरह पहाड़ों से टकराओ
लहरों में भी माँझी पार लगाओ
नन्हीं चींटी की तरह तुम संघर्ष करते जाओ
यही जीवन का लक्ष्य बनाओ
मोती नहीं मिलते सहेज सिन्धु की गहराई में
बढ़ता है
कभी परिश्रम करने वालों की मेहनत बेकार नहीं होती
तूफानों से टकराने वालों की कभी हार नहीं होती
श्वास बिन निष्प्राण होकर व्यर्थ जो जीवन लगे
ध्यान रखो इतना साहस औ
एक क्षण भी जब जीवन दु:खी व्यर्थ लगे
किन्तु अगले क्षण हिम्मत न छोड़ो तुम
फिर तुम्हें तूफान भी मान अभिनन्दन लगे।

❖❖❖

नौ

—राजकुमार
बी. टी. सी. प्रथम सेमेस्टर

बड़ी हसीन होगी तू ऐ! नौ
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है
सुख-चै
सारी रात जगकर पन्ने पलटते है
दिन में तहरी औ
आधे पेट ही खाकर तेरा नाम जपते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है
अंजान शहर में छोटा सस्ता रूम लेकर
किचन, बेडरूम सब उसी में सहेज कर
चाहत में तेरी अपने माँ-बाप औ
दोस्ती से दूर रहते है
सारे युवा आज तुझी पे मरते है
राशन की गठरी सिर पे उठाये
अपनी मायूसी औ
छुपाये खचाखच भरी ट्रेन में बिना
टिकट के रिस्क लेके आज सफर करते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है
इण्टरनेट, अखबारों में तुझको तलाशते
तेरे लिए पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते-पढ़ते
बत्तीस साल तक के जवान कुँवारे फिरते है
तू कितनी हसीन है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

❖❖❖

महिला सशक्तीकरण

—रजनी वर्मा
बी. एड्. प्रथमवर्ष

"महिला सशक्तीकरण" से तात्पर्य किसी महिला की उस क्षमता से है
है
सके। महिला सशक्तीकरण में हम उस क्षमता की बात कर रहे है
बँधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों की निर्माता खुद हो।

जब आप एक आदमी को शिक्षित करते है
आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते है
लेकिन आप एक स्त्री को शिक्षित करते है
तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते है

'शिक्षा' जीवन में प्रगति करने का एक शक्तिशाली उपकरण है
शिक्षा एक बेहतर तरीका है

अपनी निजी स्वतंत्रता औ
के लिए महिलाओं को अधिकार देना चाहिए। महिलाओं को स्वच्छ औ
कि वो हर क्षेत्र में अपना खुद का फै
वो स्वयं देश, परिवार या समाज किसी के लिए भी हो।

स्त्रियों की मान-हानि साक्षात् लक्ष्मी औ सरस्वती की मान-हानि है

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों औ
उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरूरी है
दहेज- प्रथा, अशिक्षा, असमानता महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, मानव तस्करी औ
सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक अन्तर को दूर करना जरूरी है

भारत के संविधान में उल्लिखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाने का सबसे प्रभावशाली उपाय है
तरह की बुराइयों को मिटाने के लिए लै
को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा मिला है

महिला सशक्तीकरण में ये ताकत है
में किसी समस्या को पुरुषों से बेहतर ढंग से निपट सकती है
परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रबन्धन करने में पूरी तरह से सक्षम है

शास्त्रों में ये कहा गया है

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रै

अर्थात् जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है
प्रकार के देवी-देवताओं का निवास होता है
में स्त्रियों का अपमान होता है
पूजा करने के बाद भी भगवान् निवास नहीं करते है

अतः महिलाओं के उत्थान के लिए महिला सशक्तीकरण आवश्यक है

❖❖❖

महिला सशक्तीकरण

—ज्योति तिवारी
बी. टी. सी.
श्री साईंराम इंस्टीट्यूट

"महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य महिलाओं की
उस क्षमता से है
स्वयं ले सके।

प्राचीन समय से ही भारत में महिलाएँ अग्रणी भूमिका निभाती थीं। उन्हें हर क्षेत्र में हस्तक्षेप की इजाजत थी। भारतीय इतिहास की बात करें तो गार्गी, अपाला औ
स्थान प्राप्त था लेकिन जै
समाज पुरुष सत्तात्मक होता गया।

"सशक्त नारी से ही बनेगा सशक्त समाज।"

पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य "लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना जरूरी है
परिवार आगे बढ़ता है
बढ़ता है
भारत में सबसे पहले महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उनका जागरूक होना बहुत जरूरी है
महिलाओं को दहेज प्रथा, बलात्कार घरेलू हिंसा वै
करना पड़ता है

"नारी का करो सम्मान, तभी बनेगा देश महान्।"

लै
है
रही है
महिला सशक्तीकरण में तेजी लाने की आवश्यकता है

"बराबरी का साथ निभायें
महिलाएँ अब आगे आयें।"

भारत एक प्रसिद्ध देश है एकता" के मुहावरे को सिद्ध किया है
समाज में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते है
प्राचीन भारतीय समाज में अन्य भेदभावपूर्ण रिवाजों के साथ, सतीप्रथा, दहेजप्रथा, पर्दाप्रथा, बाल विवाह आदि परम्परा थी। महान् समाज सुधारक 'राजा राममोहन राय' की लाख कोशिशों के बाद सती प्रथा को खत्म करने को अंग्रेज मजबूर हुए। भारत में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिए 'ईश्वर चन्द्र विद्यासागर' ने अपने लगातार प्रयास से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम '1856' की शुरुआत करवाई।

महिला सशक्तीकरण में वह ताकत है
समाज औ
समस्या को पुरुषों से बेहतर ढंग से निपट सकती है
अच्छे पारिवारिक संयोजन से वे देश औ
आर्थिक स्थिति का प्रबन्धन करने में पूरी तरह सक्षम है

"अबला नहीं है
संघर्ष रहेगा हमारा जारी"

पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं को सशक्तीकरण का फायदा मिला है
उनका मनचाहा मुकाम हासिल हो रहा है
भी महिलाओं को उचित मौ
अपना सम्पूर्ण योगदान दिया S. B. I. की CEO "अरुन्धती भट्टाचार्य" ICICI बै CEO "चन्दा कोचर" पेप्सिको की "इन्दिरा नुई" इत्यादि ने पूरे विश्व में अपनी सफलता परचम लहराया है
घर-परिवार के साथ-साथ राजनीति को संभाल रही है
चाहे वो भारत की प्रथम महिला विदेशमंत्री "सुषमा स्वराज" हों या प्रथम महिला रक्षामंत्री "निर्मला सीतारमण"

हों। महिलाओं को जिस क्षेत्र की जिम्मेदारी दी गयी उसे उन्होंने ईमानदारी से निभाया है
छिल्लर" इसका नवीनतम उदाहरण है

"मै
मौ

लेकिन आज भी महिलाओं की स्थिति उतनी बेहतर नहीं है
कहीं पुरुषवादी सोच जिम्मेदार है
कमजोर समझते है
राह में बाधाएँ डालते है
दूर करना होगा औ
महिला जागरूक व शिक्षित हो।

भारतीय सरकार द्वारा शुरुआत की गयी महिलाओं की सशक्तीकरण के लिए राष्ट्रीय मिशन के अनुसार 2011 की गणना में कुछ सुधार आया। लेकिन फिर भी आर्थिक भागीदारी, उच्च शिक्षा औ
द्वारा समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता है
की समस्या का उचित समाधान करने के लिए 'महिला आरक्षण बिल' 108वाँ संविधान संशोधन का पास होना अति आवश्यक है
हिस्सेदारी को सुनिश्चित करता है
के सपने को सच करने के लिए लड़कियों के महत्त्व औ
है
के लिए महिलाओं के खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना होगा जरूरत है
प्रति अपनी सोच को बदलें औ
प्रावधानों में भी बदलाव लायें।

"कोमल है
सबको जीवन देने वाली मौ

❖❖❖

जिन्दगी की अहमियत

–रोली भारती
डी. एल. एड्. प्रथम सेमेस्टर

क्या खूब लिखा है
बख्श देता है
जिनकी किस्मत खराब होती है
वो हरगिज नहीं बख्शे जाते,
जिनकी नियत खराब होती है
ना मेरा एक होगा, ना तेरा लाख होगा
ना तारीफ तेरी होगी, ना मजाक मेरा होगा।
गुरूर न कर साहे शरीर का,
तेरा भी खाक होगा, मेरा भी खाक होगा।
दुनिया में ब्राण्डेड-ब्राण्डेड करने वालों,
ये मत भूलना,
कफन का कोई ब्राण्ड नहीं होता।
कोई रोकर दिल बहलाता
तो कोई हँसकर दर्द छुपाता।
क्या करामात है
जिन्दा इन्सान पानी में डूब जाता है
औ
मौ
पर वह शायद बहुत खूबसूरत होगी
कमबख्त जो भी उससे मिलता है
जीना छोड़ देता है
इसीलिए हँसते-खेलते, मिलते-जुलते
एक-दूसरे से बातें करते रहो यारों,
न जाने कौ
न जाने कौ

❑❑

एक अकेली लड़की

—अमित कुमार
बी. टी. सी. (तृतीय सेमेस्टर)

एक लड़की रात को ऑफिस से वापस लौ
थी। देर भी हो गयी थी, पहली बार ऐसा हुआ औ
भी ज्यादा था तो टाइम का पता नहीं चला वो सीधे आटो स्टै
देखकर डर गयी कि कहीं ये लड़का उल्टा-सीधा न बोले तभी वो लड़का पास आया औ
मौ
गाड़ी नहीं मिल जाती मै
वहाँ से एक आटो वाला गुजर रहा था लड़की को अकेली लड़के के साथ देखा तो तुरन्त आटो रोक दिया औ
देता हूँ लड़की आटो में बै
बोला— तुम मेरी बेटी जै
अकेला देखा तो आटो रोक दिया, आजकल जमाना खराब है
होती है
थी अब वो आटो से उतर चुकी थी औ
चला गया लेकिन अब भी लड़की को दो-दो अँधेरी गलियों से होकर गुजरना था। वहाँ से चलकर जाना था तभी वहाँ से साइकिल वाला गुजर रहा था शायद वो भी काम से घर की ओर जा रहा था। लड़की को अकेली देखकर कहा— आओ मै
एक टार्च लेकर उस लड़की के साथ अँधेरी गली की ओर निकल पड़ा अब वो लड़की घर पहुँच चुकी थी। आज किसी की बेटी बहन घर सही सलामत पहुँच चुकी थी। मेरे भारत को तलाश है

1. एक लड़का जो आटो स्टै
2. वो आटो वाला औ
3. साइकिल वाला

जिस दिन ये तीन लोग मिल जायेंगे उस दिन मेरे भारत में रेप होना बन्द हो जायेगा, तभी आयेंगे अच्छे दिन औ

माँ पर कविता

—बिन्देश्वरी वर्मा
बी. एड्. प्रथमवर्ष

घुटनों से रेंगते-रेंगते,
कब पै
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ,
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वै
मै
माँ प्यार ये तेरा कै
सीधा-साधा भोला भाला,
मै
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
'माँ' मै

❖❖❖

दोस्ती पर 'अनमोल वचन'

—पुष्पा निषाद
डी. एल. एड्. प्रथम सेमेस्टर

मित्र वो होता है
औ
मित्रता दो शरीरों में रहने वाली
एक आत्मा है
एक सच्चा दोस्त कभी आपके
रास्ते में नहीं आता जब तक कि
आप गलत रास्ते पे न जा रहे हों।
जिसके सब दोस्त होते है
उसका कोई दोस्त नहीं होता
मित्र वो है
आपके साथ खड़ा है
उसे कहीं औ
दोस्त औ
वहाँ ले जायेंगे जहाँ दौ
नहीं ले जा पायेगी।

सभी के साथ विनम्र रहिये, पर कुछ के साथ ही
घनिष्ठता बनाइए औ
करने से पहले अच्छी तरह से जाँच लीजिए
स्वयं के साथ दोस्ती सब से महत्त्वपूर्ण है
बिना कोई इस दुनिया में किसी औ
मित्र नहीं बन सकता।
मित्र संकट के समय प्रेम दिखाते है
अगर आप के पास एक सच्चा दोस्त है
तो आप के पास अपने हिस्से से अधिक है
अगर कोई शादी, एक अच्छी शादी की तरह
लगती है
वह मुहब्बत के बजाय दोस्ती होती है

❑

पिता

—संजना
डी. एल. एड्. प्रथम सेमेस्टर

घर की खुशियाँ जुड़ी है
जो अपना फर्ज निभाता है
सिंदूर है
परिवार पर जान जो लुटाता है
गम किसी को न होने देता
अपना हर दर्द छिपाता है
जिसके नाम से नाम हमारा
वही पिता कहलाता है

माँ देती है
अनुशासन पिता सिखाता है
दिल में प्यार बहुत होता
जीवन में समस्या हो कोई
वो उसका हल ढूँढ़ लाता है
जिसके नाम से नाम हमारा
वही पिता कहलाता है

❖❖❖

बेटी बचाओ

—पूजा कनौ
डी. एल. एड्. प्रथम वर्ष

मै
पत्थर नहीं इन्सान हूँ।
कोमल मन है
वही भोला-सा है
जज़्बातों में जीती हूँ।
बेटा नहीं पर बेटी हूँ।
कै
जीवन के पहले ही मिटा दिया
तुझ से ही बनी हूँ।
बस प्यार की भूखी हूँ।
जीवन पार लगा दूँगी।
अपना लो, मै
दिया नहीं कोई मौ
बस पराया बनाकर सोचा
एक बार गले से लगा लो
फिर चाहे हर कदम आज़मा लो।

❖❖❖

What is the Imagination Power?

—*Shrikant Joshi*
BBA Ist Semester

Imagination power is the boon of God, which is given everybody in his mind. For example if we talk about the children then we will find that their thoughts are in the changing mode. At first they imagine a situation in which they find themsleves in the world of dream, the world of angels, the world of cartoons etc. Means at every second they think about a new thing. This is the imagination power. But when they grow-up, when it depends matured then slowly-slowly they that what they want to be? means they decide their aim, which is very important.

If we want to decide our aim then we have to think or imagine that in which field we are intrested. But you should have to think you should have to take a pause and after it you should have to do the work on that imagination. Yes to achieve the success it is not enough that you can imagine, but you should have to do hard-work for your imagination, if you went to accomplish needs.

When we find ourselves in dreams (world of thoughts, imagination) like we have complained our goal and after open our eyes we find ourselve very happy, because at least for sometimes we find ourselves newness and that thing motivate us to do more hard work for our decided goal. So it is very important that we imagine something possitive. If we start thinking posstively than it will create a very good impact and good future of us.

Our imagination power is the biggest weapon of our body. If we can imagine something good then we can also make it possible.

❖❖❖

❑

घायल सैनिक का पत्र

—तरुण सिंह
बी.एस-सी. (ए. जी.) लै

माँ तुम्हारा लाडला रण में अभी घायल हुआ है
पर देख उसकी वीरता को शत्रु भी कायल हुआ है
रक्त ही होली रचाकर मै
माँ उसी शोणित से तुमको पत्र अंतिम लिख रहा हूँ।
युद्ध भीषण था, मगर इंच न पीछे हटा हूँ,
माँ तुम्हारी थी शपथ, मै
एक गोली वक्ष पर कुछ देर पहले-पहले ही लगी है
माँ कसम दी थी जो तुमने, आज मै
छा रहा है
पर उसी में दिख रहा है
कह रहे है
लग रहा है
यह न सोचो माँ कि मै
माँ तुम्हारी कोख से फिर जन्म लेने आ रहा हूँ।।

❖❖❖

माँ

—राहुल कुमार
डी. एल. एड्. (प्रथम सेमेस्टर)

घुटनों से रेंगते-रेंगते,
ना जाने कब पै
तेरी ममता की छाँव में,
ना जाने कब बड़ा हुआ,
काला टीका दूध-मलाई,
आज भी सब कुछ वै
मै

प्यार ये तेरा कै
सीधा-साधा भोला-भाला
मै
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
'माँ' मै

❖❖❖

गुरु वन्दना

–साहिल सिंह
बी.एस–सी. (ए.जी.) प्रथमवर्ष

गुरुदेव! तुम्हारी पीड़ा के, हम अश्रु बने ढलते जाएँ,
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को हम अखिल विश्व में बिखराये।
उस मन के दर्पण में हर क्षण,
प्रतिबिम्ब तुम्हारा पिता हँसे।
हर भाव तुम्हारा अर्चन हो,
अंतर में पावन रूप बसे।।
पूजा–प्रकाश तम में डूबी मानवता तक हम पहुचाएँ।
गुरुदेव! तुम्हारी पीड़ा के हम अश्रु बने ढलते जाएँ,
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, हम अखिल विश्व विखराये।
हे करुणा सिन्धु, दयासागर
हममें निज दरद समा देना।
पी सकें हलाहल जनहित में,
वह प्रेम–प्रवाह बहा देना।।
तेरी करुणा की सुरसरि से मुरझाए जग को सरसायें।
गुरूदेव ! तुम्हारी पीड़ा के हम, अश्रु बने ढलते जाएँ,
बन पुष्प तुम्हारी सौरभ को हम अखिल में बिखराएँ।
शुभ ज्योति जलाई जो तुमने,
अपने जीवन की बंसी से।
आलोक लुटाया जीवन भर,
गाकर शुभ गान प्रभावी से।।

❖❖❖

Mathematics

–Priya Gupta

Mathematics is the classification and study of all possible patterns—

1. Most famous mathematician in the world **Carl Friendrich Gauss.**
2. Who is the inventor of algebra- **Diophantus** has traditionally been known as the inventor of and father of algebra but in more recent times there is much debate over whether **al-Khwarizmi** who founded the discipline **of al- fabr,** deserves that title instead.
3. Who invented the zero- **"Zero** and its operation are first defined by (Hindu astronomer and mathematician) Brahama gupta in 628".
4. Who found infinity– **"Infinity.** infinity the concept of something that is unlimited, endless, without bound. The common symbol for infinity ∞, was invented by the English mathematician John Wallis in 1657. There main type of infinity may be distinguished ; the mathematical, the physical, and the metaphysical."
5. Who invented pie in math– **"William Jones** and his circle : the Man who invented Pi. In **1706** a little - known mathematics teacher named **William Jones** first used a symbol to represent the platonic concept of Pi, an ideal that in numberical terms can be approached, but never reached".

Greatest Mathematician in India—

1. Aryabhata
2. Brahma Gupta
3. Srinivasa Ramanujan

The best Mathematicians Alive—

1. Roger Penrose
2. Edword Witten
3. William Thurston

❑

True Thought Leadership Embodies bold Attributes

–Saroj
B.B.A. Vth Semester

Relevent	Deals with big issues your buyers face
Provocative	Challenges conventional thinking
Forward - looking	Anticipates what's coming over the horizon
Distinct	Different from what everyone else is saying
Inspiring	Energizes People about this way of thinking
Actionable	Provides actionable advice on that clients can do now
Results - Driven	Using the ideas can produce breakthrough results
Conversational	The one encourages a dialogue and feedback.
Credible	Your Company can help people get there
Independent	Makes no reference to your Products and Services

❑❑

Women Empowerment

–Shere Saba
B.B.A. I[st] Semester

Women's economics empowerment refers to ability for women to enjoy their right to control and benefits from resources assets income and their own time, as well as the ability to manage risk and improve their economics status and well being.

While often interchangeably used the more comprehensive concept of gender empowerment refers to people of any gender, stressing the distinction between biological sex and gender as a role. It there by also refers to other marginalized genders in a particular political or social context.

Need of Women Empowerment— Land right a key way to economically empower women giving them the confidence they need to tackle gender inegulities often, women in developing nation and underdeveloping legally restricted from their land on the sole basis of gender. Having a right to their land gives women a sort of bargaining power that they wouldn't normally have; in turn, they gain the ability to assest themselves in various aspeats of their life, both in and outside of the home.

In India women have great chance to prove herself because, India is a devotional country as like 'Chanda Kochhar', who is CEO Chief executive office of ICICI Bank she is widly recognised for here rule shaping retail banking in Indian or 'Arundhti Battacharya' who is first women to be the chairman of State Bank of India in 2016 she was rested as the 25th most powerful women in the world by forbes.

As like in many example available in India.

❑

Internet

–Preeti Yadav
B.C.A. I[st] Semester

Internet is a network of computer systems that have been connected to each other using standard communication protocols. Internet gives access to a large volume of precious and useful information.

Internet operations began when the us department of defence connected some computers through optical cable network. These networks also used satellites for transmission of data to far off places.

The internet service is provided by both Government and private organizations.

Internet has given the most exciting mode of communications to all the e-mail. We can send as e-mail to all the corners of the world . The data cost of internet for sending on e-mail is very low. Further Internet can be used to collect information from various websites on different subjects. This information could relate to education, medicins, literature, software, computers, business, entertainment, friendship and leisure. Internet is also used for carrying out business operations and that set of operations is known as Electronic commerce (e- commerce).

❑

Operating System

–Manisha
B.C.A. I[st] Semester

An Operating System is a System Software that manager Computer hardware and software resources and provides common services for computer program.

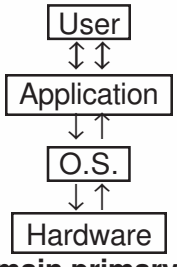

The Two main primary objectives of Operating System

(i) Makes a Computer System easier to use.
(ii) Manage the resources of a Computer System.

Types of Operating System

1. Batch Operating System— The users of a batch operating system to not interact with the computer directly. Each user prepares his job on an offline devices like punchards and submilttes it to the computer operator.

2. Time Sharing Operatin System— Time sharing is a technique which enable many people, located at various terminals, to use a perticular computer system at the same time.

3. Distributed Operating System— Distributed system use multiple cenral proces to serve multiple real time application is multiple user.

4. Network operating System— A Network operating system runs on a server and provides the server the capability to manage data, users, groups, security, application and other networking functions.

5. Real time operating System— A real time operating system is defined as data processing system in which the time interval required to process and respond to inputs is so small that it controls the environment.

6. Single User Operating System— Allow only user to run programs at a time. The most popular example is Ms. Dos used on personal computer.

7. Multi- user Operating System— Allow two or more than two users to run programs at the same time. Some operating system permitt 100 or even 1000 of concurrent users.

Functions of Operating System

1. Memory Management— Memory Management refers to management of primary memory or main memory.

2. Processor Management— In multiprogramming environment OS decides which process gets the processor when and how much time.

3. Device Management— OS manages device communication via their respective drivers. Operating system does the following activities for device management.

4. File Management— A file system is normally organized into directories for easy navigation and usage. These directories may contain files and other directions.

5. Security— By means of passward and similar other techniques, preventing unauthorized access to programs and data.

6. Control Over System Performance— Recording delays between request for a service and response from the

System.

7. Job Accounting— Keeping track of time and resources used by various jobs and users.

8. Error Detecting Aids— Production of dumps, traces, error messages and other debugging and error detecting aids.

❑❑

भारत को मिली एक औ
GST- Goods and Services Tax

—सोमेन्द्र प्रजापति

बी. टी. सी. प्रथम सेमेस्टर

जी. एस. टी. क्या है वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की जरूरत क्यों एक ही वस्तुओं पर विभिन्न प्रकार के अलग-अलग टै

आने से सभी वस्तुओं औ

का टै

आयेगी। हालांकि इससे सेवाओं की लागत बढ़ जायेगी दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण यह होगा कि पूरे भारत में एक ही रेट से टै

औ

प्रारम्भिक इतिहास

- वर्ष 1999 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी के वक्त का विचार सामने आया
- आई. जी. पटेल, सी. रंगराजन, विमल जालान ने सलाह दी थी
- वर्ष 2000 में जी. एस. टी. पर कमेटी बनी
- पहले अध्यक्ष पश्चिम बंगाल के तत्कालीन वित्त मंत्री असीमदास गुप्ता जी थे।
- वर्ष 2007 में राज्यों के वित्त मंत्रियों की इम्पावर्ड कमेटी बनी।
- वर्ष 2011 में जीएसटी को लेकर 115वाँ संशोधन जारी हुआ।
- वर्ष 2013 में सरकार के प्रस्ताव को इम्पावर्ड कमेटी ने खारिज कर दिया।
- वर्ष 2016 में लोकसभा में 122वाँ संशोधन बिल पास हुआ औ
- सरकार ने तय किया कि राज्यों को होने वाले नुकसान की भरपाई केन्द्र सरकार 14% की दर से करेगी।

टै भारत में मुख्य तौ

तरह के टै

प्रत्यक्ष कर— यानी वो टै

आपसे लेती है

अप्रत्यक्ष कर— यानी वो टै

तौ

बहुत सारे कर हो जायेंगे खत्म

जी. एस. टी. लागू होने से बहुत सारे कर खत्म हो जायेंगे—

खत्म होने वाले केन्द्रीय कर

- सेन्ट्रल एक्साइज ड्यूटी
- दवाओं या अन्य उत्पादों पर
- विशेष पहल वाले उत्पादों पर
- एडीशनल ड्यूटी ऑफ कस्टम
- सर्विस टै

खत्म होने वाले राज्य कर

- वै
- सेन्ट्रल टै
- Entertainment tax, lotary tax, Entry tax
- वस्तु एवं सेवाओं पर लगने वाले टै

जी. एस. टी. का आम लोगों पर प्रभाव

- अप्रत्यक्ष करों का भार अन्तिम उपभोक्ता को भरना होगा।
- पूरे भारत में एक ही टै
  लागत में कमी आयेगी।
- वर्तमान में किसी सामान का 30-35% टै
  पड़ता है

जी. एस. टी. टै

- 0%, 5%, 12%, 18%, 28% के जी. एस. टी. स्लै

वस्तु एवं सेवा कर इतना महत्त्वपूर्ण क्यों है

वर्तमान में भारतीय कर संरचना दो भागों में विभाजित है

टै

जा सकती। इसका एक उदाहरण आयकर है

आय अर्जित करते है

का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी है

अप्रत्यक्ष करों के मामले में टै

किसी अन्य व्यक्ति को दी जा सकती है

मतलब यह है

वै

है

भुगतान करता है

जमा कर सके। मतलब ग्राहक न केवल उत्पाद की कीमत का भुगतान करता है

भी देना पड़ता है

को खरीदता है

है

जी. एस. टी. कै

- सीजीएसटी : जहाँ केन्द्र सरकार द्वारा राजस्व एकत्र किया जायेगा।
- एसजीएसटी : राज्य में बिक्री के लिए राज्य सरकारों द्वारा एकत्र किया जायेगा।
- आईजीएसटी : जहाँ अन्तरराज्यीय बिक्री के लिए केन्द्र सरकार द्वारा राजस्व एकत्र किया जायेगा।

❖❖❖

Roles and Challenge to H. R.

–Antima Singh
B.B.A. Vth Semester

2016 Promises to be a Year of sea-change for HR with HR professional and accelerating their embrace of a fact- based and business- oriented midest (see the fifth point in this Josh Bersin).

In this article John Bovdreav envisions the H. R. profession in 2025, as well as the future challenge and opportunities H. R. leaders should prepare for. Boudreau is professor at the Marshall School of Business, and professor and researcher at the center for effective organisation at the university of southern California.

❑

क्या मिलेगा आने वाली पीढ़ी को

— कु. अंकुल मौ
बी. टी. सी. प्रथम सेमेस्टर

सब कुछ डावांडोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी को।
ढोल के अन्दर पोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी को।।
दाने गिनकर दाल मिलेगी, गेहूँ की बस छाल मिलेगी।
पानी भरे इंजेक्शन होंगे, घोषित रोज इलेक्शन होंगे।
हलवाई परेशान मिलेंगे बिन चीनी मिष्ठान मिलेंगे।
लड़ने वाला खेल मिलेगा, सिर्फ मिट्टी का तेल मिलेगा।
पॉलीथीन में पेट्रोल मिलेगा, आने वाली.....

रोते सब बाजार मिलेंगे, हँसते हुए सियार मिलेंगे।
सारे धन्धे काले होंगे, जमकर के घोटाले होंगे।
पृथ्वी सारी बंजर होगी, सूखे हुए समन्दर होंगे।
पेड़ न होंगे हवा न होगी, अस्पतालों में दवा न होगी।।
फटा-फटा भूगोल मिलेगा, आने वाली पीढ़ी को।
बच्चों से भारी बस्ते होंगे, आँसू सबसे सस्ते होंगे।
पढ़े-लिखे बेकार मिलेंगे, हाथों में हथियार मिलेंगे।
पुण्य न होगा पाप ही होगा, भगवान का कहीं नाम न होगा।
मार-काट का बोल मिलेगा, आने.....

प्यासों की भी लाइन लगेगी, गंगा बिल्कुल मै
हर इक घर में फै
हक सबका गोल मिलेगा, आने वाली.....

राजनीति में तंत्र मिलेगा, गहरा इक षड्यन्त्र मिलेगा।
जनता गूँगी बहरी होगी, बेबस कोर्ट कचहरी होगी।
गुण्डों का संरक्षण होगा, संसद में आरक्षण होगा।
मानवता नहीं मोल मिलेगा, आने वाली.....

बाहर से डालर आयेंगे, उनको वही पचा पायेंगे।
जो मर्डर के प्यारे होंगे, भारत के हत्यारे होंगे।
आजादी की लाश मिलेगी, जनता सारी उदास मिलेगी।
आँसू का माहौ
ढोल के अन्दर पोल मिलेगा, आने वाली.....

❑❑

Article on Microprocessor

–Dolly Pandey
BCA 3rd Semester

Microprocessor, integrated circuit containing the arithmetic, logic, and control circuitry required to interpret and execute instructions from a computer program. Microprocessor becomes the heart of a small computer. Microprocessor are classified by the semiconductor technology of their design.

TTL → transistor-transistor logic

CMOS→ Complementary-metal-oxide

ECL→ (Emitter Coupled Logic) by the width of the data format (4 bit, 8 bit, 16 bit, 32 bit or 64 bit) they process.

Developed during the 1970s the microprocessor became most visible as the central processor of the personal computer.

A single chip microprocessor may include other components such as memory (RAM, ROM, PROM), memory management, cubes, flotating point unit input/output ports and timers. Such devices fare also known as microcontrollers.

No technology is more incedible than the microprocessor. The order 386 chip contains a mere 275,000 transistors.

Sampling of the number of transistors on a chip are as follows—

1971 Intel 4004 (2,300 transistors)
1972 Intel 8008 (3,500 transistors)
1974 Intel 8080 (4,000 transistors)
1975 Zilog Z 80 (6,000 transistors)
1974 Motorola 6800 (8,500 transistors)
1976 Mos echnologies 6502 (9,000 transistors)
1978 Intel 8086 (29,000 transistors)
1979 Intel 8088 (29,000 transistors)
1979 Motorola 68000 (68,000 transistors)
1982 Intel 286 (134,000 transistors)
1985 Intel 386 (275,000 transistors)
1989 Intel 486 (1,200,000 transistors)
1993 IBM/Motorola Power PC 601 (2,800,000 transistors)
1993 Intel Pentium (3,100,000 transistors)
1997 Intel Pentium II (7,500,000 transistors)
1999 Intel Pentium III (9,500,000 transistors)
2000 Intel Pentium 4 (42,000,000 transistors)
2001 Intel Power 4+ (180,000,000 transistors)
2003 Intel Itanium 2 (220,000,000 transistors)
2004 Intel Itanium 2 (592,000,000 transistors)
2007 IBM Power 6 (790,000,000 transistors)
2011 SPARC 64 ×1F× (3,750,000,000 transistors)
2014 Intel Xeon E7 (4,300,000,000 transistors)

❑

Microprocessor

–Ram Gupta
BCA Vth Semester

Microprocessor, integrated circuit containing the arithmetic, logic and control circuitry required to interpret and execute instructions from a computer program. Microprocessor becomes the heart of a small computer. Microprocessor are classified by the semiconductor technology of their design. (TTL — transistor-transistor logic; CMOS— Complementary-metal-oxide ; ECL— Emitter Coupled Logic) by the width of the data format (4 bit, 8 bit, 16 bit, 32 bit or 64 bit) they process and by their instruction set (CISC, Complex instruction set computer, or RISC reduced-instruction set computer, see RISC processor). TTL technology is most commonly used, while CMOS is forored for portable computer and other battery powered devices because of its low power consumption.

Developed during the 1970s, the microprocessor become most visible as the central processor of the personal computer. Microprocessor also play supporting roles within larger computers as smart controllers for graphics displays, storage devices and high speed printers. The microprocessor has made possible the inexpensive hand-held electronic calculator, the digital wrist watch, and the electronic game.

Working of the microprocessor—

Accepts data
Processes data
Stores data
Sends output data

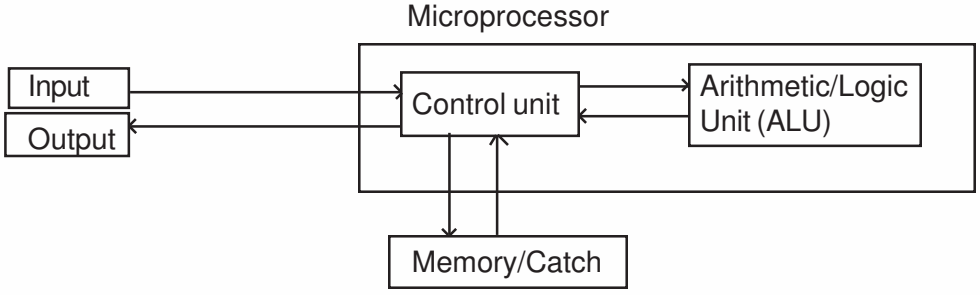

Speed of Microprocessor—

→ Depends on number of instruction it processes
→ Bandwidth (32/64 bit)
→ Clock speed (GHz)
→ Number of transistor built into it.

Parts of Microprocessor—

Arithmetic and Logic Unit

Central Unit— Central the flow of the data and information to other unit of the microprocessor.

Prefetch Unit— Control the flow of the data and gives instruction to the Decode unit

from the instruction cache.

Instruction and data cache— Stores instruction and data temporarily.

There are two type of microprocessor—

Miltitasking/Multiprocessing

→ Miultitasking means the processor time is devided to no. of tasks.

→ Enables the processor to run multiple program simulaneously.

→ Reduces the processor idle time.

→ Each processing unit runs independing and may or may not have individual cache memory.

→ Most effective when used with application software.

❑

Hardware versus Software

—Man Mohan

BCA Ist Semester

Hardware Definition : Hardware devices that are required to store and execute (or run) the software. Collection of instructions that enables a user to interact with the computer.

Types— Input, Storage, Processing, Control and Output devices.

Examples— CD-ROM, Monitor, printer, videocard, scanners, label makers, routers, and modems etc.

Function— Hardware serves as the delivery system for software solutions.

Nature— Hardware is physical in nature.

Failure— Hardware failure is random. Hardware does have increasing failure at the last stage.

Durability— Hardware wears out over time.

Software Definition — Software is a program that enables a computers to perform a specific task as opposed to the physical components of the system (hardware).

Types— System software, programming software and application software.

Examples— Microsoft word, microsoft excel internet explorer, quickbooks etc.

Function— Software performs a specific task by giving an ordered set of programmatic instructions to hardware.

Nature— Software is logical in nature.

Failure— Software failure is systematic software does not have an increasing failure rate.

Durability— Software does not wear out over time.

❑

Windows Applications

–Sufiyan Khan

BCA Ist year

Microsoft window applications are.... In the case of microsoft windows", window programs are software applications that are run on a computer that is also running microsoft windows as an operating system. A software application, or program, is a set of logical conditions grouped together to perform some function typically a microsoft windows application will be run within a 'windows' althought that is not a requirement. A 'window' in the context of software is an area of the screen set aside to run a single program and may or may not have options of controlling the position and size of the program area.

❑

C Language

–Kavita Maurya
BCA Ist Semester

Introduction— The 'C' programming language was originally developed for the and implemented the UNIX operating system, on a DECPOP-11 by Dennis Ritchie. One of the best features of C is that it is not tied to any particular hardware or system. This makes easy for a user to write programs that will run without any changes on all machines partically C is often called a middle level language as it combines the elements of high level language with the functionalism of assembly language.

What is C?

C is a programming language developed at AT & T's Bell laboratories of USA in 1972,. It was designed and written by a man named Dennis Ritchie. In the last seventies, C began to replace the more familiar language of that time like PL/I, ALGOL etc. No one pushed C. It was not made the 'official' Bell Labs language. Thus, without any advertisement, C's reputation spread and its pool of users grew. Ritchie seems to have been rather surprised that so many programmers preferred C to older languages like FORTRAN or PL/I, or the never ones like PASCAL and APL but that's what happened.

❑

Computer

–Pooja Rawat
BCA Ist Semester

A computer is an electronic device for storage and processing of information.

Computer Memory—

(i) ROM — (Read only Memory) : In read only memory information is permanently stored. The information from the memory can only be read and it is not possible to write frersh information into it. "The Rom is not last as it is in the case of RAM".

(ii) RAM (Random Access Memory) : When people talked about computer memory then usually means the violatile RAM Memory physically. The memory consist of same Integrated circuit board attach to the method board.

(iii) PROM : PROM stands for Programmable read only memory. PROM is a variation of ROM. ROM chips are supplied by the computer system and it is not possible for a customer to modified the programms stores inside the wrong chip.

(iv) EPROM : In a PROM chip or in a ROM chip the information stored can not be changed. How ever we can out came this defficulty by using EPROM which is erasible programmable read only memory. In EPROM we can erase the information stored and chip can be reprogramme to stored new information using a special PROM facility EPROM information is erased by exposing the chip for some time to ultra violet.

❖❖❖

C Data Types

–Supriya Verma
BCA Ist Semester

Variable Definition : C has a concept of 'data types' which are used to define a variable before its use.

The definition of a variable will assign storage for the variable and define the type of data that will be held in the location.

So what data types are available?

int	float	doble	char	void	enum

Please note that there is not a boolean data type C does not have the traditional veiw about logical comparison but thats anothers story.

Recent C++ compilers do have a boolean datatype.

int - data type

int is used to define integer numbers

```
{
    int count;
    count = 5;
    }
```

Float-data type

Float is used to define floating point numbers.

```
{
    flat miles
    miles = 5, 6;
```

Double-data type

Double is used to define BIG floating point numbers. It reserves twice the storage for the number. On PCs this is likely to be 8 bytes.

```
    {
        double Atoms;
        Atoms = 2500000;
        }
```

Char-data type

Char defines characters.

```
    {
        Char Letter
        Letter = 'x' ;
        }
```

Modifies.

The three data types above have the following modifiers.

—Short
—Long
—Signed
—Unsigned

Thue modifies define the amount of storage allocated to the variable. The amount of storage allocated is not cast of store. ANSI has the followign rules.

Short int <= int <= long int
float <= doublt <= long double

What this means is that a 'short int' should assign less than or the same amount of storage as an 'int' and the 'int' should be less or the same bytes than a 'long int'. What this means in the real world is :

Type	*Bytes*	*Bits*	*Range*
Short int	2	16	-32, 768 - > +32, 767 (16kb)
unsigned short int	2	16	0 - > +65, 535 (32 kb)
Unsigned int	4	16	0 - >+ 4, 294, 967, 295 (4Gb)
int	4	32	-2, 147, 483, 648 - > +2, 147, 483, 647 (2Gb)
long int	4	32	-2, 147, 483, 648 - > +2, 147, 483, 647 (2Gb)
Signed int	1	8	-128 - > +127
Unsigned int	1	8	0 - > +255

float	4	32
double	8	64
long double	12	96

These figures only apple to days generation of PCs. Mainframes and midrange machines could be different figures, but would still comply with the rule above.

You can find out how much storage is allocated to a data type by using the size of operator.

Qualifiers.

—Const

—Volatile

The const qualifier is used to tell C that the variable value can not change after initialisation.

Const float Pi = 3.14159;

Pi cannot be changed at a later time with in the program.

Another way to define constants is with the # define preprocessor which has the advantage that it does not use any storage.

(but who counts bytes these days)

❑

Number System

—Pooja Verma
BCA Ist Semester

We are familiear with the number system as it is categrize into four different type.

1. Decimal number system
2. Binary number system
3. Octal number system
4. Hexa-decimal number system

Decimal Number System— Decimal number system has base ten. Decimal number system having digit value zero through nine that is

[0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9]

Binary Number System— Binary number system has base two. It consist of two digits i.e. 0 and 1.

Octal Number System— Octal number system has eight sysmbols is i.e. 0, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, it has base eight.

Hexa-Decimal Number System— Hexa-decimal number system has base 16 and it user sixteen different digit i.e.

[0, 1, 2, 3, 4,. 5, 6,7, 8, 9, A, B, C, D, E, F]

❑

Digital India

—Pratima
BCA IIIrd Semester

The government of India to strengthen the digital society and government department and the citizens of India to digitally integrate so that "Digital Indian Compaign" is launched on Ist July in 2015 by Prime Minister Narendra Modi.

Digital India is as a utility for every citizen; to provide services to citizens the availability of high speed internet. To provide a digital identity to all citizens of India. The availability of government and public services integrated services departments. We know that when we have mobile on platform the we can know that train exact timing to come on plateform. So government given us then wifi-free for making india digital. Making electronic and cashless financial transactions. Universal to access digital resources; Indian language digital resources of services also "Digital locker" name the government launched a digital locker. Digital locker system aims to reduce the use of

physical dacuments, and different agencies to enable the exchange between citizens of the government to establish platform, which has been implemented digital India is an ambitious programme of government of India projected at Rs. 1,13,000 crores. This will be for prepared the India for the knowledge based.

Digital India, a great contribution from government in the development of country. ❑

Generation of Computer and their Advantages and Disadvantages

–Arvind Kanaujia
BCA Ist Semester

(1) First Generation Computer— The first generation of computer was between 1945 to 1955. The main element of this computer were 'Vaccum Tube'. Their memories were build of liquid mercury and magnetic drums.

Advantages of first generation computer— This type of computer is simple and stores information.

Disavantages—

(i) Large size. So was not able to carry.

(ii) This computer uses more electricity.

Language— (i) Machine language

(ii) Assembly language

Example—

(i) Electronic Delay storage automatic computer (EDSAC)

(ii) Electronic Discrete Variable Automatic Computer (EDVAC)

(iii) Electronic Numerical Integrator and Calculator (ENIAC)

(iv) Mark-I

(2) Second Generation Computers— This computer used in 1956 to 1964. The main element of this computer was 'Transistors' and used 'Magnetic cores' for memories. William Stockley, John Bordin and Walter Brattain invented Transistors.

Advantages— (i) More speed than first generation computer.

(ii) Size smaller than first generation computer.

Disavanatages— (i) Need cold weather.

(ii) Need maintenance earlier.

Language— High Level Language— BASIC, COBOL,. ALGOL, FORTRAN etc.

Example— IBM-1401, IBM-1620, IBM-7000, NCR-304 etc.

(3) Third Generation Computers— This computer used in 1965 to 1975. The main element of this computer was "Integrated Circuits" (I.C.) and the first operating system.

Advantages— (i) Smaller than first and second generation.

(ii) Save more electricity than first and second generation computer.

Disavantages— (i) Need cold weather.

(ii) The function of this computer are critical compare to first and second generation.

Language— New FORTRAN, New COBOL, PASCAL.

Example— IBM 360, IBM 370, ICL 2900, CDC 1700 etc.

(4) Fourth Generation Computer— This computer used in 1975 to 1984. The

main element of this computer was "Chips" (LSIC—Large Scale Integrated Circuit and VLSIC—Very Large Scale Integrated Circuit).

Advantages— (i) Very samll size than first, second and third generation computer. So very easy to carry.

(ii) More storage capacity than first second and third generation.

Disadvantages— (i) The functions of this computer are more critical than first, second and third generation.

(ii) The used softwares are very critical.

Language— C, C++, SQL, Word etc.

Example— DEC-10, IBM-4341, PRP-II, APPLE-II etc.

(5) Fifth Generation Computer— This computer used in 1985 to Now. The main element of this computer is 'Knowledge Information Process System."

Advantages— High speed than first, second and third generation computer.

(ii) Low cost than first, second and third generation computer.

(iii) This type of computer is versatile device by which we can perform various type of programme.

Language— MS Office, Java etc.

Example— Desktop, Laptop, Note Book, Ultra Book, Chrome Book.

❑

What is 4G mobile Network

—Aditi Mishra
BCA IIIrd Semester

4G is the fourth generation of broadband cellular network technology, Succeeding 3G. A 4G system must provide capabilities defined by ITU in IMT Advanced. Potential and current applications include amended mobile Web access, IP telephony, gaming services, high-definition mobile, TV, Video Conferencing and 3D television.

Definition— In the language of telecommunication, a 4G mobile network implies the fourth generation standard in mobile phone communication. This is the successor of 3G or the third generation standard.

The highly advanced 4G mobile network offers mobile Ultra-broadband Internet access, which gives the user amazing speed and efficiency while working online with his/her mobile devices, such as smartphone laptops and tablets.

Using its high speeds, developers can make good use of 4G network to develop advanced IP telephony. Mobile Web apps, gaming apps, HD Mobile TV, Video conferencing and so on.

4G mobile networking is different from its predecessors in that it does not support circuit switched telephony services, instead it uses IP-based communication systems.

Technical Understandings— In March 2008, the International Telecommunications Union- Radio Communications Sector (ITU-R) specified a set of requirement for 4G standards, named the international mobile telecommuncations. Advanced (TMT-Advanced) specification, setting peak speed requirements for 4G service at 100 megabites per second (mbit/s) for high mobility communication (such as from trains

and cars) and 1 gigabites per second (Gbit/s) for low mobility communication (such as pedestrains and stationary users).

Since the first-release versions of mobile WiMAX and LTE support much less than 1Gbit/s peak bit rate, they are not fully IMT-Advanced complaint, but are often branded 4G by service providers. According to operators, a generation of the network refers to the deployment of a new non-backward compatible technology. On December 6, 2010 ITU-R recognized that these two technologies, as well as other beyond-3G technologies that do not fulfill the IMT-Advanced requirements, could nevertheless be considered '4G'. Provided they represent forerunners to IMT-Advanced complaint versions and a substantial level of improvement in performance and capabilities with respect to the initial third generation systems now deployed."

Mobile WiMAX Release 2 (also know as wireless MAN-advanced or IEEE 802.16m) and LTM Advanced (LTE-A) are IMT-Advanced Compliant Backwards compatible versions of the above two systems, standardized during the spring 2011, and promising speeds in the order of 1 Gbit/s services were expected in 2013. Its opposed to earlier generations, a 4G system does not support traditional circuit-switched telephony service, but all internet protocall (IP) based communication such as IP telephony. As been below, the spread spectrum radio technology used in 3G systems, is abandoned in all 4G candidate systems and replaced by OPDMA Multi-carrier transmission and other improved by smart antenna arrays for multiple- output (MIMO) communication.

❑

What is Microprocessor

–Mohammad Azhar
BCA Vth Semester

A microprocessor is a computer processor which incorporate the functions of a computer's (CPU) Central Processing Unit on a single integrated circuit (IC) or at most a few integrated circuit. The microprocessor is a multipurpose, clock driven register based, digital integrated circuit which accepts binary data as input, processor it according to instructions stored in its memory and provides results as output. Microprocessor contain both combinational logic and sequential digital logic. Microprocessors operate a number and symbols represented in the binary numeral system.

The Integration of a whole CPU into a single chip or on a few chips greatly reduced the cost of processing power, increasing efficiency. Integrated circuit automated processors resulting in a low per unit cost. Single-chip processor increase reliability as there are many fewer electrical connections to fail. As microprocessor designs get better the cost of manufacturing a chip (with smaller components built on a semiconducter chip the same size) generally stays the same.

❑

Computer Languages

–Rahul Mishra
BCA IIIrd Semester

"Computer language system of words and rules used to program a computer. Most computer work using a binary-coded language (using 1s and 0s) called machine code..... A complier, assembler or rather such program then translates this into machine code". An editing program is made with a different programming "Language" than one that uses graphics. Some well known programming languages are COBOL-Business, BASIC-Language and C which is used in science."

Two basic types of computer language

Low-level Language— A language that corresponds directly to a specific machine.

High-level Language— Any language that is independent of the machine.

There are two types of low-level languages.

Machine language— A language that is directly interpreted into the hardware.

Assembly language— A slightly more user-friendly language that directly corresponds to machine language.

Types of High-Level Languages

(i) Algebric formula-Type processing.

These languages are oriented towards the computational procedures for solving mathematical and Statistical problems. Example—

—BASIC (Beginners All Purpose Symbolic Instruction Code).

—FORTRAN (Formula Translation)

—PL/I (Programming Language, Version-1)

—ALGOL (Algorithm Language)

—APL (A Programming Language)

(ii) Business Data Processing— These language are best able to maintain data processing procedures and problems involved in handling files example—

—COBOL (Common Business Oriented Language)

—RPG (Report Program Generator)

(iii) String & List Processing— These are used for string manipulation, including search patterns and inserting & deleting character. Example—

—USP (List Processing)

—Prolog (Program in Logic)

(iv) Object-Oriented Programming Language— In OOP, the computer program is devided into objects. Examples—

—C++

—JAVA

(v) Visual Programming Language— These Programming languages are designed for building window-based applications. Example—

—Visual Basic

—Visual Java

—Visual C.

❑

How to Choose a Career

–Shikha Singh
M.B.A. III[rd] Semester

Chossing A Career— Choosing a career has become more difficult today than at any time in history, for a variety of reasons, primarily being that there is infinitely more to choose from, career definitions are more fluid and changing and high levles of expectation from employers.

While pursuing their degree course, many students don't have much time to spend in career planning. Some of us don't feel the need to plan a career as it is considered a waste of time or it is for those with high ambitions on we think we are too superior to need a career planing.

How to Choose a Right Career— Young generation needs to choose a career, gain competencies required for it, make decisions, set goals and then take an action. The process of a career choice is a multi-step one. It requires gathering information on a number of things. You need a self reflection of yourself. Developing an understanding of one self, including personal values, interests, apptitudes, abilities, personal traits and desired life style.

So one needs to be very clear and careful while choosing a career.

1. Self Evaluation
2. Know your skills and talents
3. Determine your preferences
4. Experimentation
5. Have a broad vision
6. Experience counts more than movey in your first Job.
7. Aim for maximum commitment
8. Spend some effort in improving your career.

❑

बस चलते जाना है

–शिखा सिंह
एम.बी.ए. III सेमेस्टर

राह में चलते जाना है
मंजिल खुद ही पाना है
दूर दूर तक चलते,
बस चलते जाना है

रास्ते खुद ही बनाना है
आगे बढ़ते जाना है
दूर दूर तक चलते
बस चलते जाना है

लक्ष्य भेद कर हमको,
आगे जाना है
सपने को पूरा करके,
हमें मंजिल पाना है

लाख मुसीबत आये कोई,
उसे रास्ते से हटाना है
दूर दूर तक चलते
बस चलते जाना है

❑

दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह के उद्घाटन सत्र की झलकियाँ

वार्षिक क्रीड़ा के उद्घाटन समारोह में माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित करती श्रीमती शोभा सिंह चौहान विधायक-बीकापुर

उद्घाटन समारोह में श्रीमती शोभा सिंह चौहान विधायक-बीकापुर को पुष्प गुच्छिका प्रदान करते हुए सचिव डॉ. अवधेश कुमार वर्मा जी

वार्षिक क्रीड़ा के उद्घाटन समारोह में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में उपस्थिति छात्राएँ

उद्घाटन समारोह में गुब्बारा छोड़कर खेल का शुभारम्भ कराती मुख्य अतिथि श्रीमती शोभा सिंह चौहान

पुरस्कृत छात्राओं के साथ अतिथिगण एवं विद्यालय सचिव, क्रीड़ाध्यक्ष डॉ. दयाशंकर वर्मा जी

दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह में छात्र/छात्राओं का प्रदर्शन

उद्घाटन समारोह में मार्च पास्ट करती छात्राएँ

उद्घाटन समारोह में मार्च पास्ट करते छात्र

वॉलीबॉल प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते छात्र

800 मीटर दौड़ में प्रतिभाग करती छात्राएँ

शतरंज में प्रतिभाग करती छात्राएँ एवं रेफरी

म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती छात्राएँ

दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा (समापन) समारोह की झलकियाँ

वार्षिक क्रीड़ा के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री संजय कुमार पुलिस अधीक्षक ग्रामीण को पुष्प गुच्छिका प्रदान करते हुए सचिव

वार्षिक क्रीड़ा के समापन समारोह में विशिष्ट अतिथि श्री खुन्नू पाण्डेय को पुष्प गुच्छिका प्रदान करते हुए मैनेजर एडमिन श्री अतुल श्रीवास्तव

वार्षिक क्रीड़ा के समापन समारोह में विजयी छात्रायें

वार्षिक क्रीड़ा के समापन समारोह में विजयी छात्रों के साथ विशिष्ट अतिथि श्री अरविन्द चौरसिया क्षेत्राधिकारी सदर फैजाबाद

वार्षिक क्रीड़ा के समापन समारोह में विजयी छात्र/छात्रायें

वार्षिक क्रीड़ा के समापन समारोह में विजयी छात्रों के साथ मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, प्रबन्धकगण।

दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह में छात्र/छात्राओं का प्रदर्शन

समापन समारोह में गोला क्षेपण करता छात्र

समापन समारोह में खो-खो प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती छात्राएं

समापन समारोह में कबड्डी में प्रतिभाग करते छात्र

रिले दौड़ में प्रतिभाग करती छात्राएँ

समापन समारोह में धन्यवाद ज्ञापित करते प्राचार्य डॉ. करुणेश तिवारी

क्षेत्राधिकारी सदर श्री अरविन्द चौरसिया जी को स्मृति चिन्ह प्रदान करते संस्थान के प्रबन्ध निदेशक श्री मिश्री लाल वर्मा जी

संस्थान की विविध गतिविधियाँ

संस्थान की विविध गतिविधियाँ

वार्षिक परीक्षा–2017

प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राएँ

उत्तम सोनी
एम.बी.ए. (75.50%)

सोमनाथ गुप्ता
बी.सी.ए. (75.63%)

घनश्याम
बी.बी.ए. (62.45%)

सूर्य प्रकाश तिवारी
डी.फार्म (73.42%)

स्वाति यादव
बी.एड. (79.50%)

प्रगति बाजपेयी
बी.टी.सी. (89.87%)

द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राएँ

माण्डवी पाण्डेय
एम.बी.ए. (72.44%)

संतोष कुमार
बी.सी.ए. (74.55%)

हरिकेश कुमार
बी.बी.ए. (61.83%)

विवेक कुमार गुप्ता
डी.फार्म (72.76%)

जागृति चतुर्वेदी
बी.एड. (79.40%)

अंशिका सिंह
बी.टी.सी. (89.78%)

भवदीय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस

सीवार (लोहिया पुल के समीप), सोहावल, फैजाबाद

संस्थान में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों से सम्बन्धित समितियाँ एवं प्रभारियों के नाम

प्रवेश समिति-

❑ **बी.एड्./डी.एल.एड्./बी.एस-सी. (कृषि-गृहविज्ञान)/बी.लिब/बी.पी.ई./बी.एस-सी.**

डॉ. करुणेश कुमार तिवारी, प्राचार्य 7703005326
श्री अवनीश कुमार शुक्ल 7703005319

❑ **डी. फार्म/ बी. फार्म**

डॉ. संजय कुमार कुशवाहा, निदेशक 7703005307
1. श्रीमती सीमा वर्मा 7703005314

❑ **बी.काम./बीबीए/बीसीए/एमबीए/**

डॉ. शिशिर पाण्डेय, सहायक निदेशक 7703005309
1. अभिषेक भटनागर 8299737485
2. श्री धनंजय सिंह 7703005317
3. श्री सुमित श्रीवास्तव 7703005308

अनुशासन समिति–

1. कैप्टन- आर. एन. वर्मा (प्रशा.अधि.) 7703005303
2. श्री पी. एन. सिंह (मुख्य नियंता) 9565969000
3. डॉ. पंकज यादव (नियंता) 8960100229
4. सुश्री पूजा द्विवेदी (नियंता) 8174081621
5. श्री रन विजय सिंह (नियंता) 9473811015
6. अभिषेक भटनागर (नियंता) 8299737485
7. सुश्री सुप्रिया सिंह (नियंता) 8127238889

क्रीड़ाध्यक्ष–

1. डॉ. दयाशंकर वर्मा 7800422000

❑ **आई.टी./ई.डी.पी सेल प्रभारी**

1. श्री कृष्णा दूबे 7007427183

❑ **समाज कल्याण सहायक समिति**

1. डॉ. दीपक कुमार गौतम 7703005305
2. श्री कृष्णा दूबे 7007427183
3. श्री चन्द्र प्रकाश तिवारी 7703005315

❑ **परीक्षा नियंत्रक**

1. श्री सुमित श्रीवास्तव 7703005308

❑ **ट्रेनिंग एण्ड प्लेसमेंट**

1. श्री पुनीत स्टीफेन 7703005323

❑ **लेखा विभाग**

1. विशाल विश्वकर्मा 9936277677
2. अजीत प्रताप सिंह 7703005311

❑ **कार्यालय–**

1. श्री कृपाशंकर शर्मा (कार्यालय अधीक्षक)7703005310

❑ **छात्र समस्या निवारण समिति**

1. डॉ. करुणेश कुमार तिवारी (प्राचार्य) 7703005326

❑ **हॉस्टल**

1. कैप्टन- आर. एन. वर्मा (प्रशा.अधि.) 7703005303
2. श्रीमती सीमा वर्मा 7703005314
3. डॉ. करुणेश कुमार तिवारी (प्राचार्य) 7703005326

❑ **ट्रांसपोर्ट**

1. कैप्टन- आर. एन. वर्मा (प्रशा.अधि.) 7703005303
2. श्रीमती सुनीता वर्मा 9453034656

❑ **मीडिया प्रभारी**

श्री अवनीश कुमार शुक्ल 703005319

पुस्तकालय एवं वाचनालय

कम्प्यूटर लैब

फार्मेसी लैब

श्री साई राम इंस्टीट्यूट
सरदार पटेल छात्रावास
BHAVDIYA
PUBLIC SCHOOL